Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Maha Kavi chacha

महाकवि चच्चा

अन्नपूर्णानन्द

Anpurnanand

आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी

Anand Pustak Bhawan
Varanasi

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

cat- 27662
03- 02- 13

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Maha Kavi Chacha

महाकवि चच्चा

अन्नपूर्णानन्द

Anpurnanand

आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी

Anand Pustak Bhawan
Varanasi

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक—
सम्पूर्णानन्द एम० ए०
आनन्द पुस्तक भवन
पहड़िया, वाराणसी–२
कार्यालय—औसानगंज, वाराणसी–१

Acc. No ....
Cost ....
Date ....

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

H 89
A 62 M

पाँचवाँ संस्करण, १९६० 1960

मूल्य—२·५० रु०
2.50

मुद्रक—
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Acc. No 25969
Cost Rs. 2.50
Date 15.3.66

अपनी सहचरी को
अपनी जनकदुलारी को
जो दुख-सुख में
सदा एक भाव से
हमारे साथ रही है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिष्ट विनोद के कितने कुशल...विनोद साहित्य को बहुत ऊँचा उठा दिया...कल्पना की मौलिकता बड़े ऊँचे दर्जे की...शतमुख से बधाई। चच्चा की सूक्तियाँ हिन्दी साहित्य की निधि...चच्चा के एक-एक कवित्त पर लाखों न्यौछावर...समाज का कोई विरला ही अङ्ग होगा जो चच्चा के सर्वव्यापक नेत्रों से बचा हो।... अन्नपूर्णानन्द जी ज़ाहिर में बड़े ही गम्भीर भारी-भरकम आदमी हैं पर उनके पोर-पोर में हास्य भरा हुआ है...यह वह चीज़ है जिसे मना करने पर भी लोग लेते हैं और किसी को एक घड़ी के लिए भी माँगे नहीं देते।

—प्रेमचन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूची

१—श्रीगणेश	...	...	१
२—सुखी जीवन	...	...	१४
३—उनका विवाह	...	...	१९
४—पहला पाठ	...	...	२४
५—सट्टीमें सन्नाटा	...	...	३१
६—सिलका सिलसिला	...	...	४२
७—निजी और गोपनीय	...	...	४७
८—चवन्नीका चमत्कार	...	...	५५
९—बाबा बिरदावली	...	...	६२
१०—एक अनुपान	...	...	७२
११—भविष्यकी आशा	...	...	७९
१२—सवा तीन मन	...	...	८३
१३—बातकी बतास	...	...	८९
१४—रस परिपाक	...	...	९५
१५—अगिया वैताल	...	...	१००
१६—प्यारे रूपचन्द	...	...	१०८
१७—रैन-रतजगा	...	...	११५
१८—चचा-वचनामृत	...	...	१२७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाकवि चच्चा

१

श्रीगणेश

क ने ख से कहा और ख ने ग से कहा—करते-करते शहरके सभी साहित्यिकोंमें बात फैल गयी कि अमुक क्लबमें आज शामको कवि 'चच्चा' की जीवनीपर पं० बिलवासी मिश्रका भाषण होगा।

छः बजे भाषण आरम्भ होनेवाला था, पर पाँच ही बजेसे आगन्तुकोंका ताँता बँध गया। साढ़े-पाँच तक क्लबका कमरा ठसाठस भर गया। स्थानाभावके कारण सम्पादकाचार्य्य पं० शूलपाणि त्रिपाठी आलमारीपर चढ़कर बैठ रहे। समालोचक-प्रवर पं० ज्ञानचक्षु शर्माको कुछ देर तक बाहर ही खड़े रहना पड़ा—अन्तमें पण्डित निपटनारायणने अपनी जगह खाली करके उन्हें वहाँपर स्थापित किया। इससे पण्डितजीको निश्चय हो गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि अब उनकी नयी पुस्तक 'बुद्धि-बवण्डर'की समालोचना बड़े मारके की निकलेगी।

ज्यों-ज्यों छः का समय निकट आने लगा त्यों-त्यों उपस्थित समुदायकी उत्सुकता बढ़ने लगी। उत्सुकता बढ़कर आतुरतामें परिणत हुई और अब आतुरता भी बढ़कर हुल्लड़शाहीका रूप धारण करना चाहती थी कि पं० बिलवासी मिश्र बोलनेके लिए खड़े हुए।

क्या ग़ज़बका व्यक्तित्व है! उन्हें देखते ही सारी मण्डली शान्त और सजग हो गयी। यहाँ तक कि लाला मल्लूमलने पेन्सिल तकका चबाना बन्द कर दिया।

एक बार बिलवासीजीने अपने चारो ओर देखा, मानों हम-लोगोंके बुद्धिबलको कूत रहे हों। इसके बाद पानकी गिलौरियोंको बराबरके हिस्सोंमें दोनों गालोंमें दबाते हुए बोले—"सज्जनो; जिस प्रकार मनुष्य पृथ्वीके गर्भसे हीरा और सोना प्राप्त करके अपनी धन-राशिको बढ़ाता है उसी प्रकार वह गवेषणाके गर्भसे तत्वरत्नोंको प्राप्त करके अपने ज्ञान-भण्डारको भी बढ़ाता रहता है। गवेषणा ही इतिहास, साहित्य और विज्ञानकी जान है। कभी-कभी इसके द्वारा ऐसे रहस्योंका उद्‌घाटन होता है कि सुननेवाले दाँतों उँगली दबाते रह जाते हैं। उदाहरण के लिए हमारे मित्र लाला मल्लूमलने बरसोंके अन्वेषणके बाद यह प्रमाणित किया है कि अकबर के समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञ मियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैजूबावरा अन्य गवैयोंकी तरह कुलञ्जन नहीं फाँकते थे, वरन् जीनतान चूसा करते थे।

इसी प्रकार साहित्यके क्षेत्रमें जब मैं गवेषणाकी धुनमें मस्त होकर चरने और विचरने लगा तब मुझे पता चला कि हिन्दीमें 'चच्चा' उपनामके एक महाकवि हो गये हैं। उन्हींका कुछ परिचय मैं आज आपको देना चाहता हूँ।

यद्यपि मैंने बड़े परिश्रम और खोजसे इनकी कुछ रचनाओंका संकलन किया है और इनके जीवन-सम्बन्धी कुछ घटनाओंपर प्रकाश डाला है, पर इनके नामका प्रथम परिचय पानेका श्रेय मुझे नहीं बल्कि दैवी संयोगको है। उसका क़िस्सा इस प्रकार है।

शायद आपको याद होगा कि गत वर्ष फाल्गुनके महीनेमें कुछ भागोंमें घोर वृष्टि हुई थी और लाखों किसान तबाह हो गये थे। रबीकी फ़सल बिलकुल तैयार थी, अधिकांशतः खलिहानोंमें कट कर आ गयी थी—और वहीं सड़ कर बरबाद हो गयी।

उन्हीं दिनोंकी बात है कि मैं रेलसे कहीं जा रहा था। किसी स्टेशनपर एक सज्जन गाड़ीमें चढ़े और मेरी ही सीटपर आ बैठे। पानी बरसते देख उन्होंने कहा—'यह बेवक्तकी शहनाई तो नहीं अच्छी लग रही है।'

मैंने उत्तर दिया—'जी हाँ, और क्या! मैं अगर वसन्तमें मलार गाऊँ तो लोग हँसेंगे, पर परमात्मा वसन्तमें पानी बरसा रहा है तो लोग रो रहे हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'देखिये एक कविने इस सम्बन्धमें कितनी टाँके-तौल बात कही है—

पाप सराप त्रिताप सबै मिलि
होत महा हित हानि जियानी।
दीन दुखी दुनिया दुख-खान
'चचा' कवि देखि सकैं न बखानी॥
एकतें एक अनेक कहाँ लौं
कहौं करुना की कलेस कहानी।
पै सबतें बिकराल बड़े यहि
फागुन मेह प्रमेह जवानी॥

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इसे सुनकर मैं पुलकित हो उठा। इसके पहिले मैंने कवि 'चच्चा' का कभी नाम भी नहीं सुना था पर उसी दिनसे मैं उनके सम्बन्धमें पूरी जानकारी प्राप्त करनेके प्रयत्नमें लग गया। रेलवाले सज्जन मुझे उनके बारेमें केवल इतना बता सके कि वे काशीमें रहते थे, काशीमें ही मरे और उन्हें मरे अभी अधिक दिन नहीं हुए।

केवल इतने आधारपर मैंने काम करना शुरू किया। यह सब मैं आप लोगोंको कहाँ तक बताऊँ कि मुझे किन-किन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा, कहाँ-कहाँकी खाक छाननी पड़ी, किस-किसके अनुनय-विनय में मरना पड़ा।

मैं निराश नहीं हुआ। मेरा अनुसन्धान बराबर जारी रहा। मुझे इसके अनेक प्रमाण मिले कि कवि चच्चा अधिकतर काशीमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही निवास करते थे। सम्भव है यही उनका जन्मस्थान रहा हो। आश्चर्य है कि उनकी रचनाओंमें इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। केवल एक स्थानपर उन्होंने इतना कहा है—

जाहिर जहान में उजागिर जुगराफिया में
फरद हजारन में कासी सहर है।

अधिक खेद मुझे इस बातका है कि इनके असली नामका पता मैं लाख कोशिश करनेपर भी न लगा सका। इनका नाम कुछ तो अवश्य ही रहा होगा। कीटाणुओं तकके नाम होते हैं, ये तो मनुष्य थे। बिना नामकी संसारमें केवल एक उँगली है पर उसका भी नाम अनामिका है। 'चच्चा' तो केवल इनका उपनाम था, पर इनके पिता इस नामसे इन्हें कदापि न पुकारते रहे होंगे—इसका मुझे पूरा विश्वास है। इसलिए चच्चाके अतिरिक्त इनका कोई-न-कोई नाम अवश्य रहा होगा। शायद भविष्यमें इस विषयपर कोई कुछ प्रकाश डाल सके।

कवि चच्चा ब्राह्मण थे। काव्य-रचना इनका दिल-बहलाव था, पर व्यवसाय था पुरोहिती। पुरोहितीके सिलसिलेमें इनके पेटका रकबा बहुत बढ़ गया था और ये भोजन अत्यधिक करने लगे थे। किम्वदन्ती है कि वृद्धावस्थामें ये किसी यजमानके यहाँ भोजन करने गये। वह खिलाते-खिलाते थक गया पर इनका पेट न भरा। तब उसने रुक-रुक कर परसना शुरू किया। उसे हाथ ढीला करते देख इन्हें बुरा लगा और इन्होंने कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पेट पुरातन पाटत हौं
कछु झोंकत हौं नहि अन्धकुँवा में।
जेंइ भले जगदीस मनाइ
करौं बकसीस असीस दुवा में ॥
बूढ़ भयौं बल थाकि गयो
कछु खात रहे जजमान युवा में।
पूर पछत्तर मालपुवा अरु
सेर सवा हलुवा घेलुवा में ॥

पुरोहितीका पेशा करते हुए भी यह बात नहीं थी कि देशका दर्द इनके दिलमें न रहा हो। देशकी दशापर ये बराबर विचार करते रहते थे। इनकी रचनाओंमें इसकी झलक यथेष्ट रूपसे मिलती है।

हम भारतवासियोंकी एक साधारण प्रवृत्ति है कि अपने वर्त्तमानकी ओर तो हम ध्यान नहीं देते वरन् भूतकालीन गौरवका ही स्वप्न देखा करते हैं। कवि 'चच्चा' ने देखिये इसकी कैसी मीठी चुटकी ली है—

बीर रहे बलवान रहे
बर बुद्धि रही बहु युद्ध सम्हारे।
पूरन पुञ्ज प्रताप रहे
सद्ग्रंथ रचे शुभ पंथ सँवारे ॥
धाक रही धरती-तल पै
नरपुङ्गव थे पुरुषारथ धारे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बापके बापके बापके बापके
बापके बापके बाप हमारे ॥

उन सामाजिक कुरीतियोंकी भी कड़ी आलोचना की है जिनकी ओर हमारा समाज अग्रसर होता जा रहा है। ख़ासकर स्त्रियोंको पाश्चात्य ढंगकी स्वतन्त्रता देनेके ये कट्टर विरोधी थे। एक जगह इन्होंने कहा है—

पिल्ला लीन्हें गोदमें मोटर भईं सवार।
भली भली घूमन चलीं किये समाज सुधार ॥
किये समाज सुधार हवा योरपकी लागी।
शुद्ध विदेशी चाल-ढाल सों मति अनुरागी ॥
मियाँ मचावैं सोर करैं अब तोबा-तिल्ला।
पूत धायके गोद, खेलावैं बीबी पिल्ला ॥

जान पड़ता है कि कुछ दिन बीतने पर इन्हें पुरोहिती के धन्धे से विरक्ति-सी होने लगी। मित्रोंने भी कहा कि आप इतने अच्छे कवि होते हुए क्या इस पुरोहितीके झमेलेमें पड़े हुए हैं; किसी राज दरबारमें चले जाइये, या किसी धनीधोरीके साथ चिपक जाइये। यह बात इन्हें पसन्द आ गयी और ये किसी बड़े आदमीका आश्रय ग्रहण करनेके लिए घर से निकल पड़े।

संयोगसे एक राजा साहबसे उनकी भेंट हो गयी। राजा साहब महा मूर्ख थे। उन्होंने सोचा कि मेरे यहाँ हर तरहके लोग नोकर हैं—कथक हैं, कव्वाल हैं, चलो एक कवि भी रख लूँ। कवि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चच्चा पुरोहितीसे इतने आजिज आ गये थे कि उन्होंने भी आगा-पीछा न सोचा, इनके यहाँ रह गये।

कुछ ही महीने बीते थे कि राजा साहबके यहाँ एक बहुत बड़े मेहमान आये। राजा साहबने उनकी बहुत ख़ातिर की। खेल हुआ, नाच हुआ, मुजरा हुआ, लावनी हुई, कजली हुई और अन्त में कवि 'चच्चा' की भी पुकार हुई। ये जल-भुन कर खाक़ हो गये। कविता न हुई एक खेल-तमाशेकी चीज़ हुई! मानो कविता कोई बँदरिया थी और कवि चच्चा उसके नचानेवाले समझे गये!

राजा साहबने कहा—'कवि जी! आप भी कुछ कढ़ाइये।'

इस 'कढ़ाइये' ने तो जलेपर नमक छिड़क दिया। कढ़ाइये! क्या खूब!! मानो सोहर कढ़ाना था। कवि चच्चाके क्रोधका ठिकाना न रहा। बोले—'कढ़ाता हूँ सुनियेः—

दौरि परैं दुकड़हे सबै जब बाजै दुक्कड़।
रहैं पियक्कड़ घेरि जहाँ पै हेरैं चुक्कड़॥
जुटैं हजारन यार मिलैं जो संगी फुक्कड़।
जहैं गाँठ गरमाय तहैं गुन गावैं तुक्कड़॥

इसका आशय इतना स्पष्ट था कि राजा साहब भी समझ गये। उस वक्त तो बात वहींपर ख़तम हो गयी पर मेहमानके चले जानेपर कवि चच्चाको भी राजा साहबने रास्ता बताया। ऐसे ढीठ आदमीको कौन नौकर रक्खेगा!

कवि चच्चा बड़े बेलौस और आत्माभिमानी पुरुष थे। स्वयं कविताके अच्छे पारखी तो थे ही, कवियोंका आदर भी करते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानव समाज में कवियोंके स्थानको कितना महत्त्वपूर्ण समझते थे, कम-से-कम नीचेकी पंक्तियोंसे यही सिद्ध होता है—

बिनु गोड़ेकी खाट बिना कोड़ेका घोड़ा।
बिनु लोढ़ेकी भंग जंगमें साहस थोड़ा॥
बिनु जोड़ेकी रैन मुसाफिरके पग फोड़ा।
बिनु तोड़ेका धनी भातमें निकसै रोड़ा॥
'चचा' कहैं कविजन सुनौ सभ्य सभा बिनु आपके।
ये सब निश्चय जानिये कारन हैं सन्तापके॥

जहाँ तक मालूम है दोष-रहित संसारमें केवल एक परमात्मा है। जब बिना शरीरका कामदेव, देवता होते हुए भी, अवगुणोंकी खान बना रहा तब भौतिक शरीरवाले संसारी जीव कैसे अवगुण-हीन रह सकते हैं? कवि चच्चामें जहाँ अनेक गुण थे वहाँ एक दोष भी था; वे विजयाके परम भक्त थे। विजयाको भगवान्‌की विभूति समझते थे। सबको सब कुछ हो पर उन्हें विजया हो, चाहे और कुछ भी न हो। कहते हैं—

गैया गिरहस्थको रुपैया रोजगारिनको
केवटको नैया और मैया होय बच्चाको।
तिरियाको हया होय दया-मया सबै होय
पित्रनको गया होय विजया हो 'चच्चा' को॥

उनकी समझमें भगवान् शंकर भी विजयाके बनाये बने हैं—

काल-कूट करिकै कण्ठस्थ नीलकण्ठ भयो
पेखि जरत जग विष ज्वाला विषम सों।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहै को समानता तिहारी जे कोपि कियो
भसम खसम रतिको असम चसम सों ॥
पदके प्रताप तेरे तरे बहुतेरे नाथ
पातकी पतित हैं अपावन जे हम सों।
सोचत 'चचा' के आजु चीह्नि पर्‌यो सांचो भेद
सारी प्रभुताई यह विजयाके दम सों ॥

हिन्दू-मुसलिम सम्बन्धके विषयमें कवि चच्चाके विचार बहुत उदार नहीं थे, पर क्षम्य अवश्य थे। वे जातीयताके पुजारी थे। पता नहीं मुसलमानोंको वे म्लेच्छ पुकारते थे या नहीं पर खुद काफ़िर पुकारे जानेके वे बड़े ख़िलाफ़ थे। मुसलमानोंके सम्बन्धमें उनके विचार कुछ इस प्रकारके थे—

दूध फटे पै मिलै तो मिलै
पर चित्त फटे बिलगात हैं आखिर।
लाख उपाव करौ न मिलै
जल तेल सुभाव सबै जग जाहिर॥
मन्दिर के पट मूँदि धरौ
बट पीपर काटि धरौ केहि खातिर।
संख निसंक बजावहु क्यों नहिं
काफिर हैं हम मेल कहां फिर॥

सन् १९१६ या १७ के पितृपक्षमें कवि चच्चाकी मृत्यु काशीमें ही हुई; उस समय इनकी अवस्था ७० और ७५ के बीचमें थी। शामके वक्त एक सँकरी गलीसे होकर ये गुज़र रहे थे। पीछेसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

म्यूनिसिपैलिटीका कूड़ा ढोनेवाला एक भैंसा दौड़ता हुआ आया। ये आगेकी ओर भागे तो सामने एक साँड़ मिला; जिसने इन्हें सींगपर उठाकर पटक दिया। लोगोंने डोलीमें डालकर इन्हें घर पहुँचाया जहाँ घंटे-डेढ़-घंटे बाद इनका शरीर छूटा। मरनेके पहिले कुछ मित्रोंके पूछनेपर इन्होंने अपनी दुर्घटनाका हाल इस प्रकार कहा—

कालको कराल गाल घालै जग जीव जेते
तरुनी को पीव लेत पूत लेत रांड़ के।
मीच है नगीच धरी, जानैं हरि कौन घरी,
प्रान जू पयान करैं देह-गेह छांड़ के॥

पंचन सों याचना छमाकी निज भेद कहौं
कविताके आड़ कियो काम सदा भांड़ के।
भैंसा चढ़ि आये यम स्वयम निमंत्रन लै
'चच्चा' तब सङ्ग चले सींग चढ़े सांड़ के॥

सज्जनो! मैं आप लोगोंका काफ़ी समय ले चुका। यदि मैं कविके जीवनकी सब रोचक घटनाओंका दिग्दर्शन मात्र कराने लगूँ या इनकी उन रचनाओंको ही सुनाने लगूँ जो अभी तक प्राप्त हो सकी हैं तो सवेरा हो जाय। लेकिन कविता नौटंकी नहीं है कि भले आदमी सारी रात जागकर इसका मजा लें।

कवि चच्चाके सम्बन्धमें एक बात आप लोगोंको अवश्य खटक रही होगी। उनके ऐसे सुयोग्य कविके बारेमें—जिसे मरे अधिक दिन नहीं हुए—अनेक ज्ञातव्य बातोंका काफ़ी पूछताछ करनेपर भो ठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पता न चलना बड़े आश्चर्यका विषय है; पर ग़ौर करनेपर कारण स्पष्ट हो जाता है। कवि चच्चा एक सीधे-सादे व्यक्ति थे, सभा-सोसायटियोंसे घबराते थे, तू-तू मैं-मैं से दूर भागते थे, अपने कामसे काम रखते थे। न ऊधोका लेना और न माधोका देना—यही उनके जीवनकी रूपरेखा थी। भला ऐसे आदमीको इस विज्ञापनके युगमें पैदा होनेकी क्या आवश्यकता थी! कहाँ उनके ऐसा निर्लेप आदमी और कहाँ यह धाँधलीका जमाना! न पासमें पैसा, न किसी पैसे वालेके पास अपनी पहुँच; न साहित्यिक गुण्डई, न चार लेखकों से आपसदारी और न इसके हामी कि मेरी डफली तू बजा तो तेरा राग मैं अलापूँ। आजकल बिना इन गुणोंके सफल लेखक या कवि बिरले ही हो सकते हैं। कवि चच्चा यह सब समझते थे, शायद इसीसे उन्होंने अपनेको गुप्त रक्खा। उनके साथ नित्यके उठने-बैठनेवाले भी जो दो-एक थे वे भी नहीं जान सके कि वे कहाँ से आकर काशीमें बसे थे और उनका असली नाम क्या था।

पारिवारिक झगड़ोंने भी उन्हें बुरी तरह पीस डाला था। बेफ़िक्री उन्हें कभी नहीं मुयस्सर हुई; अगर होती तो उनकी प्रतिभाने न जानें और क्या कर दिखाया होता। वे स्वयम् ही कहते हैं—

सैन मिलैं नरनाहनको
चढ़ि धावैं अनेकन राज ढहावैं।
रैन मिलैं जो छबीली सुछैलको
मोद महान लहैं औ लहावैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैन कही जो कही सो सही
एक आस यही कविराय कहावैं।
चैन 'चचा' को मिलै जो जरा
तो धरा पै कवित्तकी धार बहावैं॥

एक बात और सुनाकर मैं अब बस करूँगा। कवि चच्चा मनुष्य जीवनको हँसी-खेल नहीं समझते थे, पर उसे हँस-खेलकर बिता देनेके वे पक्षपाती थे। हँसनेके वे आदी थे, यहाँ तक कि अपने ईश्वरसे भी हँसी करनेमें नहीं चूके। सुनिये—

नीच हौं निकाम हौं नराधम हौं नारकी हौं
जैसो तैसो तेरो हौं भनत अब कहाँ जांव।
ठाकुर हौ आप हम चाकर तिहारे सदा
आपुके बिहाय कहो मोकों और कौन ठांव॥
गजकी गुहार सुनि धाये निज लोक छांड़ि
'चचा' की गुहार सुनि भयो कहा फील-पांव।
गनिका अजामिलके औगुन गन्यो न नाथ
लाखन उबारि अब कांखत हमारे दांव॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२

सुखी जीवन

बहस यह छिड़ गयी थी कि संसारमें सुखी कौन है, और सुख किस चीजका नाम है। लाला झाऊलालकी राय थी कि संसारमें सुखी वही है जिसकी आमदनी दो पैसा हो और खर्च पौने दो पैसा। लाला मल्लूमलकी राय थी कि जो भूखसे दो रोटी ज्यादा खाकर हजम कर सके वही संसारमें सुखी कहलाने योग्य है।

पं० बिलवासी मिश्रने सुखी जीवन की जो व्याख्या की वह बड़े महत्वकी थी। उन्होंने कहा—'सज्जनो! सुख और दुःख, दुःख और सुख, यही हमारे और आपके जीवनके ताने-बाने हैं, इसी ताने-बानेसे हम उस धूप-छाँहको बुनते हैं जिसका नाम मनुष्य-जीवन है। प्रश्न यह उठा है कि सुखी जीवन कहते किसे हैं। मेरी रायमें सुखी जीवन तब कहना चाहिये जब दसमें अपनी गणना हो, बसमें स्त्री हो, बकसमें ठनाठन हो, हँसमुख स्वभाव हो और नस-नसमें बेफ़िक्री हो। गेह अपना हो—किरायेका न हो, देह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी हो—डाक्टरोंकी न हो, और नेह ऐसे लोगोंसे हो जो अपने को निकम्मा न समझते हों। सुखी वह है जो आशासे दूर रह कर......'

'पण्डितजी !' लाला मल्लूमलने बिगड़ कर कहा—'अब चुप रहिये। आपकी बात मैं नहीं सुनना चाहता।'

पण्डितजीने चकपका कर पूछा—'क्या आप बतानेका कष्ट करेंगे कि क्यों ?'

'आपने जीवनको सुखी बनानेके लिये आशासे दूर रहनेकी सलाह दी है। इस सलाहको मैं कदापि न मानूँगा। मेरे लिये यह केवल असम्भव ही नहीं वरन् मूर्खतापूर्ण है। मैं आशाको अपने जीवनसे दूर नहीं कर सकता।'

'आखिर क्यों ?'

'इसलिए कि आशा मेरी स्त्रीका नाम है।'

अपनी बातपर सबको मुस्कराते देख लाला मल्लूमलने फिर कहा—'आप लोग हँसते क्यों हैं ? मैं सत्य कहता हूँ, मेरी स्त्रीका नाम आशा है। वह दो बहिन हैं, बड़ीका नाम आशा और छोटीका नाम बताशा है।'

इस बातपर कहकहेका ऐसा तूफान उठा कि कुछ देरमें शान्त हुआ। पं० विलवासी मिश्रने अपनी हँसी रोकते हुए कहा—'सज्जनों ! सुखी जीवनके लिये सबसे अधिक आवश्यकता है भरपेट भोजन की। इस विषयमें दो राय हो ही नहीं सकती। जिस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिना पेंदेके जलपात्रकी कल्पना आप नहीं कर सकते उसी प्रकार बिना भर पेट भोजनके सुखी जीवनकी कल्पना भी नहीं हो सकती। महाकवि 'चच्चा' ने इसी सम्बन्धमें एक बार कहा था—

जैसो जहाँ जब जन्म लहौं
जुलहा रजपूत कि जाट कि आगा!
भोजको राज न चाहैं 'चचा'
यदि भोजन रोज मिलै बिनु नागा॥

आप लोग स्वयं इस बातका अनुभव कर चुके होंगे और नित्य प्रति करते होंगे कि पेटका सुखी जीवनसे अत्यन्त अन्तरङ्ग सम्बन्ध है। पेटका प्रश्न एक विकट समस्याके रूपमें मनुष्य-मात्रके सामने सदा उपस्थित रहता है। आश्चर्यका विषय है कि इसके अतिरिक्त अन्य किसी विषयपर कविगणको कविता करनेकी कैसी सूझी!

पेटको बुरा-भला कह डालना तो एक साधारण-सी बात है। बेचारा गरीब मजदूर जो सुबहसे शाम तक जाँगर तोड़नेपर कुछ आने पैदा करता है वह भी रात में भूखकी मरोड़से व्यथित होकर पेटको दो गाली सुना देता है—और दूसरोंका पेट काटकर अपना पेट भरनेवाला मोटा मिल-मालिक, या सूदखोर सेठ, या ज़ालिम ज़मींदार भी जरूरतसे ज्यादा खाकर अपच होनेपर पेट ही को कोसता है। पर इसका विचार कोई नहीं करता कि सृष्टिके आदिसे और सृष्टिके अन्ततक अगर किसी चीजने हमारा साथ दिया है और देगा तो वह पेट ही है। धर्म-कर्म, आचार-विचार—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँ तक कि स्वयं सृष्टिका आकार-प्रकार भी बदल गया पर पेट जो तब था वह अब है। महाकवि 'चच्चा' ने इसी बातको यों कहा है और खूब कहा है—

बैल बने पै मिलै दुरबा
कि मिलै सुरबा बनि मोमिन मुल्ला।
रंक बने रिरकौं बिनु अन्न
कि राउ बनौं करि दूधन कुल्ला ॥
माँड़ मिलै कि मिलै दधि माखन
खाँड़ मिलै कि मिलै रसगुल्ला।
पेट अनन्त रहै नित नूतन
और सबै बिनसै जिमि बुल्ला ॥

सज्जनो! सच पूछिये तो पूरी तौरसे पेटकी महिमा वही गा सकता है जिसे पेटका धन्धा न हो। मैं स्वयं पेटपर बहुत कुछ लिखनेवाला था पर ऐसा पेटके चक्करमें पड़ा कि पेटकी बात पेट ही में रह गयी। एक बड़े अचम्भेकी बात है कि पीठ और पेट पुराने पड़ोसी हैं पर पीठकी मार सह जाती है लेकिन पेटकी मार नहीं सह जाती।

पेटके सम्बन्धमें जो कुछ कहा जा सकता था वह कवि लोग सदियों पहिले कह चुके; पर तब भी कुछ बातें ऐसी बच गयीं जिन्हें कवि 'चच्चा' के सिवा दूसरा कोई इस खूबीके साथ कह भी नहीं सकता था। यह मैं पहिले कह चुका हूँ कि उनका पेशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरोहिती का था, इसलिये सम्भव है पेट-सम्बन्धी सब प्रकारके अनुभव प्राप्त करनेका जितना अच्छा साधन उन्हें था उतना अन्य कवियोंको न रहा हो। पुरोहितीका व्यवसाय ही कुछ ऐसा है कि पेटको हर समय चौकन्ना रहना पड़ता है—न जाने कब और कहाँ उसे अपने बलाबलकी परीक्षा देनी पड़ जाय।

कारण जो कुछ रहा हो पर यह ध्रुव सत्य है कि कवि 'चच्चा' ने इस विषयपर जो कुछ लिखा है वह लाजवाब है, अनुपम है, बेजोड़ है। सुनिये—

करनी अलीक नीक-नेवर अनेक कियो
आयु सिरानी तदपि पूरन पर्‍यो नहीं।
कारन तिहारे नर बानर सों भ्रमत नित्य
औगुन कुकर्म कहो कौन कर्‍यो नहीं॥
एक सों मतंग औ पतंगको नचाइ डारै
जेते जीवधारी यातें कोऊ उबर्‍यो नहीं।
जुगन जुगादिम सों जाहिल ज्यों आलिम त्यों
भरि-भरि हार्‍यो यहि खन्दक भर्‍यो नहीं॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३

उनका विवाह

पं० बिलवासी मिश्रने प्रसन्नतापूर्वक अपना सर हिलाकर कहा–

ज्यों केरा के पात में,
पात-पात में पात।
त्यों गुनियन की बात में,
बात-बात में बात॥

और सब तो चुप रहे, इस गुमानमें शायद बिलवासी जी का यह दोहा दिबाचा-स्वरूप हो; कौन जाने इसीसे वह कोई बात कह निकलें। पर मल्लूमलने स्थितिको नहीं समझा। उन्होंने समझा कि बिलवासी जी इसी तरह कोई कविता गुनगुना रहे हैं और उन्होंने भी गुनगुनाने का क्रम जारी रक्खा। उन्होंने कहा—

बेला के फूल हजार
चमेली की एक कली।
मूरख की सारी रात
छैल की एक घड़ी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलवासी जी ने मल्लूमलकी ओर घूर कर देखा, और घुड़क कर बोले—"यह क्या जटल बात आप बक रहे हैं। आपके कर्मका खाता लिखते समय विधाताको शिलालेख लिखनेका अन्दाजा......

'अरे जाने भी दीजिये।'—पं० जीटबहादुर ने कहा।

'क्यों जाने दूँ? इनके यहाँ तो घंटीका नाम भी टुनटुनिया होना चाहिये। ये नैनसुख-नामधारी आँखके अन्धे हैं। कहाँ तो मैं महाकवि चच्चाके विवाहका ज़िक्र छेड़ देना चाहता था, और कहाँ ये......'

'चचा का विवाह! अजी सच कहना। आप फ़ौरन शुरू करिये।' यह कहकर मल्लूजी चितसे पट हो गये—याने सजग हो पड़े।

'हाँ, अब आप अक़्ल ठिकाने आयी है।'—यह कह बिल-वासी जी ने रोबसे अपनी चारों ओर देखा, और देखा सब एक साथ उन्हींको निहार रहे थे।

'सज्जनों।'—उन्होंने कहा—'आप लोगोंको यह कौतूहल अकसर होता होगा कि महाकवि चच्चा ऐसे टेंटके दुर्बल आदमी का विवाह कैसे हुआ और क्यों हुआ।

इक्कीस वर्षकी अवस्था तक उनका विवाह नहीं हुआ था। उस समयकी एक बड़ी मनोरंजक घटनाका पता मुझे अभी हालमें चला है जिससे उनके विवाहके प्रकरणपर काफी उजाला पड़ता है।

एक दिनकी बात है कि उन्हें दोपहर में बड़ी भूख लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोटी बनानेके लिए उन्होंने चटसे चूल्हा सुलगाया। आग जलने लगी तब उन्हें याद पड़ा कि आटा तो घर में एक चुटकी भी नहींहै। वे बाहर आटा खरीदनेके लिए भागे। पर जब तक आटा लेकर लौटें तब तक आग बुझ चुकी थी।

अब क्या करें? फिर आग जलाना बड़ी क़वाहतकी बात थी। इधर भूख कह रही थी कि संसारमें मैं ही हूँ। कवि चच्चाको इस समय कुछ सूझ न पड़ा। वे बैठकर आटा फाँकने लगे।

इसी समय उनके एक मित्र कहींसे आ टपके। उन्होंने कवि चच्चाको आटा फाँकते देखकर पूछा कि इस तरह ज़िन्दगी कितने दिन चलेगी; शादी कर लो तो घरमें कोई रोटी देनेवाला तो हो जाय।

इसका मनचीता प्रभाव पड़ा। महाकवि चच्चा उसी दिनसे अपनी शादीके फ़िराक़में लग गये। लेकिन ग़रीब आदमीको अपनी लड़की कौन देता है? महीनों कोशिश करने पर भी उनकी गोटी कहीं नहीं बैठी।

वे निराश-से हो चुके थे कि किसीने उन्हें पं० नेकीरामका नाम बताया। पं० नेकीराम एक कविता-प्रेमी सज्जन थे जो अपनी जीवन-सन्ध्याको आरामके साथ काशीमें बिता रहे थे।

उन्हें एक ही लड़की थी। उनका प्रण था कि उसका पाणि-ग्रहण जब होगा तब किसी कविके साथ। पर न कोई कवि मिलता था, न उसकी मँगनी होती थी। इसी प्रतीक्षामें लड़कीकी अवस्था भी सोलहके पार हो चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि चच्चाने एक बार यहाँ भी अपनी क़िस्मत आजमानेकी सोची। एक दिन सन्ध्याके समय पं० नेकीरामसे मिलकर उन्होंने अपना आशय सुनाया। पं० नेकीरामने पूछा—'तुम कवि हो?'

'हूँ नहीं, पर हो जाऊँगा।'—चच्चाने कहा—'एक गुरुकी तलाशमें हूँ।'

पहला प्रभाव अच्छा पड़ा। उन्होंने कहा—'तुम्हारे कुलमें क्या कोई कवि हुआ है?'

'मेरे दादा राजकवि थे और पिता कविराज थे।'

दूसरा प्रभाव बहुत बढ़-चढ़कर पड़ा। इस उत्तरसे नेकीरामजी निहाल हो गये। उन्होंने कहा—'क्या तुम्हारे दादा राजकवि थे? ऐसी बात है तो अपनी कोई कविता सुनाओ।'

कवि चच्चा उस समय तक महाकवि नहीं हुए थे। कुछ सोचा, समझा, गुना और विचार किया। सफलता होनी थी। उन्हें ऐसा लगा कि वह कवि हो रहे हैं। अपने दादाका और अपने पिताका एक अनुभव उन्हें याद आया और उन्होंने कह डाला—

> भागहु प्रान समेट कविवर और कविराज दोउ।
>
> सबको दूखत पेट भूखन या नगरी चचा॥

तीसरा प्रभाव अति आनन्दकारी, बड़ा आह्लाद-मय पड़ा। इस बार तो नेकीरामजी लोटपोट हो गये; अपनी पुत्रीका हाथ पकड़कर वे बाहर खींच लाये और हमारे कविको उसे सौंपकर

25969

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले—'बेटा ! आजसे तुम मेरे दामाद हुए। आशा है तुम्हें सारे सुखोंमें यह डुबायमान कर देगी।'

उसकी ओर हमारे कविने भर-आँख देखा। क्या कहा जाय ! उसे विधाताने अपने सुअवसरोंके लिए बनाया था, उसका यौवन अपनी मस्तीमें सँवारा था। उसके आँखोंके बारे में—

अँखिया है बाम की
कि फँकिया है आम की।

और कपोलके बारेमें—

रूप - सुधा - भारे
कीधौं किसलैके दोना ये।

और ठुड्डीके बारेमें ? ख़ैर जाने दीजिये।

उसके सम्बन्धमें महाकवि चच्चा अपने हृदयके भावोंको प्रकाश में लाते तो अब तक सब भावोंका भाव गिर गया होता।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४

पहला पाठ

काशीकी 'कौतुक' नामक प्रसिद्ध मासिक-पत्रिकाको कौन नहीं जानता था। सालमें १२ विशेषांक निकालना इसीका काम था। देशमें नमक सत्याग्रह आरम्भ होते ही इसने अपना साँभर विशेषांक निकाला। प्रयागमें रामलीलाके अवसरपर हिन्दू मुसलिम दङ्गा समाप्त भी नहीं हुआ था कि इसने अपना सुरसा विशेषांक निकाल दिया। प्रधान सम्पादकके पुत्रकी बरही भी न बीती थी कि इसका सौरी विशेषांक निकल गया।

खेद है गत मार्चमें इस उपयोगी पत्रिकाकी जीवनलीला समाप्त हो गयी। इसके दो सम्पादक थे। एक रोज दोनों आपसमें लड़ पड़े और एक दूसरे पर पेपर-वेट फेंकने लगे। एक पेपर-वेट बहककर बगलमें बैठे हुए संचालक महोदयके ब्रह्माण्डपर जा गिरा। उन्होंने अपनी कच्ची गृहस्थीका खयाल करके 'कौतुक' को उसी क्षण बन्द कर दिया।

'कौतुक' का स्मरण मुझे इस समय एक खास वजहसे हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आया। उसके अन्तिम अंकमें पं० बिलवासी मिश्रका एक लेख छपा था। लेख महाकवि चच्चा से सम्बन्धित था, और अत्यन्त गवेषणापूर्ण था। उससे उस महाकविके जीवनके एक अध्यायपर अच्छा प्रकाश पड़ता है। उसके आवश्यक अंशको मैं ज्यों-का-त्यों उद्धृत किये देता हूँ। बिलवासीजीने लिखा था—

ऐसा प्रसिद्ध है कि कवि चच्चाको शुरू ही से कविताकी लसी थोड़ी आ गयी थी; पर जब वे पचीसीके मध्यमें थे, तब उनके हृदयमें काव्यरचनाकी प्रवृत्ति अच्छी तरह जाग्रत हुई। लेकिन वह समय घोंघापन्थीका था। लोग कविता सीखनेके लिये एक गुरुका होना आवश्यक समझते थे। कवि चच्चा भी इसी पुराने खयालके आदमी थे। उन्हें खबर लगी कि गङ्गाके उस पार रेतीपर छप्पर डालकर एक बड़े प्रतिभाशाली कवि निवास करते हैं। उनकी टोह लेनेपर कई मजेदार बातें मालूम हुईं। एक तो यह कि उनकी कुटीमें एक किनारे कुछ टीनके कनस्तर रखे हैं, किसीपर रस, किसीपर अलंकार, किसीपर नायिकाभेद आदि लिखा है। जिस कनस्तरपर जो लिखा है उसमें उसी विषयके ग्रन्थ भरे पड़े हैं। जान पड़ता है इन कनस्तरोंकी संख्या अठारह थी, क्योंकि उनके एक शिष्यने कवि चच्चा से एक बार बड़े अभिमानपूर्वक कहा कि हमारे गुरुमहाराजने अठारह कनस्तर विद्या पढ़ी है।

गुरुमहाराजके सम्बन्धमें दूसरी बात बड़ी विचित्र यह थी कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने अपने जीवनसे गद्यका पूर्ण बहिष्कार कर रक्खा था। कई बरससे उन्होंने यह व्रत ले रक्खा था कि पद्य छोड़कर वे गद्यमें किसीसे बाततक न करेंगे, चाहे लाख अड़चन पड़े और बड़े-से-बड़ा अकाज हो जाय।

खैर, कवि 'चच्चा' ने इन्हींसे शिक्षा लेनेकी ठानी। भरणी-भद्रा बचाकर वे इनके यहाँ पहुँचे। देखा कि गुरुमहाराज कुटीके बाहर एक चटाईपर बैठे हैं। बगलमें एक कनस्तर रक्खा है जिसमेंसे एक पोथी निकालकर वे पढ़ रहे हैं। सामने लोहेका पिंजड़ा है जिसमें एक तोता है जो कहता है—'जगण मगण, आगतपतिका, लाटानुप्रास, छेकापन्हुति, जगण मगण, टेंटें...'

कवि 'चच्चा' गुरुमहाराजके पैर छूकर बैठ रहे। थोड़ी देर दोनों एक दूसरेकी ओर गौरसे देखते रहे; फिर गुरुमहाराजने कहा—

> रे बालक नादान कहाँ सोयेसे जागा।
> किस माताकी गोद किये सूनी उठि भागा॥

कवि 'चच्चा' ने विनयपूर्वक निवेदन किया कि मैं बालक नहीं हूँ, और मेरी शादी हालमें हो चुकी है। इसपर गुरुमहाराजने प्रश्नको तुरन्त दूसरा रूप देकर पूछा—

> कहिये कृपानिधान कहाँसे कैसे आये।
> किस बिरहिनकी सेज किये सूनी उठि धाये॥

कवि चच्चाने इस बार अधिक स्पष्ट शब्दोंमें गुरुदेवको समझाया कि मैंने न किसी माताकी गोद सूनी की है और न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी विरहिनकी सेज, मैं शहरमें ही रहता हूँ और काव्यशास्त्रमें दीक्षित होनेके लिये आपके पास आया हूँ।

गुरुमहाराजने मुँह बिचकाकर कहा—

कवि सब गये बिलाय भई बानी जिमि वन्ध्या।
कविता भई अनाथ बिसूरै प्रातः सन्ध्या॥

कवि चच्चा ने कहा हाँ, यह ठीक है, पर मैं कविताका उद्धार करूँगा, इसीलिए आपका चेला बनना चाहता हूँ; आशा है आप मेरी विनती स्वीकार करेंगे।

गुरुदेव ने सिर हिलाकर नहीं किया और कहा—

मन मिलेका मेला।
चित्त मिलेका चेला॥
वृथा नरकौमें ठेलमठेला।
बाबा, सबसे भला अकेला॥

सारांश यह कि कवि चच्चाने बड़ी प्रार्थना की पर गुरुदेव न पसीजे। उन्होंने नहीं छोड़कर हाँ न किया। उनका कहना था कि उन्होंने नये चेलोंकी भरती बन्द कर दी है। उनके पुराने चेले ही उनका नाम बदनाम करनेके लिए काफ़ी हैं। अपने चेलोंकी करनी सोचकर वे लज्जासे गड़ जाते हैं। उनके एक शिष्यने इतनी उच्छृङ्खलता दिखायी कि सारी कवि परम्पराओंको ठुकराकर किसी कामिनीके नेत्रोंकी उपमा कटहलके कोएसे दे डाली। जब पुराना शिष्य नेत्रोंकी उपमा कटहलके कोएसे देता है तो नया शिष्य किसी सुन्दरीके कपोलकी उपमा पावरोटीसे दे तो क्या आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। यही सब सोचकर गुरुदेवने चेला बनाना ही बन्द कर दिया था।

कवि चच्चा अनुनय-विनय करके हार गये। वे हताश होकर घर लौटनेकी सोचने लगे। भावोंकी प्रतिक्रिया कुछ ऐसी हुई कि हृदयमें कविताके प्रति उच्चाटन-सा हो चला। पर परमात्माको हिन्दीकी भलाई मंजूर थी। उससे देखा नहीं गया कि महाकवि होनेकी शक्ति रखनेवाला एक व्यक्ति कवितासे यों मन मोटा करके चला जाय। एक साधारण घटना द्वारा उसने तुरत सारी स्थिति बदल दी।

मैं पहिले कह चुका हूँ कि गुरुमहाराजके आगे तोतेका पिंजड़ा रक्खा था। पिंजड़ेका पल्ला शायद ढीला था। तोतेने पल्ला खोल लिया और सर निकालकर बाहर झाँकने लगा। संयोगसे कोनेमें एक बिल्ली दुबकी हुई थी। उसने झपटकर तोतेको पकड़ लिया और सबकी आँखोंके सामनेसे उसे ले भागी।

पर वाहरे गुरुमहाराज! आदमी हो तो ऐसा हो! टेक इसका नाम है। उन्होंने इस अवसरपर भी गद्यकी भाषाका प्रयोग नहीं किया। दूसरा होता तो गँवारोंकी तरह दौड़ो-दौड़ो पकड़ो-मारो चिल्लाने लगता, पर गुरुमहाराजने अपने पनरुआ नामक नौकरको पुकार कर कहा—

अरे पनरुआ दौड़ बिलरिया लै गयी सुग्गा!
तू मन मारे खड़ा निहारै जैसे भुग्गा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरे पनरुआ दौड़ पड़ा है खाली पिंजड़ा।
तू मन मारे खड़ा निहारे जैसे हिंजड़ा॥

खेदके साथ कहना पड़ता है कि इन सुन्दर पंक्तियोंका पनरुआपर कोई प्रभाव न पड़ा। वह अपनी जगहसे हिला भी नहीं। उन्होंने फिर कहा—

अरे पनरुआ दौड़ बिलरिया बैठी छप्पर।
तू मन मारे खड़ा बना है जैसे पत्थर॥
अरे पनरुआ दौड़ बिलरिया नीचे उतरी।
तू मन मारे खड़ा बना है ज्यों कठपुतरी॥

पनरुआ अब भी भौंचक्का-सा खड़ा रहा। उसके दिल और दिमागमेंसे एक, अवश्य किसी पथरीले पदार्थका बना था।

कवि 'चच्चा' से न देखा गया। वे बिल्लीके पीछे दौड़ पड़े। बिल्ली तोतेको चट करनेके लिए किसी एकान्त और निरापद स्थानकी खोजमें थी। हमारे कविने पहुँचकर उसका खेल बिगाड़ दिया। उस रेतीले सपाटपर वह कवि 'चच्चा' से तेज न दौड़ सकी और तोतेको छोड़कर भाग गयी।

तोतेको एक जगह दाँत धँसे थे पर विशेष चोट न आयी थी। कवि चच्चाने उसे लाकर पिंजड़ेमें रख दिया। गुरुमहाराज पिंजड़ा पुनः आबाद देखकर प्रफुल्ल हुए। उन्होंने अपना निश्चय बदल दिया और 'चच्चा' को अपना शिष्य बनाना स्वीकार कर लिया। कवि चच्चाके हर्षका कुछ ठिकाना न रहा। उसी दिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरुमहाराजने उन्हें पहला पाठ पढ़ाया और कहा कि रास्तेमें याद करते जाना। पहला पाठ था—

बिनय सील उर धारि छाँड़ि विद्याको गर्रा।
गुरु चरननमें बैठि पिये पिंगलको ठर्रा॥
लिखि फारै फिर लिखै लाख खर्रे पै खर्रा।
तब कविताको रामकृपा कछु पावै ढर्रा॥

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५

सट्टीमें सन्नाटा

साहित्यके बन्दे सभी थे। कोई लेखक था, कोई समालोचक था; कोई कवि था और कोई नाटककार था। खूबी इस बातकी थी कि एक मैदानमें इतने शेर एक साथ इतनी देर तक बैठे रहे, पर भिड़न्तकी बारी न आयी।

आशङ्का अवश्य थी। महावीर-दलके कुछ स्वयंसेवक बुला लिये गये थे और उन्हें सहेज दिया गया था कि किसीको यदि आस्तीन खसकाते या कमर कसते देखो तो उसे फ़ौरन सभासे अलग कर दो।

श्री गलगंज महासमिति नगरकी प्रमुख साहित्यिक संस्था है। आज उसीका एक असाधारण अधिवेशन है। सभापति हैं गद्य-गदाधर पद्य-पयोनिधि पं० धुरन्धर शर्म्मा। व्याख्याता हैं साहित्याचार्य्य साहित्यानन्दसन्दोह पं० बिलवासी मिश्र।

बात यों थी। इधर कुछ दिनों से हिन्दी-संसार एक विशाल भठियारखाना बन गया था। सारे झगड़ेकी जड़ थे पं० बिलवासी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिश्र। लोग कहते थे कि उन्हें क्या पड़ी थी कि वे कवि 'चच्चा' को हिन्दी-संसारकी छाती पर ढकेलने गये। यदि कवि चच्चा को वापस न लेलें तो साहित्यिक जमावड़ोंमें उनका पान-पत्ता बन्द कर दिया जाय।

दूसरी ओर ऐसे भी लोग थे—और उनकी संख्या कम न थी—जो विलवासीजीको पुचारा देते थे, और कवि चच्चा विषयक खोजके लिये उन्हें धन्यवाद का पात्र समझते थे। इस पार्टीका नाम था 'चच्चा' पार्टी। दूसरीका कोई नाम न था पर तुक मिलानेके लिये कुछ लोग उसे 'बच्चा' पार्टीके नामसे पुकारते थे।

इन दोनों पार्टियों में अच्छी बमचख चली। बरसों के पुराने दोस्त बेगाने हो गये। अख़बारों द्वारा लोग एक दूसरेपर महीनों तक विष उगलते रहे। तड़बन्दी यहाँतक बढ़ी कि तड़ातड़की नौबत पहुँच गयी।

एक शामको चौकके चौराहेपर लाला राघोराम और पं० खूबचन्दमें मुठभेड़ हो गयी। दोनों दो पार्टीके थे। सूत्रपात बहस से हुआ। बहसका क्रमिक विकास होते-होते कहा-सुनी हुई, फिर गाली-गलौज, फिर हाथापाई, फिर धर-पटक।

कुछ विनोदी लड़कोंने खबर उड़ा दी कि चौराहेपर दो साँड़ लड़ पड़े। नाकेकी पुलिसने थानेमें रपट लिखायी कि चौराहेपर दो साहित्यिक लड़ पड़े। दूसरे दिन स्थानीय दैनिकने दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाचारोंका समन्वय करते हुए बड़े-बड़े अक्षरों में छापा—'चौकमें दो साहित्यिक साँड़ों की लड़ाई'—।

परिणाम अच्छा हुआ। राय होने लगी कि अब जिस तरह हो इस झगड़ेका तत्ताथम्बा हो ही जाना चाहिये। बीच सड़कोंपर मल्लयुद्ध अच्छा नहीं।

श्री गलगंज महासमितिने इस अवसरपर सराहनीय कार्य्य किया। अपना असाधारण अधिवेशन करके उसने पं० बिलवासी मिश्रको मौक़ा दिया कि वे कवि 'चच्चा' को प्रमाणोंकी दृढ़ भित्तिपर स्थापित कर सकें और अपने विरोधियोंके हृदयसे सन्देहका काँटा दूर कर सकें।

आज यही शुभ अवसर उपस्थित था। साहित्यसेवियोंकी एक भारी भीड़ उमड़ आयी थी। सभापतिके प्रारम्भिक भाषणके उपरान्त बिलवासीजीकी पुकार हुई, और वे आगे आये। वे जानते थे कि आज उनकी अग्निपरीक्षा है पर वे बिलकुल शान्त थे, मानों प्रशान्त महासागरको मथकर निकाले गये हों। उनके विरोधियोंपर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा—वे दाँतों उँगली दबाकर रह गये।

बिलवासीजीका आत्मविश्वास ही उनकी सफलताका मूल मंत्र है। आज एक-से-एक साहित्य-महारथी उपस्थित थे। केवल आगेकी एक क़तारमें बिलवासीजीने देखा कि लोलजी, अनमोलजी; दीपजी, महीपजी; धन्यजी, अनन्यजी; प्रलयजी, प्रमत्तजी; धुरीणजी, प्रवीणजी, आदि अनेक सुकवि और सुलेखक बैठे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहनेका तात्पर्य यह कि बिना उपनामका एक भी सामान्य जीव वहाँ नहीं था। ऐसी सभामें सौम्य स्वभावसे और संयत भाषामें पतेकी बात कहना बिलवासीजीका ही काम था।

वे अपने स्थानसे उठे और सभापतिके टेबुलके पास जाकर खड़े हो गये। लाला झाऊलालने आगे बढ़कर उनके पास पानका डब्बा रख दिया—बिलवासीजीको अन्य वक्ताओंकी तरह पानीके गिलासकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

इस समय अगर कोई होनहार संवाददाता इस सभाकी रिपोर्ट लिखता तो शीर्षक देता 'सट्टीमें सन्नाटा'। यही सभाभवन जो अभी एक मिनट पहिले कौवारोरमें डूबा हुआ था, अब यकायक एक निर्जन वनस्थलीके समान निस्तब्ध हो गया।

बिलवासीजीको अपना यह प्रभाव देखकर सन्तोष हुआ। उन्होंने मुसकराकर इस मूक स्वागतको स्वीकार किया और कहा—"सज्जनो! अपने मस्तिष्कमें लहराते हुए विचार-सागरको मथकर जिन तत्व-रत्नोंको मैं समय-समयपर प्राप्त करता रहता हूँ उनमें एक यह भी है कि जो दलबन्दियोंसे दूर रहे वह साहित्य-सेवी नहीं।

मैं अपनेको एक अदना साहित्य-सेवी मानता हूँ। मेरी एक मनोकामना है—ईश्वर उसे पूरी करे—कि मेरे बाद मेरे बच्चे सर उठाकर यह कह सकें कि पिताजी यद्यपि नालायक़ थे, निकम्मे थे, निखट्टू थे, पर साहित्य-सेवी थे। मैं देखता हूँ कि आज मेरी यह लालसा भी प्रातःकालीन ओसकी तरह हवामें विलीन हो रही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। मुझसे कहा गया कि तुम 'चच्चा' पार्टीका नेतृत्व ग्रहण करो, पर मुझे नहीं करना पड़ा। कारण यह था कि मैं साहित्यिक तड़बन्दीसे उसी प्रकार घबराता हूँ जैसे आतशबाज़ीसे कुत्ते।

यह दूसरी बात है कि आज मैं आपके सामने कवि चच्चा की पैरवी करनेके लिये उपस्थित हुआ हूँ। यह तो मेरा कर्त्तव्य है कि आपके हृदयसे सन्देह-रूपी चोरको मैं मार भगाऊँ। यह जानकर कि कुछ लोग महाकवि 'चच्चा' के विषयमें सन्देह कर रहे हैं मुझे हर्ष और आश्चर्य दोनों हुआ; हर्ष उनके साहसपर और आश्चर्य उनकी बुद्धिपर।

एक सज्जनका कहना है कि 'चच्चा' यदि पेटके लिये पुरोहिती करते थे तो वे कवि कभी न रहे होंगे; क्योंकि पुरोहिती और कविताका मेल, बाटी और गँडेरीके मेलसे भी बुरा है। यह क्या अनोखा तर्क है! क्या परमात्माकी रचनायें विचित्रता से ख़ाली हो गयीं? जो ईश्वर तिलको ताड़ और राईको पर्वत बना सकता है वह क्या एक पुरोहितको महाकवि नहीं बना सकता?

कौतूहल और सन्देहकी प्रवृत्तियाँ अपने-अपने स्थानपर अत्यन्त प्रयोजनीय हैं—उन्होंने मनुष्य-जातिको प्रगतिके पथ-पर खदेड़नेमें अकसर चाबुकका काम किया है; पर इसकी एक सीमा है। जब आप महाकवि 'चच्चा' के विषयमें सन्देह करना आरम्भ करते हैं तब आप औचित्यकी सीमाका उल्लंघन कर जाते हैं। यों तो सन्देह करनेका आपको अधिकार है—एक समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीताके सतीत्वपर भी किसीने सन्देह किया था। कुछ लोग स्वयं परमात्माके अस्तित्वमें सन्देह करते हैं।

इस विषयको मैं अधिक तूल देना नहीं चाहता। कवि चच्चा पर किये गये आक्षेपों और सन्देहोंका उत्तर मैं उन्हींके शब्दोंमें यों दे सकता हूँ—

नेकु 'चचा' चित सोच नहीं
यदि आज अबूझ उड़ावहिं ठट्टे।
कालिह परों कि नरों धरु धीर
कहैंगे सबै मोहिं साबस पट्टे॥

इन शब्दोंसे कविकी आशावादिता तो स्पष्ट है ही, साथ ही उसके एक और गुणका भी आभास मिलता है। वह है उसकी क्षमाशीलता; अपने विरोधियोंको वह केवल 'अबूझ' कह कर छोड़ देता है। आजकलकी परिपाटीके अनुसार उनकी सात पुश्त तक नहीं चढ़ जाता।

सज्जनो! मुझे आशा थी कि शिवसिंह-सरोजमें कवि चच्चा का उल्लेख अवश्य मिलेगा। मैंने सरोजके नये पुराने अनेक संस्करण देखे पर इनका नाम तक न मिला। इसका मुझे महान् आश्चर्य्य है क्योंकि मेरे पास यथेष्ट प्रमाण है कि बाबू शिवसिंह सेंगर से महाकवि चच्चा का एक बार साक्षात् हुआ था।

उन दिनों ठाकुर शिवसिंहजी उन्नावमें पुलिस इंसपेक्टर थे और महाकवि चच्चा उन्हीं दिनों किसी आश्रयदाताकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खोजमें अवधके ताल्लुकेदारोंके यहाँ मारे-मारे फिर रहे थे। ये लखनऊ, सीतापुर, लखीमपुर वगैरःसे झख मारते हुए उन्नाव पहुँचे और एक मन्दिरमें ठहर गये। शिवसिंहजीको खबर मिली तब उन्होंने अपने एक अर्दलीको भेजा कि अमुक स्थानमें एक कवि ठहरे हैं, उन्हें बुला लाओ।

अर्दली था मुसलमान, वह जानता भी न था कि कवि किसे कहते हैं। ठाकुर साहबसे तो पूछनेका साहस हुआ नहीं, वह दौड़ा हुआ उस मकतबके मौलवीके यहाँ गया जहाँ उसने अलिफ-बे पढ़ा था। मौलवी साहब भी कविका अर्थ नहीं जानते थे, पर उन्हें एक अस्पष्ट धारणा-सी थी कि कवि किसी ऐसे व्यक्तिको कहते हैं जो बिना कामकाजके इधर-उधर मारा-मारा फिरता हो।

अर्दलीको भी कविका यही अर्थ ठीक जँचा। जब इन्स-पेक्टर साहबने एक ऐसे आदमीको बुला भेजा है जो बिना रोज़ी या रोज़गारके बाहरसे आकर एक मन्दिरमें ठहर गया है तब वह हो-न-हो कोई आवारा या उठाईगीरा होगा।

वह बताये हुए पतेपर कवि चच्चा के पास पहुँचा। वे उस समय लँगोट पहने हुए भङ्ग पीस रहे थे। अर्दलीने कहा—'चलो तुम्हें बड़े दारोग़ाजीने बुलाया है।'

कवि चच्चाने घबराकर पूछा—'अजी कौन दारोग़ा ?'

'बड़े दारोग़ा साहबने तुम्हें फ़ौरन बुलाया है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि चच्चा के दूरके रिश्तेके एक फूफा थे जो कानपुरमें पुलिस विभागमें नौकर थे। उन्होंने सोचा कि शायद वही तरक्की पाकर उन्नावमें दारोग़ा हो गये हैं। निश्चय करनेके लिये उन्होंने पूछा—'ज़रा दारोग़ा साहबका हुलिया तो बताओ। नाटेसे हैं? चियाँ-सी आँखें हैं और घुण्डी-सी नाक है?'

अर्दलीने बिगड़कर कहा—'अबे चलता है कि बैठे-बैठे गुस्ताख़ीकी बातें करता है?'

चच्चाने कहा—'ठहरो भैया! अभी चला। भङ्ग तो छान लेने दो। थोड़ा दारोग़ा साहबके लिये भी ले चलूँगा।'

कवि चच्चा ने यह बात यद्यपि बिल्कुल सरल भावसे कही थी पर अर्दलीने समझा यह धूर्त बातें बना रहा है और सीधेसे चलनेका नाम न लेगा। उसे अफ़सोस हुआ कि आते समय वह थानेसे कोई रस्सी या हथकड़ी न लाया। उसने इधर-उधर निगाह दौड़ायी तो सामने डारेपर कवि चच्चा की धोती सूखती हुई दिखायी पड़ी। लपक कर उसने धोती उतार ली, उसका फन्दा बना कर उसने कवि चच्चा के गलेमें डाल दिया और उन्हें खींचता हुआ ले चला।

कवि चच्चा के लिए यह एक बिलकुल नया अनुभव था। इस दशामें उन्होंने अपनेको कभी न पाया था। उन्हें प्रेमसे कोई बुलाता था तो कच्चे धागेसे खिंचे चले जाते थे, पर मोटे मारकीन की धोतीसे खिंच कर आजतक वे कहीं नहीं गये थे। उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गलेमें धोतीका फन्दा और कमरमें सिर्फ़ एक लंगोट था। किसी कविका ऐसा निराला ठाट आज तक किसीने न देखा होगा। बड़ासे बड़ा क्रान्तिकारी कवि भी शायद इस वेषभूषाको पसन्द न करता।

कवि चच्चा ने भी नहीं पसन्द किया। यह स्पष्ट था कि गलेमें धोती और कमरमें लंगोटका फैशन उन्हें नहीं पसन्द आया। इस पोशाकमें मन्दिरसे बाहर निकलनेमें उन्हें आपत्ति थी। उन्होंने अड़ना चाहा, अकड़ना चाहा, पर सब बेकार गया। कोई तदबीर काम न आयी।

अर्दलीका पक्ष प्रबल था। वह कवि चच्चा को खींच ले चला। रास्तेमें जिन लोगोंने देखा उन्होंने यही समझा कि कल्लू नामका मशहूर चोर गिरफ़्तार हो गया, जिसने सरकारी ख़ज़ाने-से सिर्फ़ दो रात पहिले ताला तोड़ कर कई हज़ारकी थैली उड़ायी थी।

पहिले तो ठाकुर शिवसिंहजीने भी यही समझा। उन्होंने कवि चच्चा से कहा—'क्यों बे कलुआ! चला था पुलिसकी आँखोंमें धूल झोंकने?' लेकिन पाँच ही मिनटमें सारा भेद खुल गया। जब उन्हें मालूम हुआ कि ये कविवर 'चच्चा' हैं तब उन्होंने बहुत खेद प्रकट किया, अपने अर्दलीपर जुर्माना किया और कवि चच्चासे क्षमाकी याचना की। उन्होंने कवि चच्चाको अपने ही यहाँ ठहराया और बड़ा आदर-सत्कार किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि चच्चा ने शिवसिंहजीको क्षमा कर दिया पर पुलिसके दुर्व्यवहारसे वे बड़े खिन्न हुए थे। बात ही बातमें उन्होंने शिवसिंहजीसे पुलिसकी प्रशंसा इन शब्दोंमें की थी--

प्रलयंकर रूप धरैं छिन में
भयतें जिनके डरपे सब ही हैं।
अरिको नहिं ठाँव महीमें कहीं
जनपै अपने रछपाल सही हैं॥
अपशब्द हलाहल कण्ठ किये
तजि शूल लिये करमें पनही हैं॥
पदकंज पुलीसके सीस धरौ
हम तीस करोरके ईस यही हैं॥

इनकी प्रतिभाका चमत्कार देखकर ठाकुर शिवसिंहजी बड़े प्रसन्न हुये। उन्होंने इनसे कहा कि मैं आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। कवि चच्चा ने उत्तर दिया कि जो कुछ सेवा करनी हो स्वयं करियेगा, कृपा करके अपने अर्दलीसे न कराइयेगा।

ठाकुर साहबने हँसकर कहा—'अजी नहीं! मैं और किस योग्य हूँ पर इतनी सेवा आपकी कर सकता हूँ कि आप यदि हमारे विभागमें नौकरी करना चाहें तो मैं बड़े साहब से सिफ़ारिश करके आपको किसी पुलिस चौकीकी जमादारी दिला दूँ।'

कवि चच्चा को यह भय था कि वे क़ायदा क़ानून बिलकुल नहीं जानते, इसलिए पुलिसकी नोकरीके अयोग्य साबित होंगे; लेकिन ठाकुर साहबने यह कह कर उनका समाधान किया कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुलिसको क़ायदा-क़ानून जाननेकी ज़रूरत ही नहीं है, वह अपना क़ायदा-क़ानून स्वयं बनाती हैं।

शिवसिंहजीने बहुत आग्रह किया पर कवि चच्चा ने उनके प्रस्तावको ठुकरा दिया। वे अपने सिद्धांत के पक्के थे। उनकी दृढ़तामें शिवसिंहजीको दुराग्रह की गंध आयी और वे कुछ नाराज़ हो गये। सम्भव है इसी कारणसे उन्होंने 'सरोज' में इनका ज़िक्र न किया हो।

काशी लौटकर कवि चच्चा ने अपनी स्त्रीसे सारा हाल कहा। उनका पुलिसकी नौकरीपर लात मार कर चले आना उसे अच्छा नहीं लगा। उसने भी बहुत कुछ ऊँचा-नीचा समझाया पर वे अपनी टेक पर अड़े रहे। जिन तर्कों द्वारा उनकी स्त्रीने उन्हें डिगानेकी कोशिश की थी उनका उल्लेख उन्होंने स्वयं इस प्रकार किया है—

बैद हकीम मुनीम महाजन
साधु पुरोहित पण्डित पोंगा।
लेखक लाख मरैं बिनु अन्न
'चचा' कविता करि का सुखभोगा॥
पाप कि पुन्न भलो कि बुरो
सुरलोक कि रौरव कौन जमोगा।
देस बरै कि बुताय पिया
हरखाय हिया तुम होहु दरोगा॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६

सिलका सिलसिला

उनकी अधखुली आँखें झपकियाँ ले रही थीं। चेहरेका चमड़ा चढ़ी हुई खँजड़ीकी तरह खिंचा हुआ था।

यकायक उनकी आवाज़ कमरे में गूँज उठी। वे बोले—"सज्जनो! आप लोग जानते हैं कि रास्ता चलनेसे कटता है, ऋण देनेसे पटता है, रोग दवासे घटता है, दूध खटाईसे फटता है और लिफ़ाफ़ा गोंदसे सटता है!"

दो मिनट चुप रहकर पंडितजी फिर बोले—"ये जो वाक्य मैंने अभी कहे हैं उनसे मेरे मूल वक्तव्यसे कोई सरोकार नहीं, उन्हें केवल सजावटके लिये मैंने आरम्भमें रख दिये हैं। अब मैं अपने मुख्य विषयपर आता हूँ। आप लोग चित्त एकाग्र करके, सम्भव हो तो हृदयकी गति रोक करके, ध्यानपूर्वक सुनिये। लाला घासीराम-से कहिये कि अपने कान खड़े कर लें, पर स्वयं बैठ जाय।"

हम लोगोंका हृदय आशाके लहरोंसे लहरा उठा। बिलवासीजी आज ज़ोरोंपर हैं। किस विषयपर क्या कहेंगे—यह जाननेके के लिये सारी मण्डली उद्ग्रीव हो रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पंडितजी बोले—"सज्जनों! आज ज़रा गहरी छन गयी है। कुछ मित्र मकानपर आ जमे थे। उनकी राय हुई कि भंग छने। मैंने स्वतंत्र रूपसे भी यही राय क़ायम की थी कि भंग ज़रूर छने। और भंग तैयार हुई। जिस समय गलेसे उतरकर हृदयको शीतल करती हुई पाकस्थलीमें पहुँची मुझे उस समय ऐसा जान पड़ा कि सारा विश्व एक विशाल इन्द्र-धनुष है जो मेरे ही रङ्ग-से रङ्गीन होकर रङ्ग ला रहा है। अब इस समयकी दशा क्या कहूँ! मुझमें और विश्वात्मामें अब कुछ ही बित्तोंका फ़र्क़ रह गया है। कवि 'चच्चा' के शब्दोंमें—

मानस सरोवरमें उठत तरंग आजु
अंग-अंग कैसी हुरदंगकी लहर हैं।
ध्यानकी घटासे जो बरसत बिचारधारा
हियेमें बहाये देत ज्ञानकी नहर हैं।।

सज्जनो! यह मैं आपसे कह चुका हूँ कि कवि चच्चा विजयाके परम भक्त थे और विजयाको भगवानकी विभूति समझते थे। उनकी रचनाओंमें उनकी भंग विषयक आसक्तिकी झलक जगह-जगहपर मिलती है। उनकी रायमें भंग के लिये सभी स्थान और सभी अवसर उपयुक्त थे—

छत पै, तखत पै, कि जगत पै इनारेके
आँगनमें, बागनमें, सांकरी डगरमें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाँग-बूटीमें बाधा डालनेवालोंके लिये वे किसी भी दण्डको अधिक नहीं समझते थे—

भंगके प्रसंगमें चमारिये जे भंग डारैं
बांधि सिलाखंड तिन्हैं सागरमें डारिये।

पति की सेवा करनेवाली सती स्त्रीकी प्रशंसा एक बार उन्होंने इन शब्दोंमें की थी—

बिजन डुलावति है पगन पलोटति है
घोंटति है भंग परे हाथनमें लोढ़ा हैं।

कहा जाता है कि कवि चच्चाने 'भङ्ग-भारती' नामका एक बड़ा काव्य-ग्रन्थ बनाया था। इस ग्रंथको एक पंसारीके यहाँ बारह आनेपर बन्धक रखकर उन्होंने उससे भंगके लिये कुछ ठण्डाई और चीनी ख़रीदी। बारह दिनका वादा था, पर बारह महीने प्रतीक्षा देखकर, जब उसके बारह आने पैसे नहीं ही वापस मिले, तब पंसारी ने ग्रंथके पन्ने फाड़कर पुड़िया बांध डालीं। पुस्तक नष्ट हो गयी, पद्य-साहित्यके न जाने कितने अनमोल रत्न सदाके लिये विस्मृतिके धूलमें मिल गये। ग्रंथका अन्तिम छंद एक सज्जनको याद था। वह इस प्रकार है—

कोटि जनमके घोर तपसे प्रसन्न भये
बाबा बमभोला तब बोले बेटा मांगु बर।
हौं जो भले रीझे नाथ, बोल्यौं हौं नवाइ माथ,
दीजै सुभ बास निज गिरिकै सिखरपर॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खास खवासनमें सेवा सौभाग्य होय
सिलके सुचि सिलसिलेमेंकाम पावै अनुचर ।
बिजया बनाइकै पिलावै औ प्रसाद पावै
ऐसो बड़भागी पेखि इन्द्र कांपै थरथर ॥

एक स्कूलके उत्साही संचालकोंने अपने यहाँ एक सुलभ व्याख्यान-मालाकी आयोजना की थी। नगरका कोई प्रतिष्ठित और विद्वान् व्यक्ति प्रति शनिवारको आकर छात्रोंको कुछ उपदेश देता था। एक शनिवारको कवि चच्चा बुलाये गये थे। उन्होंने व्याख्यान तो अच्छा दिया; लड़कोंको पढ़ने-लिखने और डंड पेलनेकी शिक्षा दी पर अन्तमें वे उन्हें विजया सेवन करनेकी सलाह देने लगे। उन्होंने कहा—'प्यारे बालको! यदि पढ़ते-पढ़ते जी ऊब जाय, माथा खाली और शरीर शिथिल जान पड़ने लगे तो घबराना मत। मेरी सलाह मानना। मिर्च, बादाम, सौंफ, और इलायचीके साथ थोड़ी भङ्ग पीस डालना। फिर शक्कर मिलाकर लोटेमें छान लेना और पी लेना। बच जाय तो सहपाठियों और अध्यापकोंको बाँट देना। फल तत्काल दीख पड़ेगा। गणित का जो प्रश्न पहिले प्राण देनेपर भी नहीं पिघलता था वह चुटकी बजाते हल हो जायगा। बल दुगुना, उत्साह चौगुना, और बुद्धि अठगुनी हो जायगी। बालको! भङ्ग चीज़ ही ऐसी है। सृष्टिकर्त्ताकी सारी मायाकी गुटका है। सफलताकी कुंजी है। हास्यविनोदकी आत्मा है। हरी मनभरी इसका नाम है। भङ्गकी मादकताका नाम स्वर्ग है। भगवान् नटवर ने इसी भङ्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे भेषजके भरोसे कालकूट को कण्ठस्थ किया था। भङ्गके गोलेका सदा बोलबाला रहे। तुम्हें पढ़ाया गया है कि पृथ्वी गोल है, पर यह तुम न जानते होगे कि पृथ्वीने अपनी गोलाई भङ्गके गोलेसे सीखी। जानते हो हथेलीमें गड्ढा किस लिये है ? भङ्गके गोलेके लिए। जिस प्रकार··· ·······।

कवि चच्चा अभी बहुत कुछ कहते पर स्कूलके हेड-मास्टरने उन्हें बोलनेसे रोक दिया। उसने कहा कि मैं नहीं चाहता कि मेरे छात्र आपका व्याख्यान सुनें, मैंने आपको बुलाकर बड़ी ग़लती की, आप कृपया चले जाइये।

कवि चच्चा को हेडमास्टरकी यह गुफ्तगू निहायत नापसन्द आयी और वे वहीं एक आराम-कुर्सीपर यह कहते हुए लेट गये कि मैं बिना अपना व्याख्यान समाप्त किये यहाँसे नहीं टलूँगा।

अन्तमें हेडमास्टरका इशारा पाकर चार अध्यापकोंने आराम कुर्सीको कवि चच्चाके सहित उठा लिया और कम्पौण्डके बाहर ले चले। लड़कोंने सोचा कि चलो अच्छा तमाशा देखने को मिला; वे भी संग हो लिये।

दृश्य यह था कि आगे-आगे चार अध्यापक, उनके कंधों-पर एक आरामकुर्सी, आरामकुर्सीपर कविवर चच्चा—आरामसे लेटे हुए; और पीछे-पीछे २–३ सौ स्कूली लड़के, जो ताली पीटते हुए 'राम नाम सत्य है' पुकार रहे थे।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७

निजी और गोपनीय

पारिवारिक जीवनकी अत्यन्त साधारण घटनाओं को भी हम अकसर इतना महत्व दे बैठते हैं कि वे हमें एक विशेष रूपसे प्रभावित करने की शक्ति प्राप्त कर लेती हैं—या यों कहिये कि हमारे सुख-दुखकी मात्राको घटाना या बढ़ाना उनके वशकी बात हो जाती है।

उदाहरणके लिए लाला घासीरामको लीजिये। आज तीसरे पहर उनकी पत्नीने उन्हें पाव-भर पेठा खिलाया और जबतक वह खाते रहे, वह उनके पीछे खड़ी उनकी पीठ सहलाती रही।

आप स्वीकार करेंगे कि यह एक बड़ी साधारण-सी घटना थी। अधिकसे अधिक इसे वैवाहिक आनन्दका एक रूप मान लेना काफ़ी था। लेकिन हुआ यह कि इस घटनासे घासीराम-जीका दिमाग़ फिर गया। वह अपने को दूसरा 'सत्यवान' समझ कर प्रसन्नताके पारावारमें बह चले।

दूसरा उदाहरण लाला मल्लूमलका है। एक साधारण-सी घटनाको महत्व देकर उन्होंने व्यर्थ अपनेको ग़मके गढ़ेमें गिराया। बात यह हुई कि आज दुपहरी में उनकी स्त्रीके स्लीपर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खो गये। उसने सारा घर छान डाला। जब कहीं न मिले, तब उसने लाला मल्लूमलके तकियोंके नीचे भी तलाश किया। बस, इस ज़रा-सी बातसे लाला मल्लूमलजी इतने दुखी हुए कि जिसका बयान नहीं।

अगर यह मान लिया जाय कि पतिके तकियोंके नीचे स्त्रीपर तलाश करनेका कृत्य स्त्रियोंके लिये न समाजसे अनुमोदित है और न शास्त्र-सम्मत ही—जहाँतक मालूम है, विधि-विहित भी नहीं है—तो भी बात यहाँ आकर रुक जाती है कि अगर तलाश कर ही लिया, तो क्या हो गया? कोई भी उदार-हृदय पति इस बातको भूल जाता या तरह देता; पर लाला मल्लूमल ऐसा न कर सके। इस बातसे उनके दिलको गहरी ठेस लगी। वह अत्यन्त दुःखी हुए।

सन्ध्या समय दोनों सज्जन क्लबमें आये। हर्ष और विषादका इतना सुकर तुलनात्मक दृश्य कम देखनेमें आया था। लाला घासीरामजी आनन्द-विभोर हो रहे थे; उनके होठोंपर हँसी छलक रही थी। इसके विपरीत लाला मल्लूमलजी मन-मारे, तन-हारे, भींगे लत्ते-से ढीले, और निर्जीव हो रहे थे।

एकके हर्ष और दूसरेके विषादका कारण धीरे-धीरे प्रकट हो गया। मित्रोंकी मंडलीमें ऐसी बातें नहीं छिप सकतीं।

बिलवासीजीको मनोवैज्ञानिक गुत्थियोंके सुलझानेमें स्वाभाविक आनन्द मिलता है। वह अपने मित्रोंको ही इस प्रकारके अध्ययनकी सामग्री समझते हैं। उन्होंने लाला घासीरामजीसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूछा—'जिस समय आपके पेटमें पेठा उतर रहा था और पीठपर हाथ फेरा जा रहा था, उस समय आपके हृदयमें क्या विचार उठ रहे थे ?'

'मैं सोच रहा था कि इस समय देवगण आकाशसे पुष्प-वृष्टि क्यों नहीं करते !'

'और आपने अपनी स्त्रीसे क्या कहा जो आपकी पीठपर हाथ फेर रही थी ?'

'मैंने उसे आशीर्वाद दिया।'

'क्या ?'

'सदा सौभाग्यवती हो !'

बिलवासीजी अब लाला मल्लूमलकी ओर मुड़े ! उनसे पूछा—'जिस समय आपके तकियोंके नीचे स्लीपर ढूँढा जा रहा था, उस समय आपने किया क्या ?'

'मैं छतपर चढ़ गया।'

'माथा ठंडा करनेके लिये ?'

'नहीं, कूदकर प्राण देनेके लिये।'

'लेकिन प्राण ऐसा बेहया कि छतसे कूदनेपर भी नहीं निकला ?'

'नहीं, मैं कूदा ही नहीं।'

'क्यों ?'

'छत बहुत ऊँची थी !'

बिलवासीजी ने अब हम लोगोंकी ओर देखकर कहा—'सज्जनो। मैंने सारा भारतवर्ष देखा है—कटनीसे भटनीतक,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दमोहसे गमोहतक, जैसोरसे मैसोरतक, राँचीसे कराँचीतक, एटासे क्वेटातक—पर मैंने लाला घासीराम-सा स्वार्थी और लाला मल्लूमल-सा मूर्ख न देखा है और न देखनेकी आशा है।'

हमलोग चुप रहे। लाला मल्लूमलके मूर्ख होनेकी बात तो समझमें आ गयी, पर बिलवासीजीने घासीरामको स्वार्थी किस न्यायसे क़रार दिया—वह कोई न समझ सका।

घासीरामजीने दबी जबानसे पूछा—'पंडितजी ! आपने मुझे स्वार्थी क्यों कहा ?'

'आपकी बात ही आपको स्वार्थी प्रमाणित करती है। आपकी स्त्री आपको पेठा खिलाती है और पीठपर हाथ फेरती है। आप प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद देते हैं कि 'सदा सौभाग्यवती हो।' यानी आशीर्वादमें भी अपना ही स्वार्थ सिद्ध करते हैं। स्वयं अमर होनेके व्याजसे स्त्रीको सदा सौभाग्यवती रहनेका आशीर्वाद देना स्वार्थकी सीमा नहीं तो क्या है ?'

लाला घासीरामजी अवाक् रह गये। मित्र-मंडली हँस पड़ी। लाला मल्लूमलके दिलसे विषादकी काई कट चली थी। वह भी भी मुसकरा उठे।

लाला झाऊलालने कहा—'मेरे पड़ोसमें एक वकील साहब रहते हैं। वह कचहरी जाते समय अपनी स्त्रीको तालेमें बन्द कर जाते हैं।'

पं० निपटनारायण ने कहा—'इसके विपरीत मैं एक प्रोफ़ेसर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महोदयको जानता हूँ जिन्होंने अपनी नव-विवाहिता वधूको एक युवक मित्रके साथ हवा खानेके लिये मसूरी भेज दिया है।'

मुं० छेदीलाल ने कहा—'मेरे भतीजेने अपने कमरेमें एक नया कैलेण्डर लटकाया। उसपर किसी स्त्रीका चित्र बना था। उसकी पत्नीने देखा तो रूठकर पीहर चली गयी।'

पं० जीट बहादुर ने कहा—'अभी कलकी बात है कि मेरी धोबिन मेरे पास रोती हुई आयी और कहने लगी कि मेरा पति अब मुझे बिलकुल नहीं प्यार करता। मैंने पूछा कि तूने कैसे जाना कि वह तुझे अब नहीं प्यार करता? उसने उत्तर दिया कि इधर चार महीने हो गये उसने मुझे एक बार भी नहीं पीटा, पहिले हफ्तेमें दो बार पीटता था।'

'सज्जनो!' पं० बिलवासी मिश्रने कहा—'ये दृष्टान्त अत्यंत मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हैं। इनसे प्रकट होता है कि अपने दाम्पत्य जीवनके लिये यदि हम एक आदर्श निर्धारित कर सकें तो हमारा अनन्त कल्याण हो। महाकवि चच्चा ने यही किया था। उन्होंने अपनी स्त्रीको अपने रंगमें रँग लिया था। यही कारण था कि वे निर्धन होते हुए भी दुःखी नहीं थे।

एक बार उनकी स्त्रीने उनसे कुछ गहने माँगे। उनका यह हाल था कि भोजनको पूरा पड़ता ही नहीं, गहने कहाँसे लाते। दूसरा मनुष्य होता तो स्त्रीको चार घुड़की सुनाता: कोई वीर पुरुष होता तो चार डंडे रसीद करता। दूसरा कवि भी होता तो कहता कि 'पेट पटे पै पट भूषन जुड़ाइये।' पर कवि चच्चा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने दूसरी ही नीतिसे काम लिया। उन्होंने अपनी स्त्रीको ऐसा जवाब दिया कि फिर उसे गहनोंकी इच्छा ही न रह गयी। उन्होंने कहा—

बर विचार, बर आचरन, उर अनन्त अनुराग।
गोरी बोरी-प्रेम-रँग, भोरी भरी सुहाग॥
भोरी भरी सुहाग मधुरबैनी गुन-आकर।
पति कविकुल-सिरमौर 'चचा' निस-दिन को चाकर॥
विनय-सील-संकोच-कलित कमनीय कलेवर।
निधि ऐसी सब पाय कहा करिहौ लै जेवर?॥

कहिये, कैसी रही? इस उत्तरके बाद फिर कौन ऐसी स्त्री होगी, जो जेवरकी इच्छा प्रकट करेगी? इसी बातपर, यदि बुद्धिसे काम न लिया गया होता तो, कितना बड़ा झगड़ा खड़ा हो जाता! प्रेमकी पारस्परिकता बनाये रखनेके लिये कलहका अभाव नितान्त आवश्यक है। इस सत्यको कवि 'चच्चा' अपने दाम्पत्य जीवनके आरम्भमें ही पहचान चुके थे। पति-पत्नीमें आपसके अनबनका परिणाम कितना अवांछनीय होता है, उसीका दिग्दर्शन उन्होंने अपनी इन पंक्तियोंमें कराया है—

जोजन दूरि भयो रुचि भोजन,
सेजनको बिसरयो बिसरामा।
काटत दौरि लखे घर आंगन,
बागनमें दुख कंटक जामा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चैन रुचै न मचै न प्रमोद,
जंचै न 'चचा' कविता गुन-ग्रामा।
बाम सबै बिधि सों बिधना,
जब तें कछु बाम भई निज बामा॥

सज्जनो! कवि चचा ने इस सम्बन्धमें बहुत-कुछ कहा है और बड़े रोचक ढङ्गसे कहा है। इस विषयकी उनकी सूक्तियाँ बड़ी लोकप्रिय हो रही हैं। हाँ, एक बात विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। उनका ऐसा विश्वास था कि पुरुषोंकी आत्म-परायणता ही दाम्पत्य-जीवनको दुःखमय बना डालती है। इसी बातको वह अपनी शैलीमें यों कहते हैं—

आतप सीत सनेह सनी
सब गेह सम्हारत देह नसावै।
भोजन-भार सुथार सजाय
जिमाय हमैं कछु जूठन पावै॥
प्रेमको नेम कहा कहिये
अति रात गये नित गात दबावै।
एतो सबै नहिं एक फबै
कि जबै चरचा खरचाकी चलावै॥

स्त्रियोंके सम्बन्धमें कवि चचा के विचार अत्यन्त उन्नतिशील थे पर आजकलकी तरह वे पाश्चात्य सभ्यताके पीछे पागल नहीं हुए थे। वे स्त्रियोंका आदर चाहते थे, पर इतना नहीं कि उनके तलवे चाटे जायँ। वे स्त्रियोंको स्वतंत्र देखना चाहते थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर इतना नहीं कि स्वयं उनके गुलाम बन जायँ। वे स्त्रियोंको प्रसन्न रखना चाहते थे; पर औचित्य और विवेकका ख़ून करके नहीं। आदर्शवादी बुद्धुओंकी तरह वे उन्हें सरपर बिठा लेनेके पक्षपाती नहीं थे।

इसका कारण था। वे स्त्रियोंकी सत्तासे अपरिचित नहीं थे; उनकी शक्तिसे वे अनभिज्ञ नहीं थे। इसीसे वे उनसे सदा सचेत रहनेकी आवश्यकता समझते थे। हममेंसे बहुतेरे उनसे सहमत न हो सकेंगे पर तब भी उनके विचार सुनने, समझने और मनन करने योग्य हैं। वे कहते हैं—

या जग नर देखे सुधी, साधक सिद्ध सुजान।
सूर बीर ज्ञानी गुनी, बुद्धिमान बलवान॥
बुद्धिमान बलवान अपर नरवर देखे अस।
करतल-गत जेहिं मुक्ति सकल इन्द्री कीन्हें बस॥
किन्तु जगत सब छानि थके 'चच्चा' की किरिया।
नर अस देखे नाहि चरायो जिन्हें न तिरिया॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८

चवन्नीका चमत्कार

वे लपके हुए चौककी ओर चले जा रहे थे। उन्हें पँच-मेल-प्रकाशन समितिके मालिक लाला अमीरचन्दसे इसी समय मिलना था।

चौराहेतक पहुँचे थे कि सामनेसे श्री टुनमुनदास विशारद आते दिखायी पड़े। नमस्कार-प्रणामका सिलसिला शुरू भी न हो पाया था कि टुनमुनदासने कहा—'पण्डितजी ! आपके पास एक चवन्नी है ? हो तो दीजिये। मैं मकानसे आते समय लेना भूल गया।'

बिलवासीजी संकोचमें पड़ गये। संयोगसे उनके जेबमें एक खोटी चवन्नी थी भी। उन्होंने उसे निकाल कर टुनमुनदासके हाथपर रख दिया।

पर टुनमुनदास महा काइयाँ है। ताड़ गया कि चवन्नी खोटी है। झट बोल उठा—'पण्डितजी ! आप कौन ज्ञात हैं ?'

ज़रा प्रश्नपर ग़ौर कीजिये कि पंडितजी, आप कौन ज्ञात हैं। इसी तरह मेरे छोटे बच्चेने एक बार मुझसे पूछा था कि बाबूजी ! बारह बजे कै बजता है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलवासीजी कोई मुँहतोड़ उत्तर सोच ही रहे थे कि वह फिर बोला—'जान पड़ता है कि जैसे यह चवन्नी धातकी खोटी है वैसे ही आप भी जातके खोटे हैं।'

यह कहकर वह चलता हुआ। चवन्नी भी लेता गया।

पं० बिलवासी मिश्र क्रोधसे तिलमिला उठे। टुनमुनदासके प्रति जो भाव उनके हृदयमें इस समय उत्पन्न हुए वे सरासर हिंसात्मक थे।

वे उलटे पाँव लौट पड़े। पँचमेल-प्रकाशन समितिके अध्यक्ष लाला अमीरचन्दजीसे इस समय मिलना ठीक न होता—कहीं टुनमुनदासका गुस्सा वे उनके ऊपर उतारना शुरू कर देते तो अनर्थ हो जाता।

क्लबका समय हो गया था, मित्र-मण्डली उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होंने आते ही सारी घटना कह सुनायी।

लाला झाऊलालने कहा—'एक तो बिलवासीजीने चवन्नी दी अच्छी या खोटी—और ऊपरसे जातके खोटे बने।'

मुं० छेदीलाल दो बार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी मध्यमा परीक्षामें फ़ेल हो चुके थे। वे बोले—'अजी, दोष टुनमुनदास-का नहीं है; दोष उस 'विशारद' नामके मोरपङ्खका है जो साहित्य सम्मेलनकी परीक्षक समितिने उस कौएकी पूँछमें खोंस दिया है।'

चौधरी बतासरायजीकी लिखी दोनों पुस्तकें अभी अप्रका-शित पड़ी थीं। उन्होंने कहा—'बात यह है कि जबसे टुनमुन-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दासका 'प्रेमपँवाड़ा' नामक ग्रंथ प्रकाशित हो गया है तभीसे वह घमण्डमें भर कर बरसाती नाले-सा बह चला है।'

बिलवासीजी ऊपरसे शान्त थे पर हृदयमें उनके अब भी उद्वेगोंका अन्धड़ बह रहा था। टुनमुनदासकी बात उनके दिलमें रह-रह कर टीसकी तरह उठ रही थी। कलका छोकरा टुनमुन-दास उन्हें ज्ञातका खोटा कह कर सहीसलामत निकल गया! साहित्याचार्य, साहित्यानन्दसन्दोह, साहित्य-वन-विहङ्ग पं० बिलवासी मिश्रका इतना बड़ा अपमान!

बिलवासीजी अब चुप न रह सके। जीभको दाँतों तले कबतक दबाये रहते! हृदयमें भावोंकी भीड़ लग चली थी; उन्हें निकलनेका रास्ता देना आवश्यक हो गया। विचारोंको प्रकट करनेके लिये अवसर-कुअवसर नहीं देखा जाता; यही बड़े लोगोंकी नीति है। महा-मंत्री ग़ैरोंको गाली देना चाहते हैं तो किसी भोजभातके अवसरपर, या किसी संस्थाका उद्‌घाटन करते समय, दे डालते हैं। बिलवासीजीने भी यही किया। अपने बरसोंके साहित्यिक जीवनमें साहित्यसेवा और साहित्य-सेवियोंके सम्बन्धमें जो कटु अनुभव उन्होंने प्राप्त किये थे उन्हें व्यक्त करनेका अच्छा मौक़ा हाथ लगा। वे ले उड़े।

उन्होंने कहा—"सज्जनो! मुझे इसका खेद नहीं है कि टुनमुनदासने मुझे ज्ञातका खोटा कहा। खेदकी बात सच पूछिये तो यह है कि टुनमुनदास-सरीखे साहित्यिक गुण्डे हिन्दी-संसारमें अनेक हैं, और होते जा रहे हैं। नये लेखकोंकी जड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खोदना और पुरानोंकी खिल्ली उड़ाना—यही इनका व्यवसाय है। द्वेष इनका धर्म है और गाली इनकी भाषा है। डींग इनकी साँस है और षड्यन्त्र इनका जीवन है। न इन्हें लोककी लाज है, न परलोकका भय है। साहित्य-क्षेत्रमें पदार्पण करते ही वे बिल्लीकी तरह रास्ता काटते हैं। जिसके पीछे पड़ जाते हैं उसे ले डूबते हैं। इनसे वही बचता है जिसे वह स्वयं बचाये। महाकवि चच्चा के मित्र पं० पूरनदास उपनाम 'पूस' कविका नाम तो आप लोगोंने सुना ही होगा ?"

हममेंसे कोई भी इस कविके नामसे परिचित न था। पं० निपटनारायणने कहा—'कवि पूस तो बड़ा विचित्र-सा नाम है।'

बिलवासीजीने उत्तर दिया—'उनका पूरा नाम पूरनदास था जिसके आदि और अन्तके वर्णोंके मेलसे 'पूस' शब्द बनता है।'

'तब भी पूस नाम बड़ा विचित्र है।'

'बिल्कुल नहीं। संस्कृतमें माघ कवि हैं तो हिन्दीमें पूस कवि क्यों न हों ?'

इस तर्कने पं० निपटनारायणको निरुत्तर कर दिया। उन्हें चुप देखकर बिलवासीजीने फिर शुरू किया—"कवि पूसको कुछ साहित्यिक गुण्डोंने इतना सताया, इतना डहकाया कि घबराकर वे कवि चच्चा के पास सलाह लेने आये। उस समय दोनों कवियोंमें यों बातचीत हुई—

कवि पूस—

चामकी जीभ लगाम न मानत
भाखत हैं धिक भावत जो जी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाकवि चच्चा—

डंक सी बैन कहैं मति - रंक
निसंक बने परछिद्रके खोजी ॥

कवि पूस—

कौन इलाज, निलाज भये सब
'पूस' थके नित झारत गोजी।

महाकवि चच्चा—

एक उपाय 'चचा' को रुचै
कि चुपाय रहै इनकी यहि रोजी ॥

सज्जनों ! ज़रा सोचनेकी बात है कि हमारे यहाँ साहित्य-सेवियोंमें कितनी प्रतिहिंसा, कितनी अनुदारता, कितनी थुक्का-फजीहत और कितना कँगलटिरींपन है। साहित्य-सेवाका हमने एक बीहड़ वन बना लिया है, जहाँ लेखकोंके झुण्ड हिंस्र जन्तुओंकी तरह एक दूसरेकी लोथ गिरानेके लिये घात देखते रहते हैं।

मैं आजतक नहीं समझ सका कि लेखकोंमें एक दूसरेके प्रति इतनी चिढ़, इतनी कुढ़न क्यों है ? वे एक दूसरेको देख-कर घूरते-गुर्राते क्यों हैं ? क्या साहित्यसेवाका क्षेत्र इतना सङ्कीर्ण है कि लेखकगण बिना एक दूसरेके पैरका अँगूठा कुचले आगे नहीं बढ़ सकते ?

फिर लेखक तो लेखक, चाहे बड़ा हो या छोटा। बड़ा लेखक होगा, लिखता होगा और प्रकाशकोंको नख़रे दिखाता होगा। छोटा लेखक होगा, लिखता होगा और प्रकाशकोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नख़रे देखता होगा। आप यदि लेखक हो; तो आपको क्या लेना लादना है? चकल्लस तो हर तरहसे प्रकाशकोंका है। आप क्यों आपसमें काँटा बोते हो?

कवि चच्चा इन झगड़ोंसे दूर रहते थे, पर तब भी उनकी जान न बचने पायी। अनिच्छा होते हुए भी वे इस भँवरमें खिंच जाते थे। एक बारकी बात है कि वे अपनी झोली और सोंटा लिए हुए संध्या समय टहलने जा रहे थे। रास्तेमें ख़बर लगी कि अमुक स्थानमें आज इसी समय कवि-सम्मेलन हो रहा है। वे स्वभावसे काव्य लोलुप थे ही; कवि-सम्मेलनकी सूचना पाकर अपना सब कामकाज भूल गये और सीधे बताये हुए स्थान पर जा पहुँचे। वहाँ मित्रोंने आग्रह किया कि आप भी कुछ सुनाइये। इन्होंने क्षमा चाही और कहा कि मैं केवल आप लोगोंकी कविताका आनन्द लेने चला आया हूँ।

बात वहीं ख़तम हो जाती पर दुर्भाग्यवश वहाँ कवि चच्चा के कुछ विरोधी भी उपस्थित थे। उनकी बन आयी। उन्होंने सोचा कि इन्हे लज्जित करनेका अच्छा मौक़ा मिला है। उन लोगोंने इन्हें आड़े हाथ लेना शुरू किया। काव्य चर्चाके स्थानमें कवि चच्चा की हजो शुरू हो गयी। उनके ऊपर तुकबन्दियों-की बौछार होने लगी।

एकने कहा—

चच्चा गये बुढ़ाय रहे बुद्धू के बुद्धू।
बालक-से चुप साधि पियैं ज्यों मांका दुद्धू॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरेने कहा—

कविजनके दर्बार चचाकी छीछालेदर।
रूपा-से जे रहे बिके वे रांगाके दर॥

आखिर कहाँ तक? सहनशीलताकी भी एक हद होती है। हाड़माँसका आदमी कहाँ तक बर्दाश्त करता जाय। कवि चच्चा ने समझ लिया कि बिना कुछ सुने ये निकम्मे उनका पिण्ड न छोड़ेंगे। उन्होंने कहा—

कोकिलको कल गान सुनै जग
कौन गुनै निगुनी गँवरैया।
कातरता पर-श्री की हिये
उपजावत कोटिन नाम धरैया॥
देखि 'चचा' कवि सूर उदै
मुरझात भये कवि कूर तरैया।
ख्यातिको सागर मेरो महान
उलीचत ये उपहास परैया॥

कवि 'चच्चा' को इससे अधिक कहनेकी आवश्यकता न पड़ी। उनका विरोधी दल ठण्डा पड़ गया।

हिन्दी संसारमें साहित्यसेवाका वायुमण्डल ईर्षा और द्वेषके विषैले गैसोंके कारण बड़ा दूषित हो गया है। यही कारण है कि हमारे साहित्यका उद्यान अभी बहुत कुछ वीरान पड़ा हुआ है। हमारे यहाँ जितने साहित्यसेवी हैं उतनी साहित्यसेवा नहीं है। साहित्यसेवियोंके समुदायमें साहित्यसेवाकी गुरुता, महत्ता और पवित्रताको समझनेवाले दालमें नमककी तरह भी नहीं हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१०

बाबा-बिरदावली

महीनोंकी प्रतीक्षाके बाद आज 'कल्लोल' का जीवन-चरिताङ्क निकल गया। अच्छा निकला; पृष्ठ संख्या ३३३, चित्र-संख्या २२२, लेख संख्या १११, वज़न १ सेर ११ छटाँक।

खूब तारीफ हुई। 'मदिरा' के सम्पादक पं० अघोरनाथने, 'मदारी' के सम्पादक पं० नागनाथने, 'मंदार' के सम्पादक पं० दूधनाथने तथा अन्य अनेक विद्वानोंने इस विशेषांककी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वास्तवमें 'कल्लोल' का जीवन-चरितांक एक अच्छी चीज़ थी। इसमें हिन्दीके प्रायः सभी लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकोंकी स्वलिखित संक्षिप्त जीवनियाँ दी गयी थीं। हमारे पं० बिलवासी मिश्र यहाँ भी अपनी मौलिकतामें सबसे बीस रहे।

उनका जीवन-चरित्र सबसे छोटा पर सबसे अच्छा था। जिस जीवन-चरित्रके लिए दो फर्मा भी कम होता, वह दो पेजमें नहीं, दो कालममें नहीं, बल्कि दो लाइनमें—याने एक दोहेमें था। बिलवासीजीने लिखा था—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीतें गई न कामना जीते क्रोध न काम।
जीते जिमि जड़ जीव जग बिलवासी बदनाम ॥

इस जीवन-चरित्रको लोगोंने बहुत पसन्द किया। एक समालोचकने यहाँ तक लिखा है कि बिलवासीजीके बाद यही दोहा उनका ताजमहल होगा।

आज क्लबमें इसी जीवन-चरित्रकी चर्चा थी। मित्रोंको प्रशंसाके पुल बाँधते देख बिलवासीजीने बात फेरनेकी इच्छासे कहा—"सज्जनो! यह जानकर आप लोगोंको आश्चर्य होगा कि महाकवि चच्चाका जीवन-चरित्र इससे भी कम शब्दोंमें है। कुछ लोगोंके बहुत आग्रह करनेपर उन्होंने कहा था—जीवन नष्ट और चरित्र भ्रष्ट, यही मेरा जीवन-चरित्र है।

मैं इसके लिए कवि चच्चाकी प्रशंसा नहीं कर सकता। उन्होंने जीवन-चरित्र न लिखा न सही, पर अन्य कवियोंकी तरह अपना परिचय तो सम्यक् रूपसे दे गये होते। लेकिन उन्होंने यह भी न किया। परिणाम यह है कि आज उनके सम्बन्धमें अभिज्ञता प्राप्त करनेके लिये मुझे एँड़ी-चोटीका पसीना एक करना पड़ रहा है।

बघेलखण्डमें बेलापार नामकी एक रियासत है। वहाँके राजा साहब एक साहित्यानुरागी सज्जन थे। उन्होंने अपनी संरक्षतामें एक विराट कवि-सम्मेलन कराया था। वे चाहते थे कि इसी बहाने हिन्दीके कवि एक दूसरेसे परिचित हो जायँ। उस सम्मेलनका नाम ही उन्होंने परिचय-सम्मेलन रक्खा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसमें समस्यायें नहीं दी गयी थीं, कवियोंको केवल अपने परिचयमें कुछ कह कर बैठ जाना था।

इस सम्मेलनमें कवियोंकी अच्छी उपस्थिति हुई। किसीने अपनी सत्तर पुश्तका परिचय दिया, किसीने अपनेको आदि कविका उत्तराधिकारी बताया, किसीने अपनेको देवी सरस्वतीका इकलौता क़रार दिया। तात्पर्य यह कि कवियोंने डींगकी लेनेमें एक दूसरेको मात करनेकी कोई बात उठा न रक्खी।

कवि चच्चा भी यहाँ उपस्थित थे। उनका परिचय अपनी सादगीमें फ़र्द था। उन्होंने कहा—

हास सुधा बसुधा बरसावैं
बहाइ सुछन्दनकी पुरवैया।
सज्जनकी सेवकाई करैं
सुकवीजन सों सतसंग करैया॥
खास गुलाम गुनीजनके
गुनगाहकके गुनगान गवैया।
नाथके नाथ अनाथके नाथ
हैं मेरेहुँ नाथ सो नागनथैया॥

कवि 'चच्चा' आत्म-विज्ञापनसे इतना भागते थे कि इस परिचयमें उन्होंने अपना नामतक नहीं प्रकट किया। वे यदि आत्म-श्लाघामें काव्यरचना करते तो अपनी प्रतिभाके बलपर अन्य कवियोंसे कहीं आगे बढ़ जाते, पर उनकी स्वाभाविक सुरुचिने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन बातोंसे प्रकट होता है कि कवि 'चच्चा' बड़े उन्नत विचारके मनुष्य थे। ऐसे मनुष्यके आचार और विचारमें विषमताकी बू नहीं आ सकती। ढकोसला और ढोंगसे उसकी पटरी कभी नहीं बैठती। वह दूसरोंमें भी इन दोषोंको देखता है तो उनपर ख़ाक डालकर चुप नहीं बैठता।

यही हाल कवि चच्चा का था। हिन्दू-समाजकी कमज़ोरियोंपर पर्दा डालनेका प्रयत्न उन्होंने कभी किया ही नहीं। सच पूछिये तो पोल-प्रकाशनका ढोल ही उन्होंने अपने गलेमें डाल लिया था।

एक गोरक्षाका ही प्रश्न लीजिये। हमारे समाजमें गोरक्षाका वास्तविक रूप क्या है? गाय अगर दूध देना बन्द कर दे तो उसे किसी ब्राह्मणको दान कर दीजिये; यह जानते हुए कि वह दूसरे ही दिन उसे क़साईके हाथ बेच आयेगा। यही हमारी संसार-प्रसिद्ध गोभक्तिका सच्चा स्वरूप है। कवि चच्चा कहते हैं—

गोद्विजकी सेवा अति मानिये पुनीत आप,
गोधन सों प्रेम सदा गोरस अघाइये।
करिए गोदान भूरि, लहिए गोलोकवास,
भारी भवसागरको गोपदी बनाइये॥
गोरोचन भाल पै सुगेह सोधि गोमयसों
धरिये गोग्रास बाद आप भोग पाइये।
गोमुखी सम्हारिये गोहारिये गोबिन्दजूको
बूचर बुलाय बूढ़ी गाय बेच आइये॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोरक्षाकी तरह साधुसेवाको भी हमारे यहाँ ऊँचा पीढ़ा दिया गया है, जो सर्वथा उचित है। खेद केवल इस बातका है कि साधु कहे जानेवालोंकी संख्या बेतरह बढ़ गयी है और उनमें सौ पीछे निन्नानवे धूर्त, लम्पट और कुमार्ग-गामी हैं। भिक्षा माँगना उनका अधिकार हो गया है। उन्हें भिक्षा देना आपका कर्तव्य हो गया है। इस समय असंख्य 'साधुओं' के भरण-पोषणका भार इस गरीब देशको उठाना पड़ रहा है।

यह भार भी हम वहन करनेको तैयार हैं, यदि इनके द्वारा देशका कुछ हित-साधन हो। इन्हें न घर-बारसे मतलब, न बीबी-बच्चोंकी चिन्ता। ऐसा जन-समूह यदि देश-सेवाके कार्य्य-में संघटित किया जा सके तो स्वयंसेवकोंके अक्षय स्रोतका उद्गमस्थान बन सकता है। हमारे नेताओंको इस ओर ध्यान देना चाहिये।

काशीमें सुमिरन बाबा नामके एक प्रसिद्ध साधु रहा करते थे। इनके शिष्य और शिष्याओंकी गणना सैकड़ोंमें की जाती थी। लोग इन्हें पहुँचे हुए महात्मा समझते थे। यह केवल कुछ इने-गिने लोग जानते थे कि बाबाजी एक नम्बरके विषयी और मद्यपी हैं। एक बार कवि चच्चा को भी इनका दर्शन मिला था।

पौषका महीना था। रात नौ बजनेका समय था। जाड़ा कहता था कि मैं ही रहूँगा। कवि चच्चा आगके सामने बैठे हुए किसी गम्भीर विषय पर विचार कर रहे थे। इसी समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसीने बाहरसे दरवाजा खटखटाया। उन्होंने बाहर निकल कर देखा कि एक मोटा-तगड़ा आदमी कम्बल ओढ़े, जटा बढ़ाये, हाथमें लम्बा चिमटा लिए खड़ा है। कवि चच्चा ने पूछा क्या है ?

उसने कहा—'मेरा नाम है टहलराम। मुझे सुमिरन बाबाने आपके पास भेजा है। आप इस समय क्या कर रहे थे ?'

'मैं सोच रहा था कि हमारे काव्यशास्त्रमें जो नायिकाभेद का प्रकरण है उसमें अब कुछ समयोचित संशोधन और परिवर्धन होना चाहिये।'

'इस विषयपर कल विचार करियेगा। आज आपको सुमिरन बाबाने इसी समय बुलाया है। अत्यन्त आवश्यक कार्य्य है।'

जाड़ेके मौसिममें रात दस बजे किसी भले आदमीको बुला भेजना कवि चच्चा को कुछ जँचा नहीं। लेकिन सुमिरन बाबा काफ़ी प्रभावशाली व्यक्ति थे, उनकी आज्ञाकी अवहेलना भी उचित नहीं थी। यह सब सोच कर कवि चच्चा टहलरामके साथ चल पड़े।

सुमिरन बाबाका स्थान बहुत दूर नहीं था। वे भीतरके एक कमरेमें दुशाला ओढ़े हुए व्याघ्र-चर्म्मपर बैठे थे। कमरेमें और कोई न था। कवि चच्चा को उन्होंने बड़े आदरसे अपने पास बैठा कर कहा—'पंडितजी! क्षमा कीजियेगा, आपको इस समय जाड़े-पालेमें कष्ट दिया। गाँजेकी चिलम तैयार है, दम लगाइयेगा ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि चच्चा ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज! मैं गाँजा नहीं पीता। सुमिरन बाबाको कवि 'चच्चा' की इस अपूर्णतापर आश्चर्य्य हुआ। उन्होंने टहलरामको पुकार कर कहा—'अरे ओ टहलराम! पंडितजी गाँजा नहीं पीते। उनके लिए पान सुरती ले आ।'

कवि चच्चा ने कहा—'महाराज! मैं पान तो खा लूँगा पर मैं सुरती नहीं खाता।'

सुमिरन बाबाके आश्चर्यका अब कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने कहा—'आप सुरती नहीं खाते, गाँजा नहीं पीते, तो कैसे जीते हैं?'

कवि चच्चा इस प्रश्नका कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके। सुमिरन बाबाने टहलरामसे कहा—'बेटा टहलू! तुझे सुरतीकी तारीफमें एक कवित्त याद है, जरा पंडितजीको सुना तो दे।'

टहलरामने 'जो आज्ञा' कहकर यह कवित्त सुनाया—

नाकमें सुबासको सनेसो कहै नस्य बनि
सुखमें सुस्वादु पीक पान संग ढुरती।
आलस जम्हाई निद्रा करत अकाज तिन्है
तुरत सँहारि सरसावै हिय फुरती॥
सहज संचारै भाईचारा चार भाइनमें
राजाको गिलौरी रङ्क चूनै संग जुरती।
कहत सिरात नाहिं गुनन तिहारे
सौ सुर-ती सी प्यारी मोहिं सु-रती भर सुरती॥

सुमिरन बाबाके पास एक चाँदीका गिलास रक्खा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने टहलरामसे उसे भर देनेका इशारा किया। वह कवि चच्चा की ओर देखकर झिझका। सुमिरन बाबा समझ गये। उन्होंने बिगड़कर कहा—'अबे, डरता क्या है? ये तो अपने आदमी हैं। इनसे क्या संकोच!'

यह आश्वासन पाकर टहलराम उठा और एक बोतल लाकर उसने सुमिरन बाबाके सामने रख दिया। उन्होंने कवि चच्चा से पूछा—'कहिये पण्डितजी! आप भी लीजियेगा?'

कवि 'चच्चा' यह हाल देखकर सन्न रह गये। उन्हें चुप देखकर बाबाजीने कहा—'ये ऐसे न पियेंगे। श्यामा और शान्ता-को बुला लो। वे आग्रह करेंगी तो अवश्य पी लेंगे।'

श्यामा और शान्ता कौन? कवि चच्चाने जिज्ञासाकी दृष्टिसे टहलरामकी ओर देखा। उसने उनके कानमें कहा कि श्यामा और शान्ता दो चेलिनें हैं जो रात्रिमें बाबाजीकी 'सेवा' करती हैं।

यह सुनकर कवि चच्चा की घबराहट और भी बढ़ गयी। उन्होंने झट कहा—'नहीं मान्यवर! मुझे क्षमा कीजियें, मैं शराब पीता ही नहीं।'

सुमिरन बाबा हँसकर बोले—'पता नहीं आप मनुष्य हैं या पशु। ज़रा सोचियें कि स्वर्गमें अगर उर्वशीने आपको सोम-रस दिया और आपने लेनेसे इनकार किया तो वह आपको कितना बड़ा उल्लू समझेगी।'

कवि चच्चा की महा पतित आत्मा इस सम्भावित दुष्परि-णामकी कल्पनासे व्यग्र नहीं हुई। वे अब जानेकी सोच रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने कहा—'महाराज ! आप इन बातोंको जाने दीजिये और बताइये कि आपने मुझे इस समय क्यों याद किया ?'

'हाँ ठीक है, वह बात तो रह ही गयी। क्या यह सच है कि आप कवि हैं, और दरिद्र भी ?'

'मैं दरिद्र अवश्य हूँ पर कवि हूँ या नहीं इसका निर्णय आनेवाली पीढ़ियाँ करेंगी।'

'ख़ैर, अगर आप कवि हैं तो मैं आपकी दरिद्रता दूर कर सकता हूँ। आप मेरे लिये एक काव्य-ग्रंथ लिखें।'

'ग्रंथका विषय क्या होगा ?'

'मेरी प्रशंसा। उसके प्रकाशन और प्रचारका प्रबन्ध मैं कर लूँगा। आपको ग्रंथ लिखकर मुझे दे देना होगा।'

'प्रशंसामें किन-किन बातोंका उल्लेख आवश्यक समझा जायगा ?'

इसका उत्तर बाबाजीका इशारा पाकर टहलरामने दिया—'आपको लिखना होगा कि बाबाजी परमहंस हैं, पतित-पावन हैं, मुमुक्षुओंके एकमात्र अवलम्ब हैं, परमार्थ-पारावारमें पड़े हुए प्राणियोंके कर्णधार हैं, उनकी सेवा जो तन-मन-धनसे करता है वह राज-दर्बारमें आदर पाता है, शत्रुपर विजय पाता है, पुत्रका मुँह देखता है, रोगसे रहित होता है, पापसे मुक्त होता है, लोकमें यश पाता है, मुक़दमोंमें फ़तह पाता है, इत्यादि। संक्षेपमें पुस्तक ऐसी हो कि उसे पढ़कर महाराजके शिष्योंकी संख्या दसगुनी हो जाय। पुस्तकका नाम होगा बाबा-बिरदावली।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह सुनकर कवि 'चच्चा' का हृदय क्रोध और घृणासे भर गया। इस गर्हित कार्य्यके लिये बाबाजीको दूसरा कोई नहीं मिला! अपने मनोगत भावोंको दबाते हुए उन्होंने कहा—'अच्छा, कल मैं बतौर नमूनेके कुछ लिखकर आपके पास भेजूँगा। आपको पसंद आया तो पुस्तकमें हाथ लगाऊँगा।'

तीसरे दिन श्रद्धेय श्री सुमिरन बाबाको डाकसे एक कार्ड मिला। उसमें लिखा था—

बाबा-विरदावली नामक प्रस्तावित
पुस्तकके एक छंदका
नमूना

साधु भये जग-बन्धन तोरि
बटोरि रहे तपकी सत पूँजी।
लोग कहैं सब भोग तजे
अब जोग करैं चरचा नहिं दूजी॥
पाल पखाल सों पेट फुलाय
ढकेलि रहे घिव शक्कर सूजी।
चेलिनको रसकेलिनमें
उपदेश निरंतर देत गुरूजी॥

यह छंद सुमिरन बाबाको पसन्द आया या नहीं, इसका मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है। पर यह निश्चय-रूपेण मालूम है कि इस पत्रका उत्तर कवि चच्चाको नहीं मिला, और बाबा-बिरदावली नामक पुस्तक नहीं लिखी गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११

एक अनुपान

'सीधी-सादी भाषामें—सहज-सरल भावसे—पतेकी बात कहना, यही कवि 'चच्चा' की विशेषता थी। निशाना अचूक पर बजाय घावके गुदगुदी पैदा करनेवाला, बातें नित्यके जीवनकी पर नवीनतामें पगी हुईं, भावोंका अविकल बहाव पर गहराई लिये हुए—ये खूबियाँ कवि चच्चा के ही बाँटे पड़ी थीं।'

इतना कह कर घिलवासीजीने अपने चारो ओर देखा। यह देखकर वे ख़ुश हुए कि लाला मल्लूमलकी आँखें खुली थीं और लाला घासीरामका मुँह बन्द था।

उन्होंने फिर कहा—'आप कोई भी विषय लीजिये मैं साबित कर दूँगा कि महाकवि 'चच्चा' ने उस विषय पर अपनी प्रतिभाका प्रकाश डाला है!'

कवि चच्चा को इस कसौटीपर कसना हमलोग चाहते ज़रूर थे, पर संयोगसे उस समय कोई भी विषय नहीं सूझ पड़ा। यों तो हज़ारों विषय हृदयमें उठते रहते हैं पर ज़रूरत पड़नेपर आज एक भी ज़बानपर न आया।

ऐसा अकसर होता है। यह कोई नई नयी बात नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आजसे कुछ दिन पहले मैं अगर एक कुत्तेके लिये कोई नाम तजवीज़ कर सकता तो आज किसी चाय-गोदामका मनेजर होता।

उस समय मैं नौकरीकी तलाशमें था। ख़बर लगी कि एक चायके साहबको एक क्लर्ककी आवश्यकता है। मैंने अर्ज़ी भेजी और मुलाकातके लिये बुलाया गया। जिस समय मैं साहबसे बातें कर रहा था उसी समय उनका अर्दली एक ग्रेहाउण्डके बच्चेको लेकर वहाँ आया। साहबने कुत्तेको पसन्द किया और कहा मैं इसे पालूँगा।

मेरी ओर देख कर साहबने पूछा—'तुम इसके लिये कोई नाम suggest कर सकते हो ?'

यह क्या मुशकिल काम था! टामी, टीपू, टाइगर, टेकी, टीमल, टेल्हू आदि पचासों नाम थे जो मैं suggest कर सकता था, पर क्या कहूँ! उस समय मुझे एक भी न याद आया। मैं चुप रहा, मानों जन्मका गूँगा था।

साहब ख़फ़ा होकर बोले—'तुम नालायक़ हो। तुम मेरे कुत्तेके लिये एक नाम नहीं suggest कर सकते तो और क्या काम करोगे? क्या मैं अपने कुत्तोंके नामकरणके लिये दूसरा क्लर्क रक्खूँगा?'

यह बीती मैंने अब बिसार दी है, पर कभी स्मरण हो आता है तो जान पड़ता है कि दिलको कोई मुट्ठीमें पकड़ कर मसल रहा है। मैं कितना बड़ा बेवकूफ़ था। और नहीं, अगर केवल इतना कह देता कि साहब! स्वयं मेरा नाम क्या बुरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, यही कुत्तेका नाम रख दीजिये—तो भी साहब खुश हो जाते। इससे उन्हें एक प्रकारकी सुविधा ही होती। एक नामके पुकारनेसे दो जीव आ खड़े होते। एक हाथ जोड़ता, दूसरा दुम हिलाता। एक कहता Yes Sir, दूसरा कहता भों-भों।

ख़ैर, बिलवासीजीकी चुनौती किसीने स्वीकार नहीं की। किसीसे न हुआ कि कोई बढ़िया विषय उपस्थित करके उनके कथनके सत्यासत्यका निर्णय कर ले।

थोड़ी देर हम लोगोंकी प्रतीक्षा करके बिलवासीजीने कहा—'आप लोग ख़ामोश हैं। इसलिए मैं ही उदाहरणके लिए एक विषय उपस्थित करता हूँ। दुष्टोंका विषय ले लीजिये। उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, यह प्रश्न कभी ठीकसे हल नहीं हुआ। कोई कहता है कि उन्हें क्षमा करते जाइये और उनके साथ उपकार करते रहिये। कोई कहता है कि उनका रास्ता बचाइये और उनसे भागते फिरिये। फिर ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि उन्हें दे मारिये और ठीक कर दीजिये।

इन बातोंसे जान पड़ता है कि दुष्टोंके साथ उचित व्यवहारका प्रश्न विवादग्रस्त है। कवि चच्चाने इस सम्बन्धमें अपनी राय न प्रकट की होती तो मुझे आश्चर्य होता। उनका कहना है कि—

रामकी रीझ सों रीझतु है जग
औरकी खीझ गुनौ न भयावह।
योग यथा निबहौ सबसों मिलि
बालक वृद्ध युवा नर मादह॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखि दिखाइ जु कोऊ चलै
चट चाँपि चपेटि करौ चित ताकँह ।
देत रहौ कविराज 'चचा'
नित नीचनको अनुपान उपानह ॥

यहाँ हमारे 'कविराज' ने केवल अनुपान बताया है, वास्तविक औषधि कैसी होगी यह उसने आपकी कल्पनापर छोड़ा है। दूसरा कोई होता तो इस सम्बन्धमें वह मसीहा और महात्माको घसीट लाता, पर कवि चच्चा सीधी सलाहको सीधे रास्तेसे दे निकलते थे। इनकी बातोंके आगे लोग बड़ोंकी बातें भी टाल जाते थे। इनके अनुसार—

वेद पुरान कहैं न कहैं
भुज ठोंकि कहैं हम लाखमें एकी।
बात भली अनुभूत निरंतर
अन्त भले की अनन्त भले की ॥
बाँधिके गाँठ धरौ त लला
यह बात चचा की है बात बड़े की।
मंत्र सबीज बिजै को यही
कि बदी बदसों—तब नेकसों नेकी ॥

बिलवासीजीने देखा कि लोग उनकी बातोंसे 'अतिशयता' को प्राप्त हो रहे हैं—मल्लूमलजी कुरता खसका कर अपना पेट खुजला रहे हैं, और घासीरामजी टोपी उतार कर अपना सर।

'महाकवि चच्चाकी रचनाओंका मूल्य साहित्यिक होनेके अति-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रिक्त ऐतिहासिक भी है।'—बिलवासीजीने कहा—'भारतीय जन-समाजका जो चित्र उन्होंने कई मौक़ों पर खींचा है वह आगे चल कर इतिहासके विद्यार्थियोंके लिए प्रामाणिक माना जायगा। केवल कुछ पहलेकी बात है कि हम लोग अँगरेज़ोंकी सूरतसे डरते थे। बड़े-बड़े लखपती रेलके पहले और दूसरे डब्बोंमें अँग-रेजोंको बैठे देख उसमें घुसनेका साहस नहीं करते थे।

कवि चच्चाने एक गाँवमें किसी गोरेको जाते कभी देखा था। गाँववालोंमें उसे देखकर हड़कम्प फैल गया। लोग भाग चले। कवि चच्चासे ही इस घटनाका वर्णन सुनिये—

पंडित पुजारी भारी रहे जे त्रिपुण्डधारी
सके नहिं सम्हारी झारी संख और घण्टा।
सतुआ औ पिसान फेंकि भकुआ किसान भागे
बालक बिसारे सारे खेल कूद टण्टा॥
भयसों भभरि भागि भीतर 'चचा' जू भये
नसाके करैया भूले चिलम और भण्टा।
अजगर है बाघ है कि कुञ्जर उन्मत्त कोऊ
दैत है कि दैया देखो एक है किरण्टा॥

जुग-जुग जियें हमारे महात्माजी; उन्होंने असहयोग आन्दो-लनकी ऐसी ओझाई चलाई कि इस प्रकारके भयका भूत हमारे दिलसे अब भाग गया। शुरूमें हमारे देशके कुछ गिरे हुए लोगोंने अँगरेजी वेषभूषाको इसीलिए ग्रहण किया था कि अपने भाइयों-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर आसानीसे धाक जमा सकें। पर अँगरेजोंके भयके साथ-साथ अँगरेजी वेषभूषाका आदर भी जाता रहा।

कवि चच्चा की कवितामें आपने एक ख़ास बात यह देखी होगी कि वे अधिकतर ऐसे शब्दोंका प्रयोग पसन्द करते थे जिनसे, नित्यकी बोलचालमें व्यवहृत होनेके कारण, हमारा घरू सम्बन्ध हो गया है। स्यात् यही कारण है कि उनकी उक्तियाँ हमारे हृदयमें घर कर लेती हैं।

हमारी बोलचालकी भाषामें कुछ शब्द ऐसे आ गये हैं, जिनका प्रयोग हमारे लिये केवल आवश्यक नहीं बल्कि अनिवार्य्य हो गया है। 'साला' इसी प्रकारका एक शब्द है। इस शब्दका वहिष्कार कर दीजिये तो ज़ोरदार भाषाका अन्त हो जाता है। इस शब्दकी सत्ता आज्ञामें, आदेशमें, वाद-विवादमें, यहाँतक कि लाड़-प्यारमें भी देखी जाती है। यह शब्द न होता तो आप घरमें नौकरोंको या स्टेशनपर कुलियोंको कैसे पुकारते? ज़मीन्दार अपने असामियोंको कैसे पुकारता? जायदादका झगड़ा पड़नेपर भाई-भाई एक दूसरेको कैसे पुकारते?

जब मैंने देखा कि महाकवि 'चच्चा' की भाषा सभ्योचित और ज़ोरदार होते हुए भी बोलचाल की है तभी मुझे विश्वास हो गया कि उन्होंने किसी-न-किसी सम्बन्धमें साला शब्दका प्रयोग अवश्य किया होगा। मुझे आपको सूचित करते हर्ष हो रहा है कि मेरी धारणा बिलकुल ठीक निकली। इसे मैं एक ऐतिहासिक तथ्यके रूपमें दे रहा हूँ; गो अब यह बातें बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोप-सी हो चुकी है। कवि चच्चा की एक कुण्डलिया इस प्रकार है—

जी जानै जैसी जरै उर अन्तर यह आग।
भारत-सी या भूमिको कैसो भयो अभाग॥
कैसो भयो अभाग काग भोगैं इन्द्रासन।
हंसन ठिकरा चुनैं धुनै सिर कांपै आसन॥
बल बिक्रम व्यापार बुद्धि बैभव सब छीजा।
सार भये हम आज रहे हम जिनके जीजा॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२

भविष्यकी आशा

'क्यों बिलवासीजी ! आपने कुछ दिनोंतक स्कूल-मास्टरी भी तो की है ?'—मुं॰ छेदीलालने पूछा ।

'अजी, एक ज़माना हुआ । मेरा पढ़ाया हुआ सेठ चिरौंजीलालका लड़का तबसे बी. ए. पास हुआ, विलायत गया, मेम ले आया और अब अपने बापको old fool पुकारता है ।'

'देशको ऐसे ही स्पष्टवादी नवयुवकोंकी आवश्यकता है ।'

'आपने अपने नवयुवकोंके सम्बन्धमें कभी विचार किया है ?'

'मैं इतना जानता हूँ कि वे ही हमारे भविष्यकी आशा हैं ।'

'यदि वे हमारे भविष्यकी आशा हैं तो हमारी आशाका भविष्य क्या है—यह ईश्वर जाने । नवयुवकोंमेंसे बहुतेरे आपको ऐसे मिलेंगे जिनमें न जीवन है न जीवट, न स्वाभिमान है न स्वदेशाभिमान । है क्या—धँसी हुई आँखें, पीला चेहरा, कंकाल-सा शरीर; स्वभावमें अविनय, आचारमें अनीति, विचारमें उच्छृङ्खलता; और अपने देश, अपनी भाषा, अपनी संस्कृतिके प्रति घोर उदासीनता । बिना दीपकके दीवट देखने हों तो इन्हें देख लीजिये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे मित्र लाला फ़कीरचन्दने झाँसीसे लिखा कि मेरा छोटा भाई आपके मकानके पास अमुक बोर्डिङ्गमें रहता है, कभी-कभी उसका हाल-चाल ले लिया करिये कि पढ़ाई-लिखाई ठीक चल रही है या नहीं। आप जानते ही हैं मेरा स्वभाव कितना औढर है, मैंने सोचा क्या हर्ज है, कभी-कभी इस लड़केकी खोज-खबर ले लिया करूँगा। समय पाकर मैं दूसरे ही दिन इस कर्त्तव्यको पूरा करने घरसे चला।

मैं बोर्डिंगमें पहुँचा। उस समय उसका कमरा भीतरसे बन्द था। मैंने दरवाज़ा थपथपाया। आवाज़ आयी 'वेटो'।

मैंने समझा मुझसे बैठनेके लिये कहा जा रहा है। मैंने बाहर हीसे पूछा—कहाँ बैठूँ ? आवाज़ आयी—बैठो नहीं, वेटो, वेटो।

अब मैं समझा कि वेटो माने wait करो, याने ठहरो। मैं ठहर गया।

लगभग दस मिनटके वेटोके बाद दरवाज़ा खुला। दरवाज़ा खोलनेवाला व्यक्ति—क्या कहा जाय! अवस्था १८-२०वर्षकी रही होगी। गर्दन सुराहीदार, कमर कमानीदार, बाल चिकने और आबदार, मानों किसी पेटेण्ट गोंदसे चपकाये गये हों। माँग जैसे कसौटीपर कंचनकी लीक.........'

'या जैसे कोयलेके अड़ारमें पगडंडी'—लाला मल्लूमलने कहा।

'मल्लूमलजी ! आप कृपा करके बीचमें मत बोलिये। ...मैंने नमस्कार किया और कहा कि मेरा नाम बिलवासी है।'

उसने जवाब दिया—'Good-morning Mr. Bill Boss !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन आप हैं कौन ? Your face is rather funny.'

'मेरा नाम बिलवासी है, Bill Boss नहीं; और मेरा चेहरा अगर Funny है तो आपकी बलासे। मैं जानना चाहता हूँ कि आपकी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है।'

'अगर आप मुझसे बेहूदे सवाल करेंगे तो I shall order my servant to deposit you in the dust-bin.'

'नहीं महाशय ! आप बुरा न मानें। मैं वास्तवमें यही जाननेके लिए आया हूँ कि आपकी तबीयत पढ़ने-लिखनेमें लग रही है या नहीं।'

'Oh I see ! जान पड़ता है आप एक Suitable match की तलाशमें हैं। इसीलिए आप मेरी पढ़ाई और चाल-चलनका पता लगा रहे हैं। लेकिन पहले मेरे एक सवालका जवाब दे दीजिये—Does the girl play tennis ?'

मैं नाहक यहाँ आया। अब मैं पछता रहा था। खेद है फ़कीरचन्दजीको अपने भाईके पास भेजनेके लिए मैं ही मिला। मैं लौटते ही उन्हें लिख दूँगा कि 'यह अधिकार सौंपिये औरहिं भीख भली मैं जानी।' मैंने निश्चय कर लिया कि अब किसीके भाई-भतीजेके फेरमें न पड़ूँगा !

मैं तपाकके साथ चुप रह गया, धाकके साथ उठ खड़ा हुआ और दबदबेके साथ वहाँसे रवाना हुआ। कुछ दूर आया था कि उसने दूसरा प्रश्न दाग़ दिया। इस उत्तरको मेरे साथ लेता आया हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्या उसने लिखकर उत्तर दिया था ?'—मुं० छेदीलालने पूछा।

'नहीं, उतार कर। उसने अपनी चट्टी मेरे ऊपर फेंकी जिसे मैं उठाता आया।'

'लेकिन था बेवकूफ। कम-से-कम फुल-बूट तो फेंकता'—लाला घासीरामने कहा।

पूर्व इसके कि लाला घासीरामकी बातपर कोई हँसे बिलबासीजीने झट दूसरी चर्चा छेड़ दी। उन्होंने कहा—सज्जनो! अगर आप नवयुवकोंके बीचमें कुछ दिन रहकर उनके कार्य्यकलाप और चित्तवृत्तियोंका अध्ययन करें तो आप अपनेको मेरे विचारों से सहमत पायेंगे। आपको सुनकर आश्चर्य्य होगा कि महाकवि चच्चा मेरे विचारोंसे सहमत थे। उन्होंने किसी नवयुवककी आकांक्षाओंका विश्लेषण इस प्रकार किया है—

काहू धनीकी मिलै दुहिता
जेहिं ब्याहि भरौं घर द्रव्य दहेजी।
तापै 'चचा' मरि जायँ निसन्तति
सेंत सुसम्पति मोहिं सहेजी॥
जीवनमें न समाजको बन्धन
धन्धनमें सुख-सेज गहेजी।
एतो मिलै पुनि हौं न रहौं
मदिरा गनिकागन सों परहेजी॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२

सवा तीन मन

'क्यों महाशय ! आपको एकसे दसतककी गिनती पूरी याद है ?'—यह प्रश्न पं० बिलवासी मिश्रने लाला मल्लूमलसे किया।

लाला मल्लूमल उस समय पेटके बल लेटे हुए कुछ गा रहे थे। क्या गा रहे थे—इस विषयपर लाला घासीराम और लाला झाऊलालमें मतभेद है। लाला घासीरामका कहना है कि मल्लूमलजी गा रहे थे—

सड़कपर किसने गड़ाई लालटेम।
कहाँसे आये मुंशी दरोगा कहाँसे आई बड़ी मेम॥

और लाला झाऊलालका कहना है कि मल्लूमलजी गा रहे थे—

कहीं देखा है तुमने मेरा सनम ?
मेरे सनमकी दो ही निशानी, छोटा सा क़द और गोरा बदन॥

ख़ैर, इतना तय है कि लाला मल्लूमल कुछ गा रहे थे, और इतनी एकाग्रतासे गा रहे थे कि बिलवासीजीकी बात उनके श्रवण-पथतक पहुँच भी न पायी। बिलवासीजीने फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूछा—'क्यों महाशय, आपको एकसे दसतक गिनती पूरी याद है ?'

इस बार बिलवासीजीका प्रश्न उनके कर्ण-रन्ध्रोंमें प्रवेश कर गया और वे उठ बैठे। ऐसा जान पड़ा कि इस प्रश्नने उनके अन्तरतममें किसी प्रकारकी अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। मुझे आश्चर्य्य हुआ। किसीकी प्रकृतिको थहाना वास्तवमें बड़ा दुष्कर है। यह कौन जानता था कि लाला मल्लूमल भी किसी बात-पर नाराज़ हो सकते हैं !

यों तो लाला मल्लूमलके लिये उठकर बैठना भी किसी जिमनास्टिकसे कम नहीं है पर आज उन्होंने जिस स्फूर्तिका परिचय दिया वह सर्वथा सराहनीय है। वे एक ही साँसमें उठे और बिलवासीजीके पास जाकर खड़े भी हो गये।

बिलवासीजी अभीतक स्थितिको नहीं समझ पाये थे। उनका कहना है कि जिस समय उन्होंने लाला मल्लूमलको अपनी ओर आते देखा उन्होंने समझा कि वे उनसे गले मिलने आ रहे हैं; पर शीघ्र ही उन्हें अपनी भूलका ज्ञान हो गया। लाला मल्लूमलने उनसे कहा—'पण्डितजी! इस तरहके प्रश्न करके आप मेरा अपमान करते हैं; और मेरी आदत है कि जो मेरा अपमान करता है उसे मैं दण्ड देता हूँ।'

बिलवासीजी अब चौकन्ने हो गये थे पर चुप थे। लाला मल्लूमलने पूछा—'आप जानते हैं मेरा वज़न क्या है ?'

बिलवासीजी फिर भी चुप रहे। लाला मल्लूमलने स्वयं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने प्रश्नका उत्तर देते हुए कहा—'मैं सवा तीन मनसे कुछ अधिक हूँ, और जिसको मैं दण्ड देना चाहता हूँ उसके ऊपर लड़खड़ा कर गिर पड़ता हूँ।'

यह कहकर लाला मल्लूमलने बिलवासीजीके पास ही लड़खड़ाना शुरू किया। उस समयका चित्र अभीतक हम लोगोंके स्मृति-पटपर यथावत् खिंचा हुआ है। कौन जानता था कि बिलवासीजी ऐसे निरे साहित्यकमें जीवन और जागृतिका अकूत भण्डार भरा पड़ा है। बकसमें बन्द स्प्रिंगदार खिलौना ढक्कन खोलनेपर जिस तेज़ीसे बाहर निकल पड़ता है उसकी दसगुनी तेज़ीके साथ बिलवासीजी अपनी कुर्सीके बाहर निकल पड़े। दूसरे क्षण हम लोगोंने उन्हें लाला मल्लूमलसे कई गज़के फ़ासलेपर खड़ा पाया। वे वहीं खड़े-खड़े कह रहे थे—'लाला मल्लूमलजी! यह आप क्या कर रहे हैं? आपको लड़खड़ाना है तो किसी निर्जन स्थानमें जाकर लड़खड़ाइये। आप व्यर्थ नाराज़ हो रहे हैं।'

लाला मल्लूमल लड़खड़ाते हुए उनकी ओर बढ़े और बोले—'मैं गिन कर दस बार आपके ऊपर गिरूँगा जिसमें आप जान जायँ कि मुझे दसतक गिनती याद है।'

बिलवासीजीने पीछे हटते हुए कहा—'नहीं, माफ़ कीजिये, मुझे कवि गंगकी मौत नहीं मरना है। आप छोटीसी बातको इतना तूल दे रहे हैं। मेरा आशय केवल यह था कि अगर संयोगवश आपको दसतककी गिनती भूल गयी हो तो महा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि चच्चाकी एक कविता आपको सुनाऊँ जिसे याद कर लेनेसे दसतक गिनती स्वयमेव याद हो जाती है।'

इन्हीं अवसरोंपर बिलवासीजीकी बुद्धिका लोहा मान लेना पड़ता है। उन्होंने जब देखा कि मल्लूमल उनकी ओर बढ़ते ही चले आ रहे हैं तब उन्होंने कवि 'चच्चा' के नामका टोना चलाया। इस नामका प्रभाव लाला मल्लूमल ऐसे सवा तीन मनके मिट्टीके दूहेपर भी पड़े बिना नहीं रहा। उन्होंने अपना लड़खड़ाना बन्द किया और कहा—'अच्छा, कवि चच्चाके नामपर मैं आपको क्षमा करता हूँ। सुनाइये कवि चच्चाने क्या कहा है?'

यह कहकर लाला मल्लूमलजी अपने स्थानपर लौट आये और पूर्ववत पेटके बल लेट रहे।

लाला मल्लूमलको पेटके बल लेटा देखकर बिलवासीजीकी जानमें जान आयी। कुर्सीके आसपासकी जगह अब निरापद हो गयी थी। वे अपने स्थानपर लौट आये और बैठकर अपने बिखरे हुए विचारोंको बटोरने लगे। सरपर पहाड़को लड़खड़ाते देख गंभीरसे गंभीर मनुष्यके विचार अस्त-व्यस्त हो जायँगे।

बिखरे हुए विचारोंको बटोरकर इस योग्य करनेमें कि वे दूसरोंके सामने रक्खे जा सकें, काफ़ी समय लगता है। इधर कवि चच्चा की कथा सुननेके लिए मित्र-मण्डली बेक़रार हो रही थी। मुं० छेदीलालने लाला मल्लूमलके कानमें कहा कि आप कृपा करके बिलवासीजीके पास जाकर एक बार और लड़खड़ाइये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। बिलवासीजीने कहा—'सज्जनो! मुझे खेद है कि महाकवि 'चच्चा' को आप ऐसे उपद्रवी जीवोंसे पाला नहीं पड़ा, नहीं तो वे इस सम्बन्धमें भी कुछ अमर साहित्य छोड़ गये होते।

मेरे एक साधारणसे प्रश्नपर लाला मल्लूमल आज उत्तेजित होकर मेरी हत्या करनेपर उद्यत हो गये—ऐसी हत्या कि घर-वालोंको लाश भी ढूँढे न मिलती। लेकिन मैं अभी अपने शरीर और जीवात्मामें आपसका सम्बन्ध बनाये रखना चाहता हूँ। मुझे अभी संसारमें बहुत काम करने हैं। देव-ऋण और पितृ-ऋणको अभी तक शोधन नहीं कर पाया हूँ।

आज मुझे महाकवि 'चच्चा' का एक छप्पय प्राप्त हुआ, जिसकी विशेषता यह है कि उसे याद कर लेनेसे एकसे दस तककी गिनती याद हो जाती है।

जान पड़ता है यह छप्पय उस समयका कहा हुआ है जब मालिक लोग अपने नौकरोंमें जिन गुणोंकी आशा रखते हैं उनका ऐसा तथ्यपूर्ण वर्णन मुझे अन्य कहीं नहीं देखनेमें आया। जिस किसीको दुर्भाग्यवश ऐसी नौकरी करनी पड़ी होगी वह इसके एक-एक अक्षरकी सचाई सकारेगा। आप भी सुनिये और सराहिये—

एकै पग पै ठाढ़ बांधि दूनों कर कांपै।
त्रिभुवन माहिं महान मोहिं सर्वोपरि थापै॥
चार बात सहि लेत सजग कीन्हें पाँचो बस।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपु करै उपवास सजावै मोंकों षट्रस ॥
सातों दिवस समान सब, पहर आठ डोलत रहत ।
नौकर ऐसो होय जो, दस कर सों सेवा लहत ॥

इस छप्पयमें मैं एक संशोधन करना चाहता हूँ; आशा है कवि 'चच्चा' की स्वर्गीय आत्मा मुझे इसके लिये क्षमा करेगी। मेरे ख़यालसे इसके यदि तीसरे चरणमें 'चार बात सहि लेत' के स्थानमें 'चार लात सहि लेत' लिखा गया होता तो अधिक उपयुक्त होता।

हास्यरसका आश्रय लेकर उन्होंने इस पतनकी अवस्थाका चित्रण कर ही दिया; लेकिन थोड़ी बुद्धिवाला मनुष्य भी भाँप लेगा कि इस हास्यकी खोलीमें हृदयकी तीव्र वेदना भरी हुई है। वे कहते हैं—

हाजी राजी हज किये, सन्त लिये हरिनाम ।
हौं नर पामर अधम अस, पेटहिं चारो धाम ॥
पेटहिं चारो धाम काम सरनाम खुसामद ।
मालिक रहैं प्रसन्न होय तनखाह बरामद ॥
बढ़िया मोयनदार मिलै जब ताजी-ताजी ।
'चच्चा' कविता छांड़ि करैं तब हाँजी-हाँजी ॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३

बातकी बतास

आजकी बैठक शुरूमें बिलकुल नहीं जमी। आपसका वार्तालाप बासी भात-सा फीका बना रहा। एक न एक कारणसे सभी खिन्न थे। लाला घासीरामकी आँखें तो साफ़ ही डब-डबायी हुई थीं; उनकी पत्नीने आज उन्हें उजबक कह दिया था।

बेचारे लाला मल्लूमल भी उदास थे। घरमें किसी पूजाके कारण आज उन्हें व्रत रखना पड़ा था; इस समय तक सिर्फ़ दो सेर दूध पीनेको मिला था।

सौभाग्यसे इसी समय पं० बिलवासी मिश्र आ गये। वे सदाकी तरह प्रसन्नवदन थे। आते ही वे ताड़ गये कि आज किसी कारणसे सारी मित्र-मण्डली सियापा मना रही है। वे तुरन्त स्थितिको सुधारनेकी फ़िक्रमें लगे।

उन्होंने कहा—'सज्जनो! यह एक प्रश्न बहुत दिनोंसे मेरे मनमें उठा करता है कि सरपर रखनेकी चीज़का नाम पग-ड़ी कैसे पड़ा? आप लोग इसका कोई कारण बता सकते हैं?'

इस प्रश्नको सुना तो सभीने पर उत्तर किसीने न दिया। पंडितजीका यह वार साफ़ ख़ाली गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने फिर कहा—'सज्जनो ! जो चारो वेद पढ़ता है वह चौबे होता है, जो दो वेद पढ़ता है वह दूबे होता है। इसलिए जो एक भी वेद न पढ़ा हो उसे मैं अबे पुकार सकता हूँ ?'

अब भी किसीके चेहरे पर हँसीकी रेखा न देख पड़ी। लाला घासीरामने नाक सिकोड़ते हुए कहा—'भाड़में जायँ आप और आपकी बातें।'

'अच्छा, भाड़में जानेके पूर्व मैं कुछ काव्य-चर्चा कर सकता हूँ ? हिन्दी काव्यमें मेरी बड़ी लम्बी पहुँच है।'

हुआ करे ! हमें इससे क्या ? जो अपनी स्त्री द्वारा उजबक पुकारा जायगा, या दूधके सहारे जिसे पहाड़-ऐसा दिन काटना पड़ेगा, उसे कवितासे क्या सरोकार ! काव्य-चर्चासे यदि रोते हुए हँसने लगें तो गुलकन्दसे मुर्दे जी जाया करें।

बिलवासीजीने कहा—'सज्जनो ! हिन्दी काव्यमें सचमुच मेरी बड़ी लम्बी पहुँच है। मैंने बहुत-सी ऐसी पुस्तकोंका अध्ययन किया है जिनके आधुनिक साहित्यिक नाम तक नहीं जानते। पद्माकर कृत पद्मावत तो मुझे हदसे ज्यादः पसन्द आयी। फिर द्रौपदी कृत चीर-हरन-लीला की मैं आपसे अब क्या तारीफ़ करूँ ! सुदामाका बनाया हुआ तन्दुल-महाकाव्य साहित्यका एक अनमोल रत्न है। महाकवि मुद्राराक्षसके बनाये हुए सत्यहरिश्चन्द्र नाटकको मैंने दो बार पढ़ा है; शुरूसे आख़ीर तक और आख़ीरसे शुरू तक। हरिऔधजीके लोकप्रसिद्ध प्रहसन चुभती-चारपाईको तो मैंने निर्निमेष नेत्रोंसे चाट गया हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलवासीजी इतना कहकर रुक गये। कारण जो कुछ रहा हो, पर इस समय हवा कुछ बदली हुई-सी जान पड़ी। लाला घासीराम सोच रहे थे कि जो स्त्री क्रोधके आवेशमें भी अपने पतिको उजबक पुकार सकती है, वही स्त्री प्रेमके आवेशमें अपने पतिको 'प्यारे उजबक' पुकारेगी। लाला मल्लूमल सोच रहे थे कि ज़िन्दगीमें एक दिन उपवास करना हितकर हो सकता है अथवा नहीं, पर अन्य कोई उपाय नहीं है तो यही सही।

बिलवासीजीने देखा कि उनकी बातोंका ईप्सित प्रभाव हमलोगोंपर पड़ रहा है। उन्होंने कहा—"सज्जनो ! मैं अपने मित्र लाला राघोरामका उपकार कभी न भूलूँगा। मैं कविताकी शक्तिको पहले असीम नहीं मानता था पर उन्होंने अपना निजी अनुभव मुझे सुनाकर मेरा मत पलट दिया।

लाला राघोरामजी एक रोज़ शाम के निकले-निकले ग्यारह बजे घर लौटे। उस समय उन्होंने अपनी स्त्रीको कोपभवनमें पाया। कारण था कि वे बिना उसकी इजाज़तके घरसे चल दिये थे।

वे यह सोचते हुए लौटे थे कि घरपर खाना तैयार होगा, खूब डटकर खाऊँगा। यहाँ घरमें आग भी न जली थी; स्त्री अलबत्ता एक कोनेमें बैठी हुई सुलग रही थी। कई बार उन्होंने गोल शब्दोंमें कहा कि मेरे पेटमें कुछ शून्य-सा मालूम पड़ रहा है पर उनकी स्त्रीपर इस कहनेका असर भी शून्यसे अधिक न हुआ। तब उन्होंने दो-एक बार मुँह खोलकर कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि मुझे बड़ी भूख लगी है; लेकिन कहना न कहना बराबर रहा।

लाला राघोरामजीने उसे शिक्षा दी, लालच दी, धमकी दी पर फल कुछ न हुआ। यह सब करते-धरते घड़ीकी दोनों सुइयाँ १२ पर आ मिलीं। लाला राघोरामका पेट और पीठ सटकर एक हो गया। बेचारे बड़े फेरमें पड़े; क्या करें, क्या न करें!

इसी समय उनके दिमाग़में एक बिजली-सी कौंध गयी। यकायक उन्हें स्मरण हो आया कि कथासरित्सागर या चरक-संहितामें या राजतरंगिणीमें या ऐसी ही किसी पुस्तकमें उन्होंने कहीं पढ़ा था, कभी पढ़ा था, कि सङ्गीतसे जंगली जानवर भी वशमें हो जाते हैं। उन्होंने मनमें यह तर्क किया कि यदि संगीतसे वन्य पशु वशमें आ जाते हैं तो कवितासे सम्भव है अपनी स्त्री वशमें आ जाय। यह बात ध्यानमें आनी थी कि लाला राघोराम-का चेहरा आशासे चमक उठा और उन्होंने अपनी स्त्रीसे कहा—

अरे कछु भोजन दे अलबेली।
धरत न धीर उदर अब छन भर, बड़ी बेदना झेली॥
दया चीन्हि अब लादे भोजन, लादे झटपट लादे।
भूखों मरा न मेरे कुलमें, कोई बाप न दादे॥
बड़ा बिलम्ब लगाया तूने, बहुत बताया बुत्ता।
मैं हूँ तेरा पति परमेश्वर नहीं पालतू कुत्ता॥

बिलवासीजीने अपनी बातोंकी लड़ी नहीं टूटने दी। उन्होंने कहा—"लोग कहते हैं कि आजकल कविता पहले-सी नहीं होती! कैसे हो? कवियोंकी सारी स्वच्छन्दता तो आपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छीन ली। उनके पैर तो आपने छान दिये, अब वे चौकड़ी भरें तो कैसे। सारी मज़ेदार बातोंपर तो पहरा-चौकी बैठ गयी, वे करें तो क्या करें? अब न कुच है, न नितम्ब है, न नीबी है, नाभिकुंड है, न त्रिबली है, न रोमावली है और न कदली खम्भ-से जंघे हैं। अच्छी कविता अब क्या ख़ाक होगी!

लेकिन यह बात नहीं है कि अब हिन्दीमें अच्छी कविता करनेवाले हैं ही नहीं। इस समय मेरे हाथमें कविवर पंडित औदुम्बर शर्म्मा कृत 'कलकल' नामक महाकाव्यकी एक प्रति है। ऐसा सुन्दर ग्रन्थ है कि वाह! इच्छा होती है कि कविकी लेखनीको हृदयमें भोंक लूँ। प्रस्तावना भागके पहले दो छन्द ज़रा सुनिये—

माला फेरूँ नाक दबाऊँ
नित्य बजाऊँ घण्टी।
इससे आखिर राम मिलेंगे
इसकी क्या गारण्टी॥
यहाँ नहीं कोई आया है
पी अमृतकी घूँटी।
खाओ खेलो मौज करो
बस यही हमारी ड्यूटी॥

भाषा-माधुर्य्य और रचना-सौष्ठवके साथ-साथ सादगी और साफ़गोईका इतना सुन्दर सम्मिश्रण बड़े भागसे कहीं देखनेको मिलता है। ग्रन्थके अन्तमें कवि कहता है—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न तनमें रोग
न मनमें हो काँटा।
हाथमें हो बल
लगाऊँ शत्रुओंको चाँटा॥
पड़ा-पड़ा मैं लूँ
खुर्राटे पर खुर्राटा।
घरमें भरा हो
घी शक्कर और आटा॥

'पण्डितजी !'—लाला झाऊलालने पूछा—'इस छंदका नाम क्या है ?'

'साहित्यिकोंमें इसका नाम है मुक्तकण्ठा पर साधारण लोग इसे बगलोल छंदके नामसे पुकारते हैं। जिक्र था महाकवि चच्चाका······

'उनका जिक्र कब था ?'—क्लबके एक नये सदस्यने धीरे-से पूछा।

'हाँ, ठीक है, मैं भूल रहा था। अच्छा जाने दीजिये।'

सारा क्लब नये सदस्यको कोसने लगा। पर अब लाचारी थी।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४

रस परिपाक

मेरा अनुमान बिलकुल ठीक निकला। क्लबमें पूरे १२ सदस्य उपस्थित थे। मैंने कमरेके बाहर पूरे १२ जोड़े जूते गिने थे।

अब देर तो हो ही गयी थी; मैंने डरते-डरते क्लबके कमरेमें क़दम रक्खा। पं० बिलवासी मिश्रने मुझे आज जल्दी बुलाया था; पर मैं देर कर बैठा। मैंने उनकी ओर देखकर कहा—'पण्डितजी! क्षमा कीजियेगा, देर हो गयी।'

बिलवासीजीने उत्तर दिया—'यह तो आपके लिये कोई नयी बात नहीं है। परमात्माके यहाँ जिस समय बुद्धि बँट रही थी उस समय भी आप देरसे पहुँचे थे।'

'अच्छा यह बताइये कि आपने मुझे आज जल्दी क्यों बुलाया था?'

'मुझे एक उड़ती हुई खबर मिली है कि आप किसी पत्रिकाके सम्पादक हो रहे हैं। सुनकर मेरा जी धक-से हो गया। मैं एक लम्बी साँस लेने जा रहा हूँ।'

अजीब हाल है! जिधर देखिये उधर यही चर्चा! एक चिरायँध-सी फैल रही है। राह चलते लोग मेरी ओर उँगली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठाते हैं, मानों मैं कोई नम्बरी बदमाश हूँ। मैं नहीं जानता था कि सम्पादक होना इतना बड़ा अपराध है।

मैंने बिलवासीजीसे कहा—'हाँ महाराज! मैं इस समय एक प्रकारका सम्पादक तो अवश्य हूँ।'

बिलवासीजीने पूछा—'अच्छा यह बताइये कि आपको भीतरसे कैसा मालूम पड़ रहा है?

'भीतरसे?'

'हाँ। हमारे एक मित्रको जब पहले डिप्टी कलक्टर होनेकी सूचना मिली तो उन्होंने मुझे बतलाया कि जिस ज़मीनपर वह खड़े थे वह कुछ ऊपरको उठती हुई जान पड़ी और ऊपरका आसमान कुछ नीचेको खसकता हुआ जान पड़ा। इसी प्रकार आप अपना अनुभव बताइये। आपको सम्पादक होनेपर कैसा जान पड़ा? नीचेसे कोई चीज उभरती हुई जान पड़ी?'

'नहीं तो।'

'या ऊपरसे कोई चीज दबाती हुई?'

'बिलकुल नहीं।'

लाला मल्लूमलने पूछा—'शायद बीचसे कोई चीज फुदकती हुई जान पड़ी हो?'

लाला मल्लूमलकी बातोंका जवाब कम लोग देते हैं। मैंने भी नहीं दिया।

लाला झाऊलालने कहा—'ज़रा आप बीचमें आकर बैठिये।'

'क्यों?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हमलोग आपको चारोंओरसे देखना चाहते हैं। हमलोगोंने लक्का-कबूतर देखा है, ऊद-बिलाव देखा है, लकड़-बग्घा देखा है, दरियाई-घोड़ा देखा है, आज एक सम्पादक देखनेकी इच्छा है।'

'ख़ैर इन बातोंको छोड़िये। अब तो जो कुछ होना था हो गया। अब बोलिये मैं क्या करूँ?'

बिलवासीजीने कहा—'करना क्या है? आनन्दपूर्वक सम्पादन करिये।'

'मुझे एक हास्य-रस-प्रधान पत्रिकाका सम्पादन करना है।'

'हास्य-रस-प्रधान?'

'जी हाँ।'

'भला इसमें क्या तुक है? अपने देशमें हास्य-रसकी क्या आवश्यकता थी?'

'आप जानते हैं कि साहित्यके आयार्य्योंने नौ रस माने हैं।'

'तो इससे क्या? ज्योतिषके आचार्य्योंने नौ ग्रह माने हैं।'

'बात यह है कि हमारे साहित्यमें शृङ्गार, शांत, करुण आदि रसोंकी यथेष्टता है पर हास्यरसकी बड़ी कमी है।'

'होने दीजिये। देशको हास्य-रससे क्या वास्ता। हमारे देशमें हास्यको लोग व्यर्थकी हाहा-ठीठी समझते हैं। हँसना असभ्यताका लक्षण है। बहुतसे घरोंमें बच्चोंको हँसते देख उनकी मरम्मत कर दी जाती है।

एक धनी सज्जन कुछ दिनोंकी यात्राके बाद मकान लौटे। मुझसे कहने लगे कि मेरी अनुपस्थितिमें नौकरोंने पूरी हराम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खोरी की है। मैंने पूछा क्या आप कोई बदइन्तजामी देख रहे हैं। उन्होंने उत्तर दिया—'नहीं बदइन्तजामी तो नहीं देख रहा हूँ पर मैंने सब नौकरोंको प्रसन्नचित्त और हँसते हुए पाया, इसीसे मैंने अनुमान किया कि उन्होंने हरामखोरी की। यदि उनसे काफ़ी काम लिया गया होता तो वे हँसते हुए न दिखायी पड़ते।'

ऐसे देश और ऐसे समयमें हास्यरसका नाम लेनेके लिए महाकवि 'चच्चा' की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। यह याद रखना होगा कि उनका हास्य भाँड़पनकी परिधिको पार करके हमारी उन सामाजिक कुरीतियोंपर प्रहार करता है जिन्हें हम अपनी मूर्खता-वश धार्म्मिकताकी सनद दे बैठे हैं।

जैसे गङ्गा-स्नानकी बात लीजिये। हम समझते हैं कि गङ्गामें डुबकी मार कर जब हम बैकुण्ठके अधिकारी बन रहे हैं तो हमारे घरकी स्त्रियाँ क्यों पिछड़ी रहे। उन्हें भी गङ्गा स्नानकी पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिये, चाहे उनके लिए इसका उचित प्रबन्ध वहाँ हो या न हो। स्नान, विशेषतः स्त्रियोंके लिये, ऐसी चीज नहीं हैं कि बीच बाजारमें निबटाया जाय।

काशीके जनाने घाटोंपर जाकर ज़रा देखिये। भले घरकी स्त्रियाँ महीन-से-महीन धोतियाँ पहने स्नान करने आती हैं। जिस समय पानीसे डुबकी मार कर बाहर निकलती हैं एक समा बँध जाता है। लोग पूजा-पाठ भूलकर निगाहें सेंकने लगते हैं। ध्यानमें मुँदी हुई आँखें खुल जाती है, गोमुखीमें फिरती हुई मालाएँ रुक जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाकवि चच्चा किसी ऐसी ही घटनाको स्मरण करके कहते हैं—

साधक सोधि मनों मनसा
अति सिद्धिकी साध समाधि हैं साधे।
गंगके तीर सिधासन मारि
धरे धुन ध्यान करैं अवराधे॥
ताहि समय गुजरी उजरी इक
घाट पै आई लिये घट काँधे।
सिद्धको ध्यान छुट्यो उचट्यो
मन लै चली लै चली संगमें नाधे॥

सज्जनो! महाकवि चच्चा हास्यरसके आचार्य्य थे। पर साथ ही अन्य रसोंमें असमर्थ भी न थे। शृङ्गार-रसके नाम-पर नाक सिकोड़नेका फैशन उनके समयमें नहीं निकला था। उनकी शृङ्गार-रसकी रचनाएँ मुझे कई याद हैं पर उनमें कपोल, केश, कामिनी आदि अनेक अश्लील शब्द आ गये हैं। हाँ, शान्तरसके परिपाकमें उन्हें पर्य्याप्त सफलता मिली है। सुनिये—

भूलहु न नाथ भये बामन बराह आप
छली औ मलीन कहौ मोकों बलिहारी है।
स्वारथ बिचारि ब्याहि लाये घर सिन्धुजाको
ता पै अब आज मोहिं लोभी निरधारी है॥
काम काज छाँड़ि सबै पौढ़े छीर-सिन्धु माहिं
कौन मुँह लाइ मोहिं आलसी पुकारी है।
एक समै रीझे खूब कूबरीके कूबर पै
आजु मोसों दूबर पै रीझनकी बारी है॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१५

अगिया बैताल

शिष्टता और शालीनताकी मूर्ति पं० बिलवासी मिश्रको आज झल्लाया हुआ देखकर सबको आश्चर्य्य हुआ। इस झल का परिचय सबके पहले लाला मल्लूमलको मिला। सदाकी भाँति वे आज भी चाँदनीपर चारो-खाने-चित्त लेटे हुए थे। बिलवासीजीने आते ही उनके सरके नीचेसे तकिया खींच लिया और स्वयं उसे लगाकर लेट रहे। लाला मल्लूमलका सर ज़मीनसे टकराया और वे उठ बैठे।

इसके बाद बिलवासीजीने बगलमें बैठे हुए लाला झाऊलालके जेबसे पानका डब्बा निकाल लिया और पान खाकर उन्हें घूरने लगे, मानों आँखों कह रहे हों कि मैं सौ बार आपके पान खाऊँगा, देखें आप मेरा क्या कर लेते हैं।

लाला घासीराम कुरता हटाकर अपनी तोंद सहला रहे थे। पं० बिलवासी मिश्रने बिगड़कर कहा—'लाला घासीरामजी! आपकी तोंदसे अश्लीलता टपक रही है। कृपया उसे फ़ौरन ढँक लीजिये।'

बिलवासीजीका यह रुख देखकर हमलोग आपसमें काना-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूसी करने लगे। अवश्य कोई असाधारण बात हुई है! वे योंही मिज़ाज बिगाड़नेवाले आदमी नहीं हैं। उन्हें रास्तेपर लानेकी तदबीर सोची जाने लगी। मुं० छेदीलालने कहा—'कहिये पण्डितजी! आज आपके ऊपर अगिया-बैतालकी छाया कैसे पड़ गई! दिमाग़ कुछ गर्म हो गया है क्या?'

लाला झाऊलाल अपना पानका डब्बा छिपाते हुए बोले—'घरमें बैठे दिनभर भाड़ झोंकते हैं, दिमाग़ क्यों न गर्म होगा!'

पं० निपट नारायणने कहा—'जान पड़ता है राहमें किसीने दुहत्था जमा दिया है।'

लाला मल्लूमलने कहा—'मुझे एक हकीमने बताया था कि जिसके दिमाग़पर गर्मी चढ़ जाय उसे जूता पहनना छोड़ देना चाहिये। जूतेकी तासीर गर्म होती है।'

इस बातपर सभीको हँसी आ गयी। बिलवासीजी भी हँस पड़े। उन्होंने हम लोगोंकी ओर देखकर कहा—''मैंने कुछ मित्रोंके साथ जो उजड्डपनका व्यवहार किया है उसके लिए मैं उनसे क्षमा चाहता हूँ। बात यह है कि आज सुबहसे ही मेरा हृदय चोटपर चोट खा रहा है। आप ही सुनकर निर्णय कीजिये कि इतना सहकर कोई कैसे आपेमें रह सकता है।

आज सबेरे कलकत्तेके प्रसिद्ध प्रकाशक पं० हनुमान त्रिपाठी 'साहित्य-संकट' नामक मेरी अप्रकाशित पुस्तकका सर्वाधिकार ख़रीदनेके लिए, पेशगीके रुपये लेकर, मेरे मकानपर मुझसे मिलनेके लिये आनेवाले थे। मैं अँधेरे-मुँह उठ कर सब कामोंसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निवृत्त हो गया था और अपने कमरेमें बैठा हुआ बड़ी उत्सुकतासे उनकी राह देख रहा था। सात बजेके लगभग नौकरने आकर कहा कि एक साहब आपसे मिलना चाहते हैं। मैंने पूछा कि क्या नाम बताते हैं? उसने कहा रामदास तिरपाठी।

मैं इस नामके किसी व्यक्तिको नहीं जानता था। और फिर इस समय मैं पं० हनुमान त्रिपाठीके अतिरिक्त किसी भी त्रिपाठी से न मिलता। मेरी दशा अभिसारिकासी हो रही थी। मैंने नौकरको आज्ञा दी कि जाकर कह दो कि मालिक घरपर नहीं हैं, किसी दूसरे दिन आना।

मैं दो घण्टे तक पं० हनुमान त्रिपाठीकी प्रतीक्षा करता रहा पर वे न आये। अब भी मैं निराश नहीं हुआ था। नौ बजे मैंने नौकरको बुलाकर कहा—'देखो जी, मैं जलपान करने जा रहा हूँ। पं० हनुमान त्रिपाठी नामके कोई सज्जन आवें तो मुझे फ़ौरन ख़बर देना।'

नौकरने कहा—'वे तो आये रहे, पर लौट गये।'

'लौट गये?'

'हाँ! आप ही ने तो कहला दिया कि दूसरे दिन आना। लौटते बखत आपको बड़ा जदबद कह रहे थे।'

'क्यों बे! तूने तो उनका नाम रामदास त्रिपाठी बताया था।'

'तब क्या सबेरे हनुमानजीका नाम लेता कि दिन भर खाना भी न मिले। इसीलिए तो मैंने रामदास कहा कि आप अरथ लगा कर समझ लें।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकरसे झौं-झौं करना बेकार था। मैं सर पीट कर बैठ रहा। मन कुछ शान्त हुआ तो कपड़े पहन कर बाहर निकला। रिश्तेकी एक दादी गङ्गा स्नानके लिये काशी आयी हैं। उन्हींसे भेंट करना था। कई साल पर उन्हें देखा। इधर थोड़े दिनोंसे वे दोनों आँखों-की अन्धी हो गयी हैं। मुझे पास बिठा कर मेरे सरपर हाथ फेरने लगीं। मेरे सरको आगे-पीछे अच्छी तरह टटोल कर बोलीं—'बेटा! तेरा मुँह किधरसे शुरू होता है?'

इस प्रश्नसे मेरे शरीरमें आग लग गयी। मैं सीधे मकान लौट आया।

किसी तरह दिन कटा, शाम हुई। स्त्रीने हुक्म दिया कि अपने निकम्मे दोस्तोंकी मण्डलीमें जानेके पहले ज़रा ससुराल चले जाना और मेरे घरवालोंका हाल लेते आना। मैंने कहा जो आज्ञा।

मैं ससुरालसे होता आ रहा हूँ। ससुर जी नहीं थे। मेरा छोटा साला, जिसकी उम्र सात बरस की है, मेरे पास खेलता-खेलता आ बैठा। कमरेमें एक मोमबत्ती जल रही थी। उसने मोमबत्ती बुझा कर पूछा—'जीजा जी! आपको अब दिखायी पड़ता है?'

मैंने हँसकर कहा—'नहीं तो।'

'तब क्या हमारे बाबूजी झूठ बोल रहे थे?'

मैंने खुश होकर पूछा—'क्या तुम्हारे बाबूजी मुझे अँधेरे घरका चिराग़ कह रहे थे?'

'नहीं, वे कह रहे थे कि तुम्हारा जीजा बड़ा उल्लू है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सज्जनो ! अब आप ही इन्साफ़ कीजिये कि जिस मनुष्यके दिलपर इतने आघात पहुँचे हों वह अगर अपने दोस्तोंपर गुस्सा न उतारेगा तो कहाँ उतारेगा ? दोस्त आख़िर हैं किस दिनके लिए। तब भी मैं अपने व्यवहारपर खेद प्रकट करता हूँ और आप महानुभावसे माफ़ी चाहता हूँ।"

हम लोगोंने एक दूसरेकी ओर देखा। लाला झाऊलालने लाला घासीरामके कानमें कुछ कहा। लाला घासीरामने मुं० छेदीलालकी ओर देखकर इशारा किया। मुं० छेदीलालने चौधरी बतासरायकी ओर आँख मारा। चौधरी बतासरायजी सर हिला कर मुसकराये।

लाला झाऊलालने कहा—'बिलवासीजी ! यह आपने अच्छा तरीक़ा निकाला है। सब जगहसे जले-भुने आइयेगा तो दोस्तोंमें बैठकर झल उतारियेगा। किसीके पनडब्बे पर छापा मारियेगा, किसीके तोंद-ऐसे मर्मस्थलको अश्लील पुकारियेगा, और अन्तमें माफ़ी माँग कर सब दोषोंसे बरी हो जाइयेगा। यह खूब रही ! आप अच्छे निघरघट हैं ! माफ़ीको आपने बड़ा सस्ता सौदा समझ लिया है।'

बिलवासीजीने बड़े विनम्र भावसे कहा—'सज्जनों ! मुझे अपने आचरण पर बड़ा दुःख है। मुझसे अपराध हुआ। अब आप लोग क्षमा करनेकी दया दिखाइये।'

'इतने सस्ते आप नहीं छूट सकते'—मुं० छेदीलालने कहा—'इधर कुछ दिनोंसे आपकी मनमानी बढ़ती जा रही है। हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंकी इच्छाओंको कुचलनेकी, हमलोगोंकी प्रार्थनाओंको ठुकरानेकी आदत-सी आपकी पड़ती जा रही है। महाकवि 'चच्चा' के जीवनके सम्बन्धमें आपको कई नयी बातें मालूम हुई हैं— आप खुद ही कह रहे थे। पर आपसे सुनानेकी प्रार्थना की जाती है तो आप टालमटोल करते हैं। कई बार वादा करके भी आप गोल हो रहे। आज-कल करते महीनों हो गये। अगर आज आप अपना वादा पूरा करें तो हम लोग आपको क्षमा कर सकते हैं, अन्यथा नहीं।'

बिलवासीजी आज दाँवमें आ गये। भाव-तावका मौक़ा न देखकर उन्हें क्षमाका मुँह-माँगा मूल्य देना पड़ा। उन्होंने कहा— "सज्जनो ! मैं अपनी उद्दण्डताका समर्थन नहीं करना चाहता पर प्रसङ्गवश यह कहनेके लिये बाध्य हूँ कि कवि चच्चा सा महा-पुरुष भी अवसर पड़नेपर क्रोधका शिकार हो जाता था। इस बातपर हमें आश्चर्य्य न करना चाहिये। सच पूछिये तो महा-पुरुषोंकी यही त्रुटियाँ उनकी मानवताको प्रमाणित करती हैं और हम साधारण लोगोंके साथ उनका सम्बन्ध जोड़ती हैं।

अपने शहरके रईस नामधारी व्यक्तियोंसे कवि चच्चाको बड़ी शिकायत थी। उन लोगोंने इनकी सहृदयता और सौजन्यसे अनु-चित लाभ उठाया। बड़े अफ़सरोंके आवागमन पर वे इनसे स्वागत-गान और शोकोद्गार लिखा ले जाते थे और सभाओंमें पढ़ते थे। ये बेचारे नहीं करनेका ढङ्ग जानते न थे, जो आता था उसका मन किसी-न-किसी प्रकार रख देते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर सबसे अधिक पूछ इनकी होती थी निमंत्रण-पत्र लिखनेके लिए। जब किसी बड़े आदमीके लड़केकी शादी तय होती थी तब वह आकर कहता कि महाराज, निमंत्रण-पत्रके लिये चार लाइनकी कविता लिख दीजिये। लगनके दिनोंमें उनका कितना समय इसीमें चला जाता था। एक बार तंग आकर उन्होंने एक सेठका आग्रह यों पूरा किया—

गननायक लायक सकल, बनहु सहायक आज।
चरनोदक दै राखियो, मनमोदककी लाज॥
माघ मास सुभ सत्तमी, सुक सोरह तारीख।
बेटा ब्याहौं धूम सों, चाहे माँगौं भीख॥
रन्नो धन्नो आदि सब, संग पतुरिया पांच।
नाच रंग रजगज परम, चलिये भरत कुलांच॥
पुरजन परिजन बिप्रजन, प्रियजन सज्जन-लोग।
चलि बरात सँग उदरभर, लहिये मोहन-भोग॥

पैसेवालोंका हृदय इतना विशाल होता है कि इस तरहके कामोंको वे अधिकांशतः मुफ़्तमें कराना चाहते हैं; समझते हैं कि जिसके द्वारपर मैं जाऊँगा वह मेरे लिए इतना भी न करेगा। टकासे भेंट हो या न हो, पर उनका काम कर दीजिये तो वे प्रसन्न होंगे—कभी-कभी मारे प्रसन्नताके आपको कोई दूसरा काम भी लगे-हाथ सौंप देंगे।

जान पड़ता है कवि चच्चाको अधिकतर ऐसे ही धनिकोंसे पाला पड़ा था। ये शब्द बिना जी-जानसे कुढ़े हुए कोई कह नहीं सकता—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाचरंग मुजरामें खल ये खजाने खोलि
खान-पान खातिरमें करैं खूब खरचा।
हाकिम हुकुममें दबाइ दुम ठाढ़े रहैं
पावत प्रसन्न ह्वै उपाधिनको परचा॥
नीचता निचोरि चतुरानन रच्यो है इन्हें
भावै दिन रैन दुराचारहीकी चरचा।
दानमें दयामें देशसेवा परमारथमें
देतके छदाम इन्हैं लागत है मरचा॥

'सज्जनो! कवि चच्चाके सम्बन्धमें मुझे बड़े महत्वकी एक बात मालूम हुई है—वह यह कि उनकी ससुरालमें उन्हें कोई उल्लू नहीं पुकारता था, और अगर कोई पुकारता भी था तो उन्हें कोई छोटा साला नहीं था जो परोक्षकी बात सामने प्रकट कर दे। इसका सबसे बड़ा प्रमाण मेरे पास यह है कि वे अपनी ससुरालसे प्रसन्न थे। उन्होंने यहाँतक कह डाला है कि—

मुनि तापस आपसमें कलपै
दिकपाल कपाल धुनैं निरधारी।
त्रिपुरारि मुरारिके धाम कहाँ
सुख जैसो 'चचा' को मिलै ससुरारी॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६

प्यारे रूपचन्द

बातें बहुत हुईं पर अधिकांशतः फुटकल। जमकर किसी एक विषयकी चर्चा अभीतक न हो पायी।

लाला मल्लूमलने कलाकन्दका विषय उठाया था। कलाकन्दसे कायाकल्प, धौलागिरि और शीर्षासन आदि विषयोंकी चर्चा कैसे छिड़ी, यह कहना कठिन है। फिर शीर्षासनसे च्यवनप्राश, निरालाछंद और अघोरपंथकी आलोचना कैसे हुई, यह कौन बता सकता है।

पं० बिलवासी मिश्र जिस समय पधारे उस समय पैसे-रुपयेके महत्वपूर्ण विषयपर विचार हो रहा था। मुं० छेदीलालने कहा—'आप लोगोंके ध्यानमें यह बात अवश्य आयी होगी कि जेब ज्यों-ज्यों खाली होता है त्यों-त्यों बोझ-सा प्रतीत होता है।'

'मेरा तो यह अनुभव है कि उधर जेब हलका हुआ कि इधर तबीयत भारी हुई।'—लाला झाऊलालने फ़र्माया।

लाला घासीराम भी कुछ कहने जा रहे थे कि बिलवासीजीने ज़मीनपर हाथ पटका। हम लोग सावधान हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलवासीजीने कहा—'आप लोग ज़रा चुप रहिये। मेरे हृदयमें इसी विषयपर एक गद्य-काव्यका प्रादुर्भाव हो रहा है।'

हम लोगोंने देखा कि बिलवासीजी अपने शरीरको ऐंठ रहे हैं; उनके माथेपर तीन शिकन पड़ी हुई हैं। प्रसव-पीड़ाके सभी लक्षण वर्त्तमान थे।

उन्होंने अपनी आँखें आकाशकी ओर उठायीं और कहा—"प्यारे रूपचन्द! तुम कहाँ हो? आओ, तुम्हें अपने हृदयके पास—कोटके भीतरी जेबमें—रख लूँ। तुम जिसके पास हो उसकी चाँदी है। तुमने अपना सिक्का सारे संसारमें जमाया है; तुम्हारी मायामें सारा जगत समाया है। तुम्हारे इशारेपर दुनिया नाचती है; तुम्हें उमड़ते देख मेरा मन-मयूर नाचता है; तुम्हारी कृपासे नित्य ही बड़े लोगोंके यहाँ पतुरिया नाचती हैं।

तुम्हारा अल्हड़पन सराहनीय है। जिस समय हाथसे गिरकर सड़कपर लुढ़कते हुए नालीमें जा रहे हो उस समय हम किस फुर्तीसे दायें-बायें आँख बचाकर तुम्हें उठा लेते हैं और मुँह पोंछनेवाले रुमालसे पोंछ कर जेबके हवाले करते हैं!

तुम्हारी सूरत हमारे हृदयपर अंकित है। सूर्य्य, चन्द्रमा, पृथ्वी सब गोल हैं; तुम भी गोल हो। तुम्हारी कामना से किसीके पास जाता हूँ तो वह बातें भी गोल करता है।

प्यारे रूपचन्द! आओ, तुम्हें टेंटमें—पेटके पास—रख लूँ; ज़रा पड़ोसीकी खोज-खबर लेते रहना। आओ मैं तुम्हें हाथोंहाथ लोक लूँ। देहाती स्त्रियोंने तो तुम्हें गलेका हार बना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खा है; मैं तुम्हें अपना ईश्वर बनाऊँगा। आओ, चले आओ, हृदय-पटलपर स्वर्णाक्षरोंमें तुम्हारा स्वागत लिखा है।”

बिलवासीजीकी यह अवस्था मूर्च्छा या समाधिकी तो नहीं कही जा सकती पर एक प्रकारकी तन्मयता अवश्य थी। उन्होंने सचेत होकर कहा—‘सज्जनो! मैं कुछ अनाप-शनाप तो नहीं बक रहा था?’

लाला घासीरामने उत्तर दिया—‘पता नहीं आप क्या बक रहे थे पर आपने उसका नाम गद्य-काव्य बताया था।’

‘आप रुपयेका स्तव सुना रहे थे’—मुं० छेदीलालने कहा।

‘रुपया चीज़ ही ऐसी है। महाकवि चच्चाको रुपया छुए जब बहुत समय बीत जाता था तब वे काशी-विश्वनाथके मन्दिरमें जाकर फ़र्शपर हाथ फेर लेते थे।’

हमलोग कवि चच्चाकी इस मूर्खतापर हँसनेका विचार कर ही रहे थे कि बिलवासीजीने कहा—“सज्जनो! उस माया-मयकी कुछ ऐसी माया थी कि चच्चा ऐसे महाकवि और साहित्य-शिल्पीको उसने पैसोंका मुहताज बनाया। तब भी बाहरी लोगोंके सामने अपनी ग़रीबीका दुखड़ा वे कभी नहीं रोए। आर्थिक सहायताके लिए उन्होंने कभी किसीके आगे हाथ नहीं फैलाया। उनका सिद्धान्त था—

‘चचा’ भरोसे राम, रोबसे करैं बसेरो।
घरमें तवा न होय मोंछ पै ताव वनेरो॥

कवि चच्चा के समयमें छब्बू नामका एक मशहूर चोर रहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। वह अमीरोंसे चुराकर ग़रीबोंको ख़ैरात कर देता था। एक बार उसने ग़लतीसे कवि चच्चा के मकानमें सेंध लगायी। पर घरकी हालत देखकर उसे बड़ी करुणा आयी। उनकी चारपाईपर बैठकर वह रोने लगा। उसके सिसकनेसे कवि चच्चा की नींद खुल गयी। उन्होंने उससे पूछा, भाई आप कौन हो? क्यों रोते हो? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

उसने उत्तर दिया कि क्या कहूँ, आज रातकी सारी मेहनत बेकार गयी। इतनी देरतक जगा, सेंध लगायी, सेंध लगानेमें एक छेनी भी टूट गयी, पाँच रुपये फेरी वाले पुलिसको सो जानेके लिए दिये, और हाथ कुछ न लगा। मुझे क्या मालूम था कि तुम उन लोगोंमें हो जिनके लिये मैं चोरी करता हूँ।

कवि चच्चा ग़रीब होते हुए भी बड़े उदार प्रकृतिके मनुष्य थे। एक रोज़ वे घरसे निकले तो मुहल्लेके लड़कोंका एक दल यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा—

आधा घोड़ा आधा खर।
आधा बानर आधा नर॥
घरसे बाहर निकले तुम।
कहाँ छिपाए लम्बी दुम॥

कवि चच्चाके स्थानमें मैं अगर होता तो लड़कोंसे भिड़ जाता और कितनोंकी चपतगाह गर्म्म करके छोड़ता। पर कवि चच्चाने क्या किया? उनके जेबमें जमा-पूँजी कुल एक अठन्नी थी; उन्होंने उसे निकाल कर लड़कोंके हाथपर रख दिया और कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईश्वरके प्रति उपालम्भकी भाषाका प्रयोग अनेक कवियोंने बड़ी सफलतापूर्वक किया है। पर उसे नीचा-ऊँचा समझाकर 'राह-रास्त' पर लानेकी कोशिश कम कवियोंने की है। फिर अपने हितमें उसके हितको सिद्ध कर दिखाना कवि चच्चा ऐसे बैठकबाजका ही काम था। ज़रा इस साहसको तो सराहिये; इस आपसदारीको तो देखिये। जान पड़ता है कोई मुँहलगा मुसाहब है जो कह रहा है—

ग्रन्थन गिनायो पुनि पन्थन पुनीत गायो
सन्तन सुनायो सुनि मेरो हुलसै हिया।
करुना कृपाके धाम धाक दीनबन्धुताकी
धूम है धरापै दयासिन्धु घने दानिया॥
बिरद बड़ाई भूरि धूरिमें मिलैहो जो पै
मोहिं ना उबारे प्यारे सोचु अपने जिया।
चुगुल चवाई 'चचा' चौचँद मचैहैं धाय
रहे वे दया के धनी—अब हैं देवालिया॥

सज्जनो! मैं 'चच्चा' को महाकवि समझता हूँ और आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप भी उन्हें महाकवि समझें। मैं जानता हूँ कि मैं अगर उनकी आधी कविता भी कर सकता तो अपनेको महा महाकवि समझता। फिर कवितामें हास्यरसका पुट देना तो वास्तवमें असाधारण योग्यताका काम है। कवि चच्चाने स्वयं इसे स्वीकार किया है। कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'बालको! इसकी मिठाई खाना और इसी तरह कविताका अभ्यास करते रहना।'

इन लड़कोंमें एक बड़ा होनहार निकला। उसकी गिनती अच्छे कवियोंमें है। आजकल वह 'गुड़गुड़ी' नामक एक खंड-काव्य लिख रहा है।

यह सच है कि पैसेके अभावसे कवि चच्चाका जीवन बड़ा कष्टमय हो गया था पर अच्छी बुद्धिके आगे वे धनको भी तुच्छ समझते थे। उन्होंने स्पष्ट कहा है—

सुवरन पल्ला लग्यो रत्न मन्दिर पँचतल्ला।
पोर-पोर अँगुरीन गुहे हीरनके छल्ला॥
रन-रल्लामें भीम, भूमि पै छायो हल्ला।
बल मल्लन सों दून सिंहको तोरैं कल्ला॥
बल प्रताप अट्टालिका, अतिसय उत्तम ये सकल।
'चच्चा' उर अभिलाख यह, बुद्धि प्रथम पाऊँ बिमल॥

इसी 'विमल बुद्धि' की बदौलत कवि 'चच्चा' को अपने ईश्वरमें अपार विश्वास था। संसारके सामने उन्होंने जो कुछ स्वाँग रचा हो पर अपने ईश्वरके सामने उन्होंने सदा अपना असली रूप प्रकट किया। सुनिये—

धर्म्मको मर्म्म न जानतु हौं
जप जोग जगावनको नहिं जाँगर।
छीरके सागर पौड़नहार
उतारिहैं पार हमैं भवसागर॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईश्वरके प्रति उपालम्भकी भाषाका प्रयोग अनेक कवियोंने बड़ी सफलतापूर्वक किया है। पर उसे नीचा-ऊँचा समझाकर 'राह-रास्त' पर लानेकी कोशिश कम कवियोंने की है। फिर अपने हितमें उसके हितको सिद्ध कर दिखाना कवि चच्चा ऐसे बैठकबाजका ही काम था। ज़रा इस साहसको तो सराहिये; इस आपसदारीको तो देखिये। जान पड़ता है कोई मुँहलगा मुसाहब है जो कह रहा है—

अन्थन गिनायो पुनि पन्थन पुनीत गायो
सन्तन सुनायो सुनि मेरो हुलसै हिया।
करुना कृपाके धाम धाक दीनबन्धुताकी
धूम है धरापै दयासिन्धु बने दानिया॥
बिरद बड़ाई भूरि धूरिमें मिलैहो जो पै
मोहिं ना उवारे प्यारे सोचु अपने जिया।
चुगुल चवाई 'चचा' चौचँद मचैहैं धाय
रहे वे दया के धनी—अब हैं देवालिया॥

सज्जनो! मैं 'चच्चा' को महाकवि समझता हूँ और आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप भी उन्हें महाकवि समझें। मैं जानता हूँ कि मैं अगर उनकी आधी कविता भी कर सकता तो अपनेको महा महाकवि समझता। फिर कवितामें हास्यरसका पुट देना तो वास्तवमें असाधारण योग्यताका काम है। कवि चच्चाने स्वयं इसे स्वीकार किया है। कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काव्यकला कलधौतके सङ्ग
सुहास सुगन्धको मेल हँसीना।
दैवकृपा प्रतिभा अस होय
तथापि प्रयासन जात पसीना॥

जब हम इस बातका विचार करते हैं कि उनके जीवनका वातावरण कविताका पोषक नहीं था तब उनकी योग्यता और भी निखर कर हमारे सामने प्रकट होती है। पुरोहितीके पाखण्डपूर्ण धन्धेमें फँसा हुआ धन और साधनहीन व्यक्ति साहित्य-संसारमें अपना चरण-चिन्ह छोड़ गया—क्या यह कम आश्चर्यका विषय है? उनकी प्रतिभाकी पूर्णिमा पूरी तरह छिटकती तो संसारको चकित कर देती पर विपत्तियोंके बादलने सारा खेल बिगाड़ दिया। अब इसका अनुमान करना भी कठिन है कि उन्होंने कितना हाथ-पाँव पसारा होता यदि—

त्रास न आस न काहूकी रंच
बिरंचिने भाल लिखी हो भलाई।
भोजन छाजन डासनकी
सब भाँति सदा सुबिधा सुखदाई॥
प्रीत प्रतीत भरी सुमुखी
सुख सों करजोरि करै सेवकाई।
चाव सों बैठि 'चचा' चरचा
कविताकी करैं रुचिसों चितलाई॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७

रैन-रतजगा

सबकी आँखें सब काम छोड़कर बस यही देख रही थीं कि आज बिलवासीजीके मस्तकपर रोज़वाली टुपलिया नहीं है। उसके स्थानपर वहाँ आज एक गट्ठर है, जो थोपा-सा, थपथपाया-सा कानोंकी खूँटीपर योंही थमा पड़ा है। लाला मल्लूमलको पूरा सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने हाथोंकी पुपली बनाकर यह दृश्य देखा।

बिलवासीजीके उत्तमाङ्गपर इस विचित्र वस्तुको देखकर सारा मित्र-समुदाय स्तब्ध हो गया। लाला घासीरामने पूछा—'यह क्या है ?'

'यह कुछ है।'—लाला झाऊलालने उत्तर दिया।

'कुछ ज़रूर है, ऐसा मुझे भी अनुमान हो रहा है।'—पण्डित निपटनारायणने कहा।

'पर क्या है ?'—मुंशी छेदीलालने पूछा।

'यह हो-न-हो पगड़ी है।'—पं० जीटबहादुरने कहा।

'नहीं, पगड़ी नहीं है।'

'पगड़ी नहीं है तो क्या है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'प्रश्न है कि पगड़ी है तो कैसे है ?'

'लेकिन अगर पगड़ी है तो क्यों है, और किधरसे है ?'

यह विवाद कुछ देरतक चलता, पर लाला मल्लूमल बीचमें बोल उठे—'अजी पगड़ी-वगड़ी नहीं, किसी घायल कुम्हड़ेकी मरहम-पट्टी की गयी है।'

बिलवासीजीने बिगड़ कर कहा—'मल्लूमलजी, आप आदमी नहीं, तलछट हैं। आपकी औंधी हाँडीमें जो बेलका गूदा भरा था वह भी अब ख़राब गया। फ़िनाइलका नस्य लीजिये तो बुद्धि शायद कुछ साफ़ हो जाय। नहीं, एक योग आपको बताऊँ, चरकके चाचाका बताया हुआ; सालभर सेवन कर लीजिये तो लगभग आदमी बन जाइये। कूट-कपड़-छान कर सब बराबर-बराबर: लिखिये—गोरोचन, अश्वगन्धा, हाथीचक, ऊँटकटारा, कौवाठोंठी, नागकेसर, गदहपुन्ना, बिल्लीलोटन, कुकुरमुत्ता......

पण्डितजी अभी और कुछ कहते, पर इतना कहकर उन्होंने अपना सर जो झटकारा तो वह पगड़ी, जो गिरनेका बहाना खोज ही रही थी, ज़मीनपर आ पड़ी; और किसीने हाथ बढ़ाकर उसपर क़ब्ज़ा कर लिया।

हम सबने उसे पूरे ध्यानसे देखा। बड़ी स्पेशल पगड़ी थी। जितनी लम्बी प्रायः उतनी ही चौड़ी, चारों ओर सिले हुए, और बीचमें कई जगह रोशनाईके दाग़। थी जन्मना बिछानेकी चादर, पर कर्मणा पहननेकी पगड़ी हो गयी थी।

यह प्रत्यक्ष था कि बिलवासीजीसे अब इस विषयपर एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्पष्ट वक्तव्यकी आशा की जा रही थी। सो, प्रगट यह हुआ कि आज शामको छः बजे उन्हें क्लब आना था, और उसके कुछ ही पहले उनकी पत्नीको भी अपनी बहनके घर जाना था। पत्नीने अपने जाते समय उन्हें सूचना दी कि चूँकि आप एक निकम्मे और ग़ैर-ज़िम्मेदार व्यक्ति हैं इसलिए मैं सब कमरोंपर ताला चढ़ा कर तालियाँ अपने साथ लेती जा रही हूँ; क्लब जाते समय आपको जिन चीज़ोंकी ज़रूरत पड़ सकती है वह सब आपके ही कमरेमें रखे जाती हूँ।

पर, कुछ देर बाद, बिलवासीजी जब क्लबके लिए रवाना होने लगे तब उन्होंने देखा कि घड़ी, छड़ी, जूता, रूमाल इत्यादि तो सब है, लेकिन टोपी नदारद।

'अब आप ही लोग बताइये'—बिलवासीजीने पूछा—'कि ऐसी अवस्थामें मैं क्या करता? नङ्गे सिर आ नहीं सकता था।'

'क्यों, क्या बात थी?'—लाला झाऊलालने पूछा—'कोई आशङ्का थी?'

'मेरी दादीने, जब मैं नौ वर्षका था, कहीं सुन पाया कि सिक्किमकी पहाड़ियोंमें किसी अँगरेज़के सिरपर टहलते समय, एक चट्टान टूट कर आ गिरी और वह वहीं ठण्डा हो गया। दादीने उसी समय मुझसे वचन ले लिया कि जीवनमें बिना सिर ढँके कभी घरके बाहर न निकलना।'

'अच्छा, यह बात! लेकिन बिछानेकी चादरसे...'

'और करता क्या? कमरे सब बन्द थे, बाहर चौकीपर सिर्फ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह चादर थी, और सामने अरगनीपर एक लँगोट था। लँगोटसे पगड़ी न बँधते देख मैंने चादरसे काम चलाया।'

'अपनी अनुपस्थितिमें आपकी आँखोंके ठीक सामने ब्रह्मचर्य्यका प्रतीक, अर्थात लँगोट ऐसी चीज, लटका जाना क्या कुछ विशेष अर्थ रखता है?'—लाला घासीरामने पूछना उचित समझा।

'हाँ हाँ, क्यों नहीं'—लाला मल्लूमलने कहा—'एक उपयोगी सुझाव था जिसे बिलवासीजीने समझा नहीं। आप जानते हैं कि छतमें लोहेकी एक कड़ी हो तो रस्सीके अभावमें लँगोटसे भी काम चल सकता है।'

कुछ देर तक अन्य सारी चर्चायें बन्द। केवल विहास, सुहास, उपहास, अपहास, अतिहास और अट्टहास होता रहा। बिलवासीजीने समझ लिया कि उनके मित्रोंको अगर इसी तरह बोलनेका अवसर मिलता रहा तो अच्छा न होगा। अपनी ख़ैरियत इसीमें थी कि बातोंका सूत्र उनसे छीनकर उनका मुँह बन्द कर दिया जाय। उन्होंने कहा—'सज्जनो! इतना तो आप लोग भी स्यात् जानते होंगे कि वेष-भूषा और आहार-विहार नितान्त निजी चीजें हैं और सभ्य समाजमें इनपर आलोचना नहीं की जाती। पर खेदकी बात है कि अपने देशमें इन बातोंका लिहाज़ करना लोगोंने अभी नहीं सीखा है। आज मेरे मित्र और कुछ नहीं तो मेरी पगड़ीपर ही पिल पड़े। पर कल शामकी बात सुनाऊँ।

मैं पार्कमें एक बेंचपर बैठा हुआ था कि एक बिलकुल अपरि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चित सज्जन भी उसी बेंचपर आ बैठे। शायद बीस ही मिनट मेरा उनका साथ हुआ हो, पर इसी बीचमें उन्होंने इतने प्रश्न मुझसे पूछ डाले—

—आपकी मासिक आय ?

—कितनी शादियाँ ?

—कुल कितने बच्चे ?

—भाइयोंसे मुकदमेबाजी हो चुकी है ?

—आपकी कमीज़का कपड़ा कितने गज़ है ?

इतना कहकर बिलवासीजी नेक रुके। मित्रमण्डली पर्य्याप्त रूपसे प्रभावित हो चुकी थी।

'सज्जनो !'—बिलवासीजीने फिर कहा—'आपलोगोंको यह जानकर सन्तोष होगा कि मेरी तरह महाकवि चच्चाके मित्रोंमें भी मूर्खोंकी कमी नहीं थी और उनसे भी उनकी पगड़ीके सम्बन्धमें इसी तरहके बेहूदे सवाल किये गये थे। उनके जीवनमें एक बार कुछ दिनोंके लिए ऐसी ग़रीबी आयी कि उनके पास सर ढँकनेको एक धज्जी भी न रही और वे लाचारीकी अवस्थामें नंगे ही सिर बाहर जाने-आने लगे। यह देख एक गब्बर मित्रसे न रहा गया और वह इसका कारण उनसे पूछ ही बैठा। सुनिये, महाकवि चच्चाने कैसा सुन्दर उत्तर दिया था—

बर बुद्धि बिरञ्चिने भाल 'चचा'
कछु ऐसी लकीर खिंची बिरची है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि सदैव बिपत्ति-बवण्डर में—
    दुख-अन्धड़ में जनु होड़ मची है ॥
तिहुँ पै नित दानवी दीन-दसा
    सिर पै चढ़ि नङ्ग-उलङ्ग नची है।
फिर कौन कथा पगई जो गई
    भगवान भला भगई तो बची है ॥

हम आप सभी जानते हैं कि आदर्शहीन जीवन किसी काम-का नहीं, पर हमारे आदर्श भी हमारी सांसारिक स्थितिके अनुरूप ही होंगे—यह उसी आसानीसे सब लोग नहीं मान लेते। पर बात यही सही है। छोटे-बड़े सभी अपनी-अपनी स्थितिके अनु-सार किसी ऐसी एक चीजकी कल्पना सदा करते रहते हैं जिसे पा जानेपर, जैसा वे समझते हैं, उनका जीवन सुखमय हो जायगा। महाकवि चच्चाकी कल्पना इस सम्बन्धमें बड़ी विलक्षण थी। वे कहते हैं—

घी--गुड़ भर दे तोंद,
    दे उधार, माँगे न फिर।
'चचा' मनावैं मोद
    ऐसो मोदी जो मिलै ॥

एक बात है। कवि चच्चाकी ग़रीबीपर हम चाहे जितना सिसक लें पर यह मानना होगा कि वे थे इसी योग्य। आप ही सोचिये कि जजमानी कमानेवाला ब्राह्मण यदि यों कहता फिरे कि—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टण्ट-घण्ट छापा-तिलक
पहिने कण्ठी कण्ठ।
औसत सौ में सौ 'चचा'
या लम्पट या लण्ठ॥

तो एक यों ही आकाश-वृत्ति, फिर वह कै दिन टिकेगी? ऐसा ब्राह्मण भूखों न मरे तो आश्चर्य। और सुनिये, आप कहते हैं—

परम पाठ पूजा निरत
दूजा और न काम।
रटे रामनामी पहिनि
रामनाम अविराम॥
रामनाम अविराम
निरी फरहारी काया।
संयम-नियम असीम,
महा मत-छू की माया॥
इनसों धरम-धुरीन
चचा रखिए जिन भूपर।
ठेलि भेजिए स्वर्ग,
कहीं स्वर्गहुँ के ऊपर॥

कौन विश्वास करेगा कि ये शब्द एक परम सनातनीके मुखसे निर्गत हैं। कैसे सनातनियोंको वे 'कहीं स्वर्गहुँके ऊपर' भेजनेके पक्षमें थे उनका संकेत नीचेकी पंक्तियोंमें मिल जायगा—

सम्पति संत चढ़ाइ दिये
थिर थापि अनेकन ठाकुरद्वारा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूसुर भूरि जिमाइ दिये
जग जोर उजागिर भोज-भँडारा।
फाँकि लिये रज तीरथके सब
फूँकि दिये जर केतिक सारा।
किन्तु 'चचा' न दिये न दिये
न दिये धिक् चार लचारको चारा॥

सज्जनो! अच्छा भोजन उन्हें बहुत प्रिय था, यह बात पहिले अनेक बार आ चुकी है। पर कौन-सा भोजन इतना प्रिय था? रबड़ी उन्हें अत्यन्त प्रिय थी। कभी-कभी उनका रबड़ी-प्रेम उन्हें गहरी परेशानीमें डाल देता था। एक बार तो उनकी जानपर आ बनी थी जैसा कि स्वयम् उनके कथनानुसार प्रकट होता है—

बड़ी भूख भड़की निरखि,
पड़ी पेटमें खाज।
खाते-खाते खा गये,
बेहद बे-अन्दाज॥
बेहद बे-अन्दाज,
गरे अँटकी ज्यों गुल्ली।
सकर-पकरमें प्रान,
करैं कैसे अब कुल्ली॥
जैसे-तैसे बचे,
'चचा' थी आयू तगड़ी।
बड़ी गड़बड़ी करै
अरे ससुरी यह रबड़ी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाकवि चच्चाकी एक चीज अभी हालमें प्राप्त हुई है जिसके सम्बन्धमें, ऐसा जान पड़ता है, आगे चल कर बढ़िया विवाद उठ खड़ा होगा। चीज यह है—

'चचा' चूकि चौपट भये
करि कानी को प्यार।
किये लाख उपचार पै
भईं न आँखें चार॥

यदि यह वैयक्तिक संकेत है तो घरमें सुन्दर पण्डिताइनके रहते हुए भी कानीको प्यार करना और आँखें चार करना—यह बात गलेके नीचे उतरती नहीं। कविने यह दोहा यों ही, रङ्गमें आकर, लिख मारा होगा। मेरा कहना है कि उनके चरित्रपर सन्देह करनेके पूर्व उनके आदर्शवादपर भी टुक ग़ौर कर लीजिये—

बैन कहे जब काज सरै
तब दण्ड-विधान कहा गहिये जू।
धाम बसे जब राम मिलैं
तब घाम-बतास कहा सहिये जू।
काव्य-सुधा मुखतें उमहै
तब सिन्धु महान कहा महिये जू।
दम्पतिमें जब प्रेम मिलै
तब सम्पति और कहा चहिये जू॥

महाकवि चच्चा और उनकी पत्नीमें बड़ा प्रेम, और बेहद मेल था पर इसका यह अर्थ नहीं कि आपसमें कभी झौं-झौं या खट-पट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या कहा-सुनी न होती रही हो। एक घटना तो अपनेको ही मालूम है। बल्कि उन दिनों महाकवि चच्चाको अपेक्षाकृत अधिक आराम उपलब्ध था; एक बूढ़ा महाजन अन्त समय, द्रव्य और सामग्री मिला कर, हजार-बारह-सौ दे मरा था, और उनके घर कुछ महीने चैन की बंसी बजी थी।

उन्हीं दिनों एक सुन्दर सबेरे दोनों प्राणियोंमें किसी बातपर अनायास खटक गयी। पत्नी कोपभवन सिधारीं और पतिदेव चूल्हा फूँकने बैठे। रामराम करते घोर दोपहरमें किसी प्रकार रसोई तैयार हुई। कुछ खाया-पीया गया नहीं।

रात हुई, दस बजा, ग्यारह बजा, बारह बजा; स्त्री अब भी कोपभवनमें। हमारे महाकविका अन्तःकरण मरोड़ने लगा। फगुनहट चल रही थी, निचाट रातमें भी। ऐसे समय अकेलेकी ज़िन्दगी, छिः छिः। चच्चाने कागजकी एक चिट उठायी, उसपर लिखा—

अपनै अपनौ मुंह चचा
पीटत अरु पछतात।
चूल्हेमें सब दिन गयो
जात भाड़में रात॥

यह पुरजा हाथमें लेकर वे उठे, डरते-डरते उसके कमरे तक गये, और दरवाजेसे पुरजेको भीतर सरकाकर भाग आये।

अपने स्थानपर आकर बैठ रहे। दिल धड़क रहा था। हाय मारनेकी तैयारी कर ही रहे थे कि बाहरसे कुछ आवाज़ हुई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखते क्या हैं कि उनका वही पुरजा सरकता हुआ उनके पैरोंके पास आकर गिरा। उन्होंने उसे उठाया, उसके पीछे कुछ लिखा था; पढ़ते ही उनकी बाछें खिल गयीं। लिखा था:—

देहुँ निमन्त्रन बिहँसि मन
छूमन्तर करि मान।
रैन रतजगा आजु पिय
कल पाँचो पकवान॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८

चचा-वचनामृत

१

चचा लाखमें एक
टकसाली कवि तुम अजब।
टका न पल्ले एक
लाख टकेकी बात सब॥

२

गुनगाहक भरमार
भरे परे सिगरे चचा।
मरिये टाँग पसार
करि चन्दा देइहैं कफन॥

३

चचा न हटकैं हाथ
लगै तड़ातड़ लाख किन।
सहरावैं नहिं माथ
अनुमति लिखित लिये बिना॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४

इहै समाज-सुधार
सुकर, सुगम, सुन्दर, सुखद।
घरकी जायँ बजार
चचा अगोरैं बैठि घर॥

५

अरे मरे तुम धोख
है सब सुख सन्तोख में।
सुख में सब सन्तोख
पढ़ो चचा अब पाठ यह॥

६

परै नीच को साथ
चचा निबाहैं नीति यह।
प्रथम जोरि दुइ हाथ
मारै दुइ-सौ लात गहि॥

७

चचा न होहु प्रचण्ड
घर-घर थर-थर जाय मचि।
जो ठोकहु भुजदण्ड
धाय दण्डवत जग करै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८

आग लगै, बज्जर पड़ै,
गरमी-जाड़ा नित्त ।
मारि डण्ड सर कीजिये
सारे बायू पित्त ।।

९

आग लगै, बज्जर पड़ै,
गरमी-जाड़ा नित्त ।
तीन काम करिये चचा
भोजन, भजन, कवित्त ।।

१०

आग लगै, बज्जर पड़ै,
गरमी-जाड़ा नित्त ।
सदा सात घण्टा चचा
रहिये अण्टा चित्त ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११

साख गई, सेखी गई
सीखी ऐसी सीख।
दरमाहा चाहैं चचा
या दर-दर की भीख॥

१२

बोलन को हर बात में
जीभ करै लुप-लुप।
किन्तु चचा बोलैं उचित
या फिर साधैं चुप॥

SPS
809 A 62 M
25969

१३

चचा बेचारे क्या करैं
क्या चिघरैं गर फार।
एक न कोई कान दे
बिना कनेठी चार॥

१४

किये गनित अगनित चचा
रहे मानि मन ऊन।
गुन गिनतीमें सुन रहे
औगुन सब सौगून॥

१५

गहरी गड़ही पेटकी
चचा भए गड़गप्प।
जप-तपको कहिये कहा
भूलि गए गपशप्प॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६

नहीं कामसे काम कछु
चचा करैं क्या काम।
काम यही दो कामके
भोजन औ आराम॥

१७

निरखि परखि चौसठ कला
बत्तिस दिये निपोरि।
दिये न गाँठी सों चचा
सोरह गण्डा छोरि॥

१८

अति अनीतिमय करमगति
निन्दित निपट निकाम।
कहो चचा कब क्या कियो
जाको अब परिनाम॥

१९

पेलि भूत-बाधा प्रबल
ठेलि हाल असहाय।
आगे डग भरिये चचा
पग पै जग भहराय॥

कहैं ठीकसे जो कहैं
कहैं वही जो ठीक।
चचा महाकवि जो कहैं
बनै लोकमें लीक॥

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE